बुढ़ियों के कारनामे–2

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Budhiyon Ke Karname-2 (Old Women's Adventures-2)
Cover Page picture : An Old Woman
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

बुढ़ियों के कारनामे–2 5

1 सैयद और सईद 7

2 राक्षसों की कहानी 51

3 एक लड़का जिसके माथे पर चाँद था 94

4 राजकुमार शेरदिल और उसके तीन दोस्त 125

5 जादू की अँगूठी 157

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

बुढ़ियों के कारनामे–2

प्राचीन समय में खास करके भारत में बुढ़ियें घर घर जा कर बहुत धोखाधड़ी के काम करती थीं। किसी बहू बेटी का गहना चुरा लेती थीं। किसी के घर में किसी बाहर के आदमी को घुसा देती थीं। किसी बहू बेटी के दूसरे आदमियों के लिये सन्देश लाती ले जाती थीं आदि आदि। उन दिनों ऐसी स्त्रियों को कुटनी बोला करते थे। आजकल ऐसी स्त्रियॉ कम पायी जाती हैं क्योंकि आजकल तो स्त्रियॉ खुद ही बाहर निकलने लगी हैं पर पुराने समय में ऐसी स्त्रियॉ बहुत पायी जाती थीं।

आज यहॉ ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं जिनमें ऐसी ही बुढ़ियों के कुछ कारनामे दिये गये हैं। इनमें बुढ़ियों ने काफी काम किये हैं और काफी गलतफहमियॉ पैदा की हैं जिनसे लोगों को बहुत तकलीफें उठानी पड़ी हैं। ऐसी ही एक और पुस्तक हमने इससे पहले प्रकाशित की थी – "बुढ़ियों के कारनामे–1" जिनमें यूरोप महाद्वीप के देशों की कुछ लोक कथाऐं दी थीं। अब प्रस्तुत है तुम्हारे हाथों में उसका दूसरा भाग – "बुढ़ियों के कारनामे–2"। ये सब लोक कथाऐं भारत की लोक कथाओं से ली गयी है।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 सैयद और सईद[1]

एक बार की बात है कि एक गरीब गॉव वाला था जो जंगल से लकड़ी काट कर और उसको बाजार में बेच कर अपना और अपने परिवार का गुजारा करता था।

सुबह सुबह वह लकड़ी काटता था फिर उनके गट्ठर बनाता था फिर शाम को उनको सबसे पास वाले बाजार ले जा कर बेच आता था।

इस गरीब आदमी की शादी हुई और उसके दो बेटे हुए। बड़े बेटे का नाम उसने सैयद रखा और छोटे वाले का नाम उसने रखा सईद। पर जब उसके ये दोनों बेटे छोटे ही थे तभी उनकी मॉ मर गयी और उस लकड़हारे ने दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी पत्नी उसकी पहली पत्नी से ज़्यादा होशियार थी।

एक दिन उसने अपने पति से कहा — "आप मुझसे और अपने दोनों बेटों से क्यों नहीं कहते कि हम भी लकड़ी काटने में आपकी सहायता करें। हम लोग बहुत कम पैसों में रह रहे हैं। पर अगर मैं

---

[1] Saiyid and Said – a folktale of Kashmir, India.
Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887. This book is available on Internet - https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

और हमारे ये दोनों बेटे भी हमारी सहायता करेंगे तो हम लोग ज़्यादा पैसा कमा पायेंगे।"

आदमी ने कहा — "यह तो बिल्कुल ठीक है।"

सो इस प्लान के अनुसार अब चारों रोज सुबह सुबह लकड़ी काटने जाने लगे। उन्होंने सबने इतनी मेहनत करके काम किया कि कुछ ही महीनों में उनके पास काफी पैसा जमा हो गया। इसके अलावा उन्होंने जाड़ों के लिये काफी सारी लकड़ी भी जमा कर ली। वह लकड़ी उन्होंने घर के पास ही एक जगह ठीक से लगा कर रख दी।

कुछ ही दिन बाद बहुत ज़ोर से बारिश शुरू हो गयी। उसी समय तीन यात्री जंगल से गुजरे। बारिश से बचने के लिये उन तीनों ने एक पेड़ के खोखले हिस्से में शरण ली।

बारिश ने हवा ठंडी कर दी थी सो उन यात्रियों ने लकड़ियों के उस ढेर में से कुछ लकड़ी ली जो उस लकड़हारे ने इकट्ठी करके रखी थी और उससे एक बहुत बड़ी आग जलायी। पूरे दो दिन तक वे वहाँ ठहरे और उस उतनी बड़ी आग को बनाये रखा। जब बारिश खत्म हो गयी तो उन्होंने अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी।

लकड़हारा भी अपनी लकड़ी को देखने के लिये बाहर आया तो उसके आश्चर्य का तो ठिकाना ही न रहा जब उसने देखा कि उसकी लकड़ी तो वहाँ थीं नहीं उनकी जगह केवल राख पड़ी है।

तभी उसकी पत्नी और बेटे भी वहॉ आ गये। उसने उनसे कहा — "भगवान नहीं चाहता कि हम लोग अमीर बनें। अब हम क्या करें? अब हम क्या करें? हमारी तो सारी लकड़ियॉ जल गयीं।"

यह बोलते बोलते उसने एक डंडा राख में घुमाया।

पत्नी ने राख में पड़ी किसी चमकती चीज़ को देख कर पूछा — "वह क्या है? देखो न वह क्या है। वहॉ देखो वहॉ देखो।"

इस पर उन सबने राख के पूरे के पूरे ढेर को देखा तो उनको उसमें चॉदी के कई टुकड़े मिले। इस बात के डर से कि कहीं उनको रास्ते में कोई आदमी न मिल जाये और उनसे वे चॉदी के टुकड़े न छीन ले उन्होंने वे चॉदी के टुकड़े अपनी अपनी कॉगड़ियों[2] में रख लिये उनको कोयलों से ढक लिया और घर को चल दिये।

किसी को उनके ऊपर कोई शक न हो इसलिये लकड़हारे ने अपने दोस्तों और पड़ोसियों को अपने खजाने के बारे में बता दिया। कुछ समय बाद उसने लकड़ी काटने का काम छोड़ दिया और व्यापार करने लगा। व्यापार में उसकी बहुत तरक्की हुई। आखिर वह एक बहुत बड़ा आदमी बन गया।

इस बीच उसके दोनों बेटे भी स्कूल जाने लगे और बहुत पढ़ लिख गये।

---

[2] A small portable brazier

एक दिन वह सौदागर अपने दोनों बेटों के साथ किसी मेले से लौट रहा था कि रास्ते में उनको एक जमींदार मिला जो एक पिंजरा ले जा रहा था।

उस पिंजरे में एक बहुत सुन्दर चिड़िया बन्द थी जो बहुत मीठा गाती थी। बेटों ने जब उस चिड़िया को देखा और उसका मीठा गाना सुना तो अपने पिता से उसे खरीदने के लिये कहा।

सौदागर ने जमींदार से पूछा — "यह चिड़िया तुम कितने में बेचोगे?"

जमींदार बोला — "दो मुहर[3] में।"

सौदागर जमीदार को दो मुहर दे कर बोला — "लो यह लो दो मुहरें और यह चिड़िया मेरे बच्चों को दे दो।"

जमींदार ने सौदागर से दो मुहरें लीं और चिड़िया का पिंजरा बच्चों को थमा कर चला गया। सैयद और सईद ने पिता को उनके लिये चिड़िया खरीदने के लिये धन्यवाद दिया। वे चिड़िया को बहुत प्यार करते थे। स्कूल से लौटने के बाद वे उसके साथ खेलते थे।

कुछ समय बाद उस चिड़िया ने एक अंडा दिया। दोनों बेटे उस अंडे को बहुत देर तक देखते रहते थे। क्योंकि वे चाहते थे कि उनके पास वैसी ही एक चिड़िया और हो जाये।

एक दिन वे लोग उस पिंजरे को साफ करने के लिये नदी के किनारे ले गये और यह काम ठीक से होना चाहिये इसलिये उन्होंने

[3] Gold coins

चिड़िया को बाहर निकाल कर सैयद के हाथ में दे दिया गया और उसके अंडे को एक पत्थर पर सॅभाल कर रख दिया।

जब सईद पिंजरे को साफ कर रहा था तो एक आदमी ने जो नदी के दूसरे किनारे पर नहा रहा था वह सब देखा जो नदी के इस किनारे पर हो रहा था।

उसने यह भी देखा जो शायद सौदागर और उसके बेटों ने ध्यान नहीं दिया कि जिस पत्थर पर अंडा रखा था वह चॉदी का हो गया था। उस आदमी को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि इस अंडे की शायद यही खासियत होगी यह जिसको छुए उसको चॉदी का बना दे।

उसने ऐसी बातें पहले सुनी भी थीं पर उसको उन बातों पर विश्वास नहीं था। पर यहॉ तो सबूत मौजूद था सो इसमें शक की कोई गुंजायश ही नहीं थी। उसने सोचा कि किसी तरह से वह उस अंडे को ले लेगा।

वह आदमी वहीं से चिल्लाया — "हे हे। क्या तुम यह अंडा मुझे बेचोगे? मैं इससे कुछ दवा बनाना चाहता हूॅ।"

सौदागर बोला — "नहीं। अभी मैं इतना गरीब नहीं हूॅ कि मुझे इसको बेचने की जरूरत पड़े। मैं तुमको इसे खुशी से दे देता अगर मेरे बेटे ऐसी ही दूसरी चिड़िया के लिये इतने उत्सुक न होते।"

पर उस आदमी ने उससे उसकी प्रार्थना सी करते हुए कहा — "मेहरबानी करके इसे मुझे दे दीजिये। मैं आपको इसका एक रुपया दूँगा।"

सौदागर बोला — "अफसोस मैं नहीं दे सकता।"

आदमी ने देखा कि यह सौदागर तो इतनी जल्दी मानने वाला नहीं है सो उसने फिर कहा — "मैं आपको इसके पाँच... दस... बीस... सौ... चलिये एक हजार रुपये तक दे दूँगा।"

सौदागर बोला — "नहीं। पर हाँ अगर तुम मुझे दस हजार रुपये दो तो मैं तुमको इसे दे दूँगा।"

आदमी मन ही मन खुश हो कर बोला — "एक अंडे को लिये इतने पैसे बहुत ज़्यादा हैं पर जब आप इससे कम में देने के लिये तैयार ही नहीं हैं तो मैं आपको इसके दस हजार ही दे दूँगा क्योंकि इससे बनी दवा के बिना तो में मर जाऊँगा।"

इस तरह यह सौदा पक्का हो गया। वे सब वहाँ से सौदागर के घर की तरफ को चले। वहाँ जा कर उस आदमी ने सौदागर को पैसा दिया और सौदागर ने उसको वह अंडा दे दिया।

अब जैसा कि होना चाहिये था आदमी को अंडा खरीदने के बाद सबसे पहले नदी के किनारे उस पत्थर के पास जाना चाहिये था जो उस अंडे के छूने से चाँदी का बन गया था। पर उसने सोचा कि अब उसको इसकी कोई जरूरत नहीं है।

जैसा कि उसने इस बात को बाद में साबित भी कर दिया। क्योंकि हर पत्थर जो उस अंडे ने छुआ वही चाँदी का बन गया।

इसके कुछ दिनों बाद एक योगी इस आदमी से मिला जिसने उस अंडे को देखा और कहा कि यह तो बड़ा कीमती अंडा है। पर वह चिड़िया कहाँ है जिसने इसको दिया है। अगर हो सके तो तुम उस चिड़िया को पाने की कोशिश करो।

क्योंकि जो कोई भी उसका सिर काटेगा पकायेगा और खायेगा वह दुनियाँ का सबसे अमीर राजा होगा। चिड़िया का सिर उस आदमी की छाती में रहेगा जो उसे खायेगा।

जब वह आदमी सुबह उठेगा तो उसको अपने नीचे दस हजार मुहरें मिलेंगीं। उसको चिड़ियों और जानवरों की भाषा भी समझ आने लगेगी।

उस चिड़िया की छाती भी बहुत खास है। जो उसको पकायेगा और खायेगा वह राजा बन जायेगा। पर वह उतना बड़ा राजा नहीं बनेगा जितना कि उसका सिर खाने वाला बनेगा।

जब आदमी ने योगी से यह सब सुना तो वह तो तुरन्त ही सौदागर के घर की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने सौदागर से उस चिड़िया को बेचने की प्रार्थना की। उसने उसको जो भी वह चाहे उसकी वही कीमत देने का वायदा किया।

पर सौदागर ने उससे यह कह कर जाने के लिये कहा कि वह उसे किसी हालत में भी नहीं बेचेगा चाहे उसको उसके बदले में सारी दुनियाँ दे दी जाये। इसलिये वह जा सकता था।

पर आदमी तो उस चिड़िया को लेने के लिये उतने ही पक्के इरादे से आया था जितने पक्के इरादे से वह पिछली बार उससे अंडा खरीदने आया था।

सो जब उसने सौदागर का जवाब सुना तो अपने मन में कहा "मुझे मालूम है मुझे क्या करना है। मैं उसे इस सौदागर की पत्नी से खरीदूँगा। मैं अभी जा कर उससे मिलता हूँ।"

सो वह एक अक्लमन्द बूढ़ी स्त्री के पास गया और इस बारे में उससे सलाह की। उसने उससे यह भी कहा कि अगर वह उसको सौदागर की पत्नी से मिलवा देगी तो वह उसको बहुत सारा इनाम देगा। उस अक्लमन्द बुढ़िया ने हामी भर दी।

वह सौदागर के घर गयी और यह देख कर कि वह घर में नहीं था वह उसके घर में घुसी और उसकी पत्नी से बातें करने लगी।

सौदागर की पत्नी उसको देख कर बहुत खुश हुई और कुछ देर बात करने के बाद उसने उससे फिर आने के लिये कहा। इस तरह से उन दोनों की अच्छी दोस्ती हो गयी। आखिर सौदागर की पत्नी ने उससे अपने पास ही रहने के लिये कहा।

इस सारे समय में बुढ़िया उससे उस आदमी के बारे में उससे बहुत अच्छी अच्छी बातें करती रही जिसने उसे वहाँ भेजा था। और

इस तरह से उसने बेचारे सौदागर की पत्नी के मन में उससे मिलने की इच्छा पैदा कर दी।

बुढ़िया ने उससे यह भी कहा कि वह आदमी भी उससे मिलने के लिये कितना उत्सुक था। जब सौदागर की पत्नी यह पक्का कर लिया कि फलॉ दिन उसका पति घर में नहीं रहेगा तो वह दिन उस आदमी से मिलने के लिये तय कर लिया गया।

अपना उद्देश्य ज़्यादा आसानी से पूरा करने के लिये और अपना बहुत दिनों का सोचा हुआ प्लान पूरा करने के लिये उसने अपने पति से कहा कि वह कुछ दिनों के लिये बाहर हो आये। फिर उसने उससे पूछा "आप वहॉ से क्या क्या अच्छी चीज़ें खरीदेंगे?" "कहॉ कहॉ जायेंगे?"

सौदागर ने जवाब दिया — "हॉ मैं जाऊॅगा और अच्छी चीज़ें भी खरीदूॅगा। यह मेरी बेवकूफी थी कि यह मैंने पहले नहीं किया।" और कुछ दिन में ही वह कुछ लोगों के साथ अपनी यात्रा पर रवाना हो गया।

तब उस सौदागर की पत्नी ने बुढ़िया से कहा — "जाओ और जा कर उस आदमी से कह दो जो मुझसे मिलना चाहता है कि वह मुझसे कल सुबह बारह बजे आ कर मिल ले।"

बुढ़िया वहॉ से चली गयी और जा कर उस आदमी को सौदागर की पत्नी का सन्देश दिया। वह आदमी भी यह सुन कर बहुत खुश हो गया।

उसने बुढ़िया से कहा — "उनको मेरा आदर देना और कहना कि वह अगर मेरे लिये अच्छा खाना बनाने का इरादा रखती हों तो मेरे लिये एक सुन्दर सी चिड़िया पका दें और उसको मेरे लिये अलग से रख दें।

उनको यह भी कहना कि मेरा दिल उस सुन्दर चिड़िया पर आ गया है और अगर वह मेरे लिये उन्होंने पका कर अलग नहीं रखी तो मैं बहुत नाउम्मीद हो जाऊँगा।"

अगली सुबह बारह बजे से पहले ही वह चिड़िया और दूसरे अच्छे खाने तैयार रखे थे और सौदागर की पत्नी तो बड़ी उम्मीदें लगाये बैठी थी कि यह अजनबी किस तरह का आदमी होगा और वह उससे क्यों मिलना चाह रहा था।

इसी समय सैयद और सईद दोनों स्कूल से घर आये और जैसे कि रोज वे भूखे होते थे उस दिन भी थे सो रोज की तरह से ही वे खाने के लिये अपनी माँ की तरफ दौड़े।

उसने उनसे कहा कि खाना तैयार था। वे खाने के कमरे में जायें और जो उनको अच्छा लगे वह खाना खा लें। सिवाय उस सुन्दर चिड़िया के और कुछ चीज़ों के जो उसने खास करके अपने खास मेहमान के लिये बनायी थीं।

वे तुरन्त ही वहाँ चले गये और सारी प्लेटों की तरफ देखा। और जैसे कि बच्चे करते हैं वे वे उस सारे खाने भी चखना चाहते थे जिनको खाने के लिये उनको मना किया गया था। सो उन्होंने

कई प्लेटों में से खाना ले लिया। कुछ खाना उनको बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने उन प्लेटों का सारा खाना खत्म कर दिया।

जिस प्लेट में वह कीमती चिड़िया बनी रखी थी वह भी उन खत्म हुई प्लेटों में से एक प्लेट थी। सैयद ने उसका सिर खा लिया था और सईद ने उसकी छाती।

जब उन्होंने खाना खा लिया तो उन्होंने सोचा कि अब तो उनकी माँ उन पर नाराज होगी और उन्हें पीटेगी सो वे वहाँ से भाग गये।

आखिर मेहमान आये। कुछ देर के बाद सौदागर की पत्नी उस आदमी को खाने के कमरे में ले गयी जहाँ सारा खाना लगा हुआ था।

उसको एक कुरसी पर बिठाते हुए उसने उसके आगे कुछ खाना परोसा तो वह आदमी बोला — "मुझे बहुत ज़्यादा भूख नहीं हैं। यह तो आपकी बहुत मेहरबानी है कि आपने इतना सब बनाया पर अगर आप मुझे वह चिड़िया दे सकें जो मैंने आपसे अपने बनाने के लिये कहा था तो मैं उसी को खा कर सन्तुष्ट हो जाऊँगा। कम से कम वह तो मैं खा ही सकता हूँ।"

सो सौदागर की पत्नी ने वह प्लेट जिसमें चिड़िया पकी रखी थी उसमें की बची हुई चिड़िया उसके सामने रख दी।

वह बोला — "अरे यह आपने क्या किया इसमें तो आधी चिड़िया भी नहीं है। इसका सिर और इसकी छाती किसने खायी।"

वह परेशान होते हुए बोली — "पता नहीं।"

आदमी बोला — "जरूर ही किसी ने खाना छुआ है।" और गुस्से में भर कर वह घर छोड़ कर चला गया। उसके इस तरह अचानक घर छोड़ कर चले जाने से सौदागर की पत्नी तो बहुत दुखी हुई। क्या यही वह आदमी था जिससे मिलने के लिये उसने इतने दिन इन्तजार किया था।

उधर सैयद और सईद घर से निकल कर चलते रहे चलते रहे, दूर और तेज़ जब तक कि वे एक बड़े से मैदान में नहीं आ गये। वहाँ उन्होंने रात को आराम करने का विचार किया हालाँकि वहाँ डरने की हर चीज़ थी।

वहाँ बहुत सारे जंगली जानवर रहते थे। पर ये दोनों नौजवान तो किसी से डर नहीं रहे थे क्योंकि उस चिड़िया का सिर और छाती खा कर वे बहुत हिम्मत वाले हो गये थे।

वे उस चिड़िया के गुणों से तो अभी भी बिल्कुल अनजान थे पर फिर भी वह कोई भी साहसिक काम करने का साहस रखते थे ऐसा उन्होंने महसूस किया।

उस रात वे सुरक्षित रूप से बड़ी गहरी नींद सोये। सुबह को जब वे उठे तो बड़े भाई सैयद ने वहाँ दस हजार मुहरें देखीं जहाँ वह सोया था। यह देख कर उनको बहुत खुशी हुई। उन्होंने वे सोने की मुहरें उठायीं और अपनी यात्रा फिर से शुरू की।

उस मैदान के दूसरे किनारे पर पहुँच कर वे एक ऐसी जगह पहुँच गये जहाँ दो सड़कें मिलती थीं। उनमें से एक सड़क की तरफ एक पत्थर रखा था जिस पर लिखा था "इस तरफ मत जाना नहीं तो पछताओगे।"

सैयद उन दोनों में से ज़्यादा हिम्मत वाला था क्योंकि उसने चिड़िया का सिर खाया था सो उसकी इच्छा थी कि वह वह खतरे वाला रास्ता ले। उसने सईद से कहा कि वह उसके साथ चले पर सईद नहीं माना।

वह बोला — "नहीं। मैं मौत से इतनी जल्दी मिलने वाला नहीं हूँ। मैं यह रास्ता नहीं लूँगा।"

पर सैयद ने तो उधर जाने का इरादा बना रखा था सो दोनों भाई वहाँ से अलग अलग रास्ते चल दिये। सैयद खतरे वाली सड़क से गया और सईद साधारण सड़क से गया।

सईद की किस्मत

छोटा भाई सईद उस साधारण सड़क पर चलते चलते एक शहर में आ पहुँचा जो समुद्र के किनारे था। वहाँ उसने एक बहुत बड़े सौदागर और जहाज़ के मालिक के पास नौकरी कर ली।

अभी सईद को उस सौदागर के यहाँ नौकरी किये हुए बहुत दिन नहीं हुए थे कि सौदागर ने उससे पूछा कि क्या वह समुद्र देखना पसन्द करेगा। सईद बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं।" क्योंकि वह

बाहर घूमने और नयी नयी जगह देखने का बहुत शौकीन था। सो वह सौदागर के साथ चल दिया।

कुछ दिन तक तो सब कुछ बहुत शान्त रहा सब कुछ बहुत शानदार था। उस यात्रा में सौदागर ने पैसा भी बहुत कमाया।

एक सुबह बहुत ही बुरी हवा चल पड़ी और इतनी तूफानी हो गयी कि जहाज़ पानी में इधर उधर उछलने लगा और आखिरकार टूट गया। जितने भी लोग उस जहाज़ पर थे सब डूब गये सिवाय सईद के। सईद एक लकड़ी के तख्ते के सहारे तैरता तैरता एक अकेले टापू के किनारे जा कर लग गया।

बेहोश और नाउम्मीद सा वह वहीं किनारे पर जा कर लेट गया और बोला — "उफ़ मैं पैदा ही क्यों हुआ? मेरी मॉ ने जो खाना खाने से मुझे मना किया था वह मैंने क्यों खाया? फिर मैं घर से क्यों भागा? मैंने अपने भाई का साथ भी क्यों छोड़ा?

वह भी ज़्यादा अच्छा होता अगर मैं इस बेकार की जगह में धीरे धीरे मरने की बजाय सौदागर के साथ ही मर जाता।"

तभी सब रोगों की एक दवा नींद उसके ऊपर छा गयी और वह सो गया। रात भी हो गयी थी।

वह सुबह तक आराम से सोता रहा। जब वह सुबह नींद से जागा तो उसने अपने चारों तरफ देखा कि वह किस तरह की जगह थी। तभी उसको एक जहाज़ पास से गुजरता हुआ दिखायी दे गया।

वह वहीं से चिल्लाया और उसने अपना हाथ भी हिलाया ताकि वह उन जहाज़ वालों को वहाँ अपनी उपस्थिति बता सके। किस्मत से उन्होंने उसको देख भी लिया। जहाज़ का कैप्टेन जहाज़ को उस टापू के पास ले आया और उसको अपने जहाज़ में बिठा कर अपने साथ ले चला।

जहाज़ को जहाँ जाना था वह वहाँ सुरक्षित रूप से पहुँच गया। वहाँ जा कर सईद ने जहाज़ के कैप्टेन और मल्लाहों को धन्यवाद के साथ विदा कहा और वहाँ से चला गया।

कुछ समय तक तो वह शहर में ही इधर उधर घूमता रहा और अपने देश शहर पिता और भाई के बारे में पूछताछ करता रहा पर किसी से उनके बारे में कोई पता नहीं चला।

तो उसने सोचा कि अब इस शहर में रहने से कोई फायदा नहीं सो वह बराबर के देश चल दिया जिसके बारे में उसने कई मजेदार बातें सुन रखी थीं। कुछ दिनों में ही वह वहाँ पहुँच गया और उसे वाकई मजेदार पाया। उस देश की राजधानी इतनी ऊँची चहारदीवारी से घिरी हुई थी कि उस पर चढ़ना मुश्किल था।

उसमें केवल एक ही दरवाजा था जिसको हमेशा बन्द रखा जाता था। इस तरह से उसकी सुरक्षा का पूरा इन्तजाम था। ऐसा क्यों था यह हम तुम्हें अभी बतायेंगे।

इस शहर का यह रिवाज था कि इस राज्य के मन्त्री लोग हर दिन अपना एक राजा चुनते थे और हर रात उसको मार देते थे।

इस बुरे रिवाज की वजह से लोग वहाँ से झुंडों में शहर छोड़ छोड़ कर भागने लगे।

इसलिये मन्त्रियों ने एक बार आपस में बैठ कर इसके लिये प्लान बनाने की सोची ताकि शहर खाली न हो जाये। वे इस नतीजे पर पहुँचे कि सब तरफ यह नोटिस भेज दिया जाये कि जो लोग इस शहर से चले गये हैं वे सब लोग शहर वापस लौट आयें और वहाँ आ कर अपना राजा चुन लें जो उनके देश पर जीवन भर राज करेगा। सो जब सईद इस शहर के दरवाजे पर पहुँचा तो वहाँ बहुत सारे ताकतवर लोग खड़े हुए थे।

प्रधान मन्त्री ने आगे आते हुए कहा — "पुराने रिवाज को देखते हुए कि दिन में राजा चुन लिया जाये और रात को उसे मार दिया जाये यह आपके लिये ठीक नहीं है।

इसलिये अब हमने आप सबको यहाँ बुलाया है ताकि आप लोग अपना राजा अपने आप चुन लें जो हमारे ऊपर अपनी ज़िन्दगी भर राज करेगा। अब यह मामला आप लोगों के हाथ में है सो बोलें अब हमारा राजा कौन होगा।"

लोग चिल्लाये — "दरवाजा बन्द कर दो। फिर जो भी सबसे पहले शहर में घुसेगा वही हमारा राजा होगा।"

लोगों ने ऐसा ही किया उन्होंने शहर का दरवाजा बन्द कर दिया। हर आदमी अपने साथियों से बाहर के किसी भी आदमी का

नाम लेने से डरता था कि कहीं ऐसा न हो कि उनका अपना आदमी नाराज हो जाये और वह उसको मार दे।

सो जब सईद इस शहर में आया तो शहर का दरवाजा बन्द था। इसलिये यह पहला आदमी था जो दरवाजा बन्द होने के बाद शहर में घुसा था सो लोगों ने इसे ही अपना राजा चुन लिया।

इसको बड़ी इ़ज़्ज़त के साथ अन्दर ले जाया गया और राजा के सिंहासन पर बिठाया गया। लोग बहुत ज़ोर से चिल्लाये — "यही हमारा राजा है। हमारा राजा अमर रहे।"

सैयद की किस्मत

अब सैयद की कहानी सुनो। सैयद अपने रास्ते पर बढ़ चला। उसके ऊपर रास्ते पर लिखी हुई चेतावनी का कोई असर नहीं था वह निडर हो कर आगे चलता चला जा रहा था।

वह जहॉ भी सोता था वहीं उसे अगली सुबह दस हजार मुहरें मिल जाती थीं। इस तरह से वह रोज अमीर पर अमीर होता जा रहा था। उसके पास अब इतना धन हो गया था कि उसको ले कर चलने के लिये उसे कई मजदूर रखने पड़े।

अभी तक उसको कहीं कुछ नहीं हुआ वह सुरक्षित था सो उसको लगने लगा कि सड़क के शुरू होने पर जो कुछ लिखा हुआ था वह सब ऐसे ही लोगों को डराने के लिये लिखा था।

चलते चलते वह एक बहुत ही सुन्दर बागीचे के दरवाजे पर आ पहुँचा जिसमें बहुत तरह के बहुत सुन्दर और प्यारे फूल लगे हुए थे। वह उस बागीचे में चला गया तो उसने वहाँ एक घर देखा।

उस घर की दीवारें चाँदी की बनी हुई थीं। उसके खम्भे सोने के बने हुए थे और वह पूरा का पूरा घर धूप में इतना चमक रहा था कि उसकी तरफ देखना भी मुश्किल था।

उसी बागीचे में उसको एक बुढ़िया मिल गयी तो उसने उससे पूछा — "यहाँ कौन रहता है? कौन रहता है यहाँ? कोई देवदूत? या फिर कोई पवित्र आदमी?"

बुढ़िया बोली — "यहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की रहती है और मैं उसकी दाई[4] हूँ। तुम इस महल की चमक धमक पर आश्चर्य कर रहे होगे। मेरी मालकिन के पास इस तरह के कई मकान और बागीचे हैं जो इतने ही अच्छे हैं।"

"क्या तुम्हारी मालकिन घर में हैं? क्या मैं उनसे मिल सकता हूँ?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं। उनसे तो कोई भी मिल सकता है बस दस हजार रुपये का सवाल है। जो उनको दस हजार रुपये दे सके वही उनसे मिल सकता है।"

सैयद बोला — "बिल्कुल ठीक। मैं उनको यह पैसे दे दूँगा तुम मुझे उनके पास ले चलो।"

---

[4] Daai means very personal maidservant

सो वह बुढ़िया उसको अपनी मालकिन के पास ले गयी। उस प्यारी सी लड़की को देख कर तो सैयद इतना आश्चर्यचकित रह गया कि उसके मुँह से तो बोली ही नहीं निकली।

वह लड़की उसको उसका हाथ पकड़ कर अन्दर ले गयी और उसको बिठाया। फिर बोली — "दाई ने तुम्हें मेरी शर्त तो बता ही दी होगी। हर दिन जब भी तुम मुझसे मिलने आओगे तो तुम मुझे दस हजार रुपये दोगे। और जब तुम्हारा सारा पैसा खत्म हो जायेगा तब तुमको मरवा दिया जायेगा।"

सैयद बोला — "मंजूर है। मैं तुमको दस हजार रुपये नहीं बल्कि दस हजार मुहरें दूँगा।" क्योंकि वह तो उस समय उसकी सुन्दरता के नशे में पागल हो रहा था।

यह सुन कर वह लड़की बहुत खुश हुई। उसने उसको अपने मकान में काफी दिनों तक रखा। सैयद के पास रोज दस हजार मुहरें आती रहीं और वह उनको उस लड़की को देता रहा।

कुछ समय बाद उस लड़की को आश्चर्य हुआ कि यह किस तरह का आदमी है जो रोज इस तरह उसको इतना पैसा देता रहता है। उसने सोचा जरूर ही यह कोई जादूगर होगा सो उसने उसके ऊपर नजर रखनी शुरू की।

उसकी इस सम्पत्ति का राज़ बहुत जल्दी ही खुल गया। जब सैयद सो कर उठा तो उस लड़की ने उसके बिस्तर पर ये मुहरें देखीं तो उसने सोचा कि जरूर ही उसने सुनहरी चिड़िया का सिर खाया

होगा। वह ऐसा इसलिये सोच सकी क्योंकि वह खुद भी जादूगरनी थी।

जिस पल उसको इस बात का पता चला तो उसने अपने साथी यानी उस लड़के को बरबाद करने की सोची।

एक दिन उसने सैयद से कहा — "मेरे पास अभी अभी एक नयी शराब आयी है आओ उसका स्वाद चखते हैं।" यह कह कर वह अन्दर चली गयी और शराब और प्याले उठा लायी और ला कर उसके सामने रख दिये।

सैयद ने वह शराब खूब जी भर कर पी। वह शराब लड़की ने भी पी पर बहुत थोड़ी सी। यह शराब बहुत तेज़ थी सो जल्दी ही सैयद का क्योंकि उसने यह शराब बहुत सारी पी थी जी घबराने लगा और इतना घबराया कि वह तो बिल्कुल पागल सा हो गया। साथ में उसको बहुत ज़ोर की प्यास भी लगने लगी।

वह चिल्लाया — "मुझे थोड़ा पानी दो मुझे प्यास लगी है।"

लड़की ने उसको थोड़ा तरबूज का रस और कुछ अंगूर ला कर दिये। उसने उनको लड़की के हाथों से जल्दी से छीन लिया और जैसे ही उसने तरबूज का रस पिया और अंगूर खाये वह तो बीमार पड़ गया। उसने तुरन्त ही जो कुछ उसके पेट में था वह सब उगल दिया।

चिड़िया का सिर जो सैयद ने निगला था सैयद के पेट तक नहीं पहुँच पाया था और न ही वह दूसरे खानों की तरह से पच पाया

था। सो वह भी बाहर निकल आया। लड़की को इसी की तो उम्मीद थी सो उसने उसको तुरन्त ही उठा लिया और अपने एक डिब्बे में छिपा कर रख लिया।

अगले दिन जब सैयद सो कर उठा तो उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि रोज की तरह से आज उसके बिस्तर पर मुहरें नहीं थीं। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह अब क्या करे।

अब क्योंकि वह उस लड़की को दस हजार मुहरें नहीं दे सकता था सो लड़की ने उसको मारने की धमकी दी कि अगर उसने दस हजार मुहरों का शाम तक इन्तजाम न किया तो वह उसको मरवा देगी।

सारा दिन सैयद बहुत परेशान रहा। वह क्या करे। जब शाम हुई तो वह एक कमरे में बन्द हो कर बैठ गया और दरवाजे को ताला लगा दिया।

लड़की ने कुछ देर तक तो इन्तजार किया पर जब वह खुद नहीं आया तो उसने उसको बुलवाया। उसने कहलवा दिया कि उस शाम उसकी तबियत ठीक नहीं है सो उस दिन उसको माफ किया जाये। पर आखिर तो उसको लड़की के पास जाना ही पड़ा।

जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने सैयद का बड़ी बेरहमी से स्वागत किया। सैयद बोला — “मेरे पास तुम्हें देने के लिये अब कुछ नहीं है। मुझे नहीं मालूम कि ऐसा मेरे साथ कैसे हुआ कि मेरे पास अब

बिल्कुल भी पैसे नहीं है। मैं अपना दुख तुम्हें बता भी नहीं सकता। मैं तो अपने इस मामले पर खुद ही इतना ज़्यादा दुखी हूँ कि मैं तो मुश्किल से चल पा रहा हूँ।"

लड़की बोली — "मुझे खुद भी बहुत दुख है पर यह सब अब और आगे नहीं चल सकता। पर क्योंकि तुमने मुझे इतनी दरियादिली से पैसे दिये हैं इसलिये मैं तुम्हारी मौत का हुकुम हटा लेती हूँ और तुमको जाने देती हूँ।

अब तुम यहाँ से चले जाओ और फिर अपना चेहरा मुझे मत दिखाना जब तक कि तुम्हारे पास बहुत सारा पैसा न हो जाये।" सैयद ने उसको धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया।

बागीचे के दरवाजे से बहर जाते जाते वह बोला — "उफ़ यह तो बहुत बड़ा दुख है। काश मैंने अपने भाई की बात मान कर यह रास्ता न लिया होता।

अब तो मेरे लिये वापस जाना भी बेकार है। अब यहाँ से मुझे सीधे जाना चाहिये और देखना चाहिये कि अब मेरी यह किस्मत मुझे कहाँ ले जाती है।"

ऐसा सोच कर वह आगे चल दिया। चलते चलते वह एक जंगल के एक मैदान से गुजरा। मैदान पार करने के बाद उसे तीन आदमी मिले जो अपने गुरू जो एक फ़कीर था की चार चीज़ों के बँटवारे पर बहुत ज़ोर ज़ोर से लड़ रहे थे।

उसने उनसे पूछा — "तुम लोग ऐसे क्यों लड़ रहे हो? क्या बात है।"

वे बोले — "हमारे गुरू जी की चार चीज़ें हमारे पास हैं। उनको हम अपने चारों में कैसे बाँटें। इसी बात पर झगड़ा हो रहा है।"

"अच्छा मुझे वे चीज़ें दिखाओ।"

तीनों ने अपने अपने बोझे खोले और उनमें से एक भद्रपीठ[5] एक थाल, एक सुरमे का डिब्बा और एक फटा सा ओढ़ने का कपड़ा निकाला।

उन्हें देख कर सैयद को हँसी आ गयी वह बोला — "ये चीज़ें तो कोई ऐसी कीमती चीज़ें नहीं लगतीं जिनके ऊपर लड़ा जाये।"

वे बोले — "तुम इनकी कीमत नहीं जानते। हम तुम्हें बताते हैं। जो कोई भी इस भद्रपीठ पर बैठेगा यह उसको वहाँ ले जायेगा जहाँ वह जाना चाहेगा। वह जगह कितनी भी दूर क्यों न हो और किसी की भी पहुँच से कितनी भी बाहर क्यों न हो।

यह थाल अपने मालिक को किसी भी समय बहुत तरीके के स्वादिष्ट खाने देगा। जो कोई यह सुरमा आँख में लगायेगा वह दूसरे की आँखों से तो ओझल हो जायेगा पर वह सब कुछ देख पायेगा।

इस पुराने कपड़े में चार जेबें हैं। इसकी एक जेब से आप कितने भी पैसे निकाल सकते हैं। इसकी दूसरी जेब चाँदी देती है।

---

[5] Bhadrapeeth means splendid seat

इसकी तीसरी जेब सोना देती है। इसकी चौथी जेब जवाहरात देती है।"

जब तीनों ने उन चारों चीज़ों को समझा दिया तो सैयद बोला — "यह तो बड़ी मजेदार बात है। ये तो वाकई बड़ी कीमती चीज़ें हैं। अब तुम लोग अपना झगड़ा खत्म करो। मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुमको क्या करना चाहिये। तुम लोगों को इस आखिरी चीज़ यानी कपड़े के बारे में ज़्यादा चिन्ता करने की जरूरत नहीं। उसको तो तुम मुझे दे दो और भद्रपीठ तुम ले लो सुरमा तुम ले लो और थाल तुम ले लो।"

वे सब बहुत ज़ोर से चिल्लाये — "नहीं कभी नहीं। यह हम कभी नहीं कर सकते। क्योंकि हमारे गुरू ने इसी शर्त पर ये चीज़ें हमको दी हैं कि हम इनको अपने से कभी अलग नहीं करेंगे। सो हम लोगों ने यह कसम खायी है कि हम इन चीज़ों को कभी अपने से अलग नहीं करेंगे।

नहीं नहीं तुम हमको अकेला छोड़ दो। हमारी तो बस केवल यही एक उम्मीद है कि हममें से एक जल्दी ही मर जायेगा और तब हम लोगों को ये चीज़ें बॉटने में कोई परेशानी नहीं होगी। चार चीज़ें दो आदमियों में आसानी से बॉटी जा सकती हैं।"

सैयद बोला — "पर तुम लोग किसी के मरने का इन्तजार क्यों करते हो। तुम लोगों की शक्ल से लगता है कि तुम लोग तो अभी काफी साल जियोगे। मेरी सलाह तो यह है कि इन चीज़ों का तुरन्त

ही बॅटवारा कर लिया जाये। तुममें से एक दो चीज़ें ले ले और दूसरे दो लोग एक एक चीज़ ले लें।

देखो क्या तुम लोग इस बात पर राजी होगे कि मैं ये तीन तीर इतनी दूर फेंकता हॅू जितनी दूर मैं फेंक सकता हॅू। एक तीर अपने सामने दूसरा तीर अपनी बॉयी तरफ और तीसरा तीर अपनी दॉयी तरफ।

जब मैं अपने सामने वाला तीर फेंकॅू तब तुम उसे लाने के लिये दौड़ जाना। जब मैं अपने बॉयी तरफ तीर फेंकॅू तब तुम उसे लाने के लिये दौड़ जाना और जब मैं अपने दॉयी तरफ वाला ती फेंकॅू तब तुम उस तीर को लाने के लिये दौड़ जाना। और जो भी सबसे पहले तीर लायेगा वह दो चीज़ें पायेगा।

“हम राजी हैं।”

इस तरह सैयद ने तीन तीर फेंके और तीनों उनके पीछे दौड़ गये। जब वे तीनों वहॉ से चले गये तो सैयद ने सुरमे की डिबिया थाल और कपड़ा उठाया भद्रपीठ पर बैठा और इच्छा की कि वह उसको वहॉ ले चले जहॉ तीनों आदमी उसके पास न पहॅुच सकें और तुरन्त ही वहॉ से गायब हो गया।

जब वे तीनों आदमी तीर ले कर लौट कर आये तो अजनबी और अपनी कीमती चीज़ों को वहॉ न पा कर बहुत दुखी हुए। वे बहुत रोये और बहुत देर तक अपनी चीज़ों के लिये रोते रहे।

वे बोले — "हमारे गुरू जी हमसे नाराज थे क्योंकि हम लड़ रहे थे। वह इस अजनबी के रूप में आये और हमारा खजाना ले गये।"

भद्रपीठ सैयद को उस जगह से बहुत दूर ले गयी जहाँ वे तीन आदमी थे। वहाँ पहुँच कर सबसे पहले उसने थाल से माँग कर खाना खाया।

उस समय उसे उस सुन्दर लड़की की याद आयी वह उसको फिर से देखना चाहता था। सो उसने अपनी सब चीज़ें भद्रपीठ पर रखीं उसके ऊपर बैठा और तुरन्त ही सोने चाँदी के बने महल की छत पर उतर गया।

यहाँ आ कर सबसे पहले उसने अपना खजाना छिपाया फिर वहाँ से सीढ़ियाँ उतर कर महल के कम्पाउन्ड में आया। वहाँ उसको दाई मिल गयी। उसने उससे कहा कि वह उस लड़की को जा कर यह कहे कि वह आ गया है और उससे मिलना चाहता है।

जब उस सुन्दर लड़की ने उसको देखा तो उसने जान लिया कि उसको कहीं से पैसा मिल गया है इसलिये वह लौट कर उसके पास आया है। सो उसने उसका स्वागत किया और उसकी बहुत इज़्ज़त की। उसने उससे उसकी यात्राओं के बारे में पूछा जबसे वह वहाँ से गया था कि उसने कहाँ कहाँ क्या क्या किया।

सैयद बोला — "मैं तुम्हारे लिये पैसे लाने के लिये अपने देश गया था क्योंकि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।" हालाँकि सैयद

झूठ बोला था क्योंकि वह लड़की को अपनी सम्पत्ति को पाने का राज़ नहीं बताना चाहता था।

हर रोज वह उस फटे कपड़े के पास जाता था और उससे जितना पैसा चाहता ले लेता था। करीब एक महीना इस तरह से चलता रहा कि एक दिन सैयद को लगा कि उसके ऊपर नजर रखी जा रही है।

एक बार उसको लगा कि उसके पीछे एक फुटबाल सीढ़ी पर चढ़ रही थी। एक और समय पर उसको लगा कि छत पर कोई था जो उसको देख रहा था। सो उसने छत पर सोने का निश्चय किया और लड़की को बता भी दिया। उसने लड़की से कहा — "प्रिये मैं आज बाहर छत पर सोना चाहता हूँ। तुम भी चलो न।"

वह राजी हो गयी और दोनों छत पर कई रात सोये जब तक सैयद का शक फिर से जाग गया। उसने मन में सोचा "कहीं ऐसा न हो कि यह कपड़ा और दूसरी चीज़ें मुझसे चुरा ली जायें। मैं क्या करूँ। मैं आज रात ही यह जगह छोड़ देता हूँ और कोशिश करता हूँ कि यह लड़की मेरे साथ चले।"

सो उस रात जब वे सोने के लिये छत पर गये तो उसने लड़की को भद्रपीठ दिखाया और उससे उस पर अपने साथ बैठ जाने के लिये कहा तो वह उस पर बैठ गयी। सैयद ने इच्छा की वह उसको इस समाज से कहीं दूर ले चले।

तुरन्त ही भद्रपीठ उनको एक ऐसे टापू पर ले गया जहाँ कोई नहीं रहता था। वहाँ पहुँच कर सैयद ने लड़की से कहा — "प्रिये अब हम लोग यहाँ साथ साथ रहेंगे।"

लड़की बोली — "तुम्हारी इच्छा ही अब मेरी इच्छा है। जब तक तुम मेरे साथ हो मुझे कोई चिन्ता नहीं है।" सैयद को लड़की की यह बात सुन कर बहुत खुशी हुई क्योंकि उसको लगा कि वह लड़की सच बोल रही थी।

धीरे धीरे वह उस लड़की के प्यार में इतना फँस गया कि उसने अपने सारे खजानों के बारे में उसको बता दिया।

लड़की ने पूछा — "तुम इतना शानदार खाना रोज कहाँ से लाते हो?"

सैयद बोला — "अल्लाह देता है मुझे। मुझे बस यह थाल ले कर जाना होता है और अपनी इच्छा बतानी होती है बस इसमें वह खाना आ जाता है।

लड़की ने पूछा — "और इस सुनसान जगह में तुम इतना पैसा कहाँ से लाते हो?"

सैयद बोला — "इस फटे कपड़े से। मैं इसकी जेबों में हाथ डालता हूँ और पैसा सोना चाँदी जवाहरात जो कुछ मैं चाहूँ वह निकाल लेता हूँ।"

"और यह भद्रपीठ हमको कैसे उड़ा कर ले जाता है जैसे कि यह कोई चिड़िया हो?"

सैयद बोला — “यह तो मुझे पता नहीं कि यह कैसे उड़ता है। बस मुझे इतना मालूम है कि इस पर बैठ कर जहाँ की इच्छा करो यह वहीं ले जाता है।

मेरे पास एक और चीज़ है जो तुमने देखी नहीं है। वह है यह सुरमा। इसको आँख में लगाने से आदमी अदृश्य हो जाता है जबकि वह आदमी सब कुछ देख सकता है।

लड़की बोली — “प्रिय मुझे कितनी खुशी है कि तुमने मुझे ये सब बातें बतायीं। अब हम कितने अमीर हैं और मैं भी कितनी खुशकिस्मत हूँ कि मुझे तुम मिले। तुमने मुझे पहले अपनी इस खुशकिस्मती के बारे में क्यों नहीं बताया। अब तो मेरी अपने घर जाने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं है।”

बड़े मीठे शब्द थे। सीधे सादे सैयद के ऊपर ये शब्द अमृत की तरह पड़े तो वह तो बहुत खुश हो गया। पर अफसोस यह सच नहीं था। ये शब्द कह कर उस लड़की का उद्देश्य था कि वह अपने ऊपर से उसका शक हटा सके।

उसने उससे कभी प्यार नहीं किया और न ही वह उसके साथ कभी रहना ही चाहती थी। उलटे वह तो उसकी सारी सम्पत्ति हड़प कर उसे मार देना चाहती थी। सो उसने उसकी उन चारों चीज़ों को अपने कब्जे में कर लेना चाहा। इस मौके के लिये उसे बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा।

एक सुबह जब वे लोग समुद्र के किनारे एक साथ टहल रहे थे उसने सैयद से कहा कि वह समुद्र में नहाना चाहती है। सो वह समुद्र में पहले जाये और उसकी गहरायी का अन्दाजा लगा कर आये। सो सैयद समुद्र में चला गया और तैरने लगा।

जब वह समुद्र में तैर रहा था तो लड़की ने थाल लिया सुरमे का डिब्बा लिया फटा कपड़ा उठाया और भद्रपीठ पर बैठी और इच्छा की कि वह उसको उसके शानदार घर ले चले।

बेचारे सैयद को इस सबसे कितना धोखा लगा होगा। वह तो नंगा ठंडा और भूखा ही रह गया था। अपनी किस्मत पर रोता हुआ वह उस टापू पर दौड़ता फिरा। जब शाम हुई तो उसने सोचना शुरू किया कि वह रात के लिये क्या करे।

अगर उसके पास कपड़े भी न हुए और खाना भी न हुआ फिर भी वह कम से कम वहाँ की हवा से बचने के लिये अपने लिये एक झोंपड़ी बना सकता था। और हो सकता है कि कल उसको कोई जहाज़ आता जाता मिल जाये।

इस तरह से उसने अपने आपको तसल्ली दी और एक पेड़ से उसकी टहनियाँ तोड़नी शुरू कर दीं। जब वह पेड़ से टहनियाँ तोड़ रहा था तो उसका ध्यान तीन चिड़ियों पर गया जो तीन अलग अलग पेड़ों पर बैठी थीं। वे एक दूसरे को प्रेम से बता रही थीं। और वह समझ रहा था कि वे आपस में क्या बात कर रही थीं।

एक चिड़िया बोली — "मेरा वाला पेड़ तो बहुत गुणी पेड़ है। अगर कोई इसकी छाल छील कर उसका चूरा बना ले और फिर इसकी पत्तियों का रस मिला कर उसका एक लड्डू बना ले तो वह लड्डू सिर दर्द में बहुत फायदा करेगा। सिर दर्द वाले को बस उसको एक बार बहुत अच्छी तरह से सूँघना पड़ेगा और उसका सिर दर्द बिल्कुल ठीक हो जायेगा।"

दूसरी चिड़िया बोली — "यह तो बहुत अच्छा है। अब मेरी सुनो। मेरा पेड़ तो तुम्हारे पेड़ से भी बहुत गुणी है। अगर कोई आदमी इस पेड़ की छाल को छील कर उसका चूरा करके इसी पेड़ की पत्तियों के रस को मिला कर उसका लड्डू बना ले तो उससे किसी के ऊपर भी जादू किया जा सकता है। उस लड्डू को बस उसको सुँघाना होगा। जो उसे सूँघेगा वह गधा बन जायेगा।"

तीसरी चिड़िया बोली — "अरे वाह तुम्हारे पेड़ का तो जवाब नहीं। पर ये दोनों ही पेड़ मेरे पेड़ जैसे नहीं हैं जिस पर मैं बैठी हूँ। अगर कोई आदमी इस पेड़ की छाल के साथ भी ऐसा ही करे तो उसके सूँघते ही वह जादू पड़ा गधा या फिर कोई और गधा हो तो वह भी आदमी बन जायेगा।"

सैयद ने उन चिड़ियों की बातों का एक एक शब्द समझ लिया। वह उनकी ये बातें समझ सका क्योंकि उसने एक बार सुनहरी चिड़िया का सिर निगल लिया था। तुाम सोच सकते हो कि वह इस अच्छी खबर से कितना खुश हुआ होगा।

उसने तुरन्त ही तीनों पेड़ों की छालों को पीस कर और उनमें उनकी पत्तियों का रस मिला कर लड्डू बना लिये जैसा कि चिड़ियों ने कहा था।

उसने उन तीनों लड्डुओं के ऊपर निशान लगा लिये कि किस लड्डू से क्या काम होता था ताकि वह कहीं भूल न जाये। फिर वह लेट गया और सो गया। पर सुबह जब वह उठा तो बहुत दुखी था।

"ओ अल्लाह मुझे बचाओ ओ अल्लाह मुझे बचाओ।" अल्लाह ने उसकी प्रार्थना सुनी।

एक बहुत बड़ी चिड़िया उस जगह पर उड़ती हुई आयी जहाँ वह था। तो वह डर के मारे अपने को उससे बचाने के लिये वहाँ से भाग कर एक पेड़ के खोखले तने में घुस गया। चिड़िया ने भी उसको छोड़ा नहीं वह उसके चारों तरफ चक्कर काटती रही और सैयद की तरफ बड़े प्यार से देखती रही।

सैयद ने सोचा "आखिर यह चिड़िया मेरे साथ क्या करना चाहती है। क्या यह मुझे खाना चाहती है।"

वह ऐसा सोच ही रहा था कि वह चिड़िया उस खोखले पेड़ के सामने जमीन पर बैठ गयी और उसकी तरफ देखा। फिर वह बोली — "एक आदमी इस टापू पर आया है। वह बहुत दुख में है बहुत परेशान है। अगर उसने मेरी बात नहीं सुनी तो वह मर जायेगा। मैं उसके बारे में बहुत चिन्तित हूँ।

अगर वह मेरी भाषा समझ रहा है तो वह मेरी टॉग पकड़ ले। मैं उसको ले कर कहीं और जहॉ लोग रहते होंगे उड़ जाऊॅगी।”

अब सैयद तो उस चिड़िया ने जो कुछ भी कहा उसका एक एक शब्द समझ रहा था सो यह दिखाने के लिये कि वह उसकी बात समझ रहा था उसने उसकी एक टॉग अपने दोनों हाथों से पकड़ ली। तुरन्त ही चिड़िया ने अपने पंख फैलाये और सैयद को ले कर वहॉ से उड़ चली।

वह मीलों उड़ी और फिर एक बहुत सुन्दर से शहर में सैयद को छोड़ कर वहॉ से उड़ गयी।

चिड़िया को देखने के लिये शहर के बहुत सारे लोग वहॉ इकट्ठे हो गये थे। पर चिड़िया तो उड़ गयी थी वहॉ तो अब केवल सैयद खड़ा था। सो उन लोगों ने सैयद से ही बहुत सारे सवाल पूछने शुरू कर दिये।

“तुम यहॉ कैसे आये?” “तुम्हारा नाम क्या है?” “तुम कहॉ से आये हो तुम्हारा घर कहॉ है?”

सैयद ने उनके इन सब सवालों का ठीक ठीक जवाब दे दिया। उसके जवाबों ने वहॉ के लोगों के दिलों को इतना छू लिया कि वे उसके लिये कपड़े और खाना ले कर आ गये और उसको अपने घर रहने के लिये कहा जब तक उसका कोई और इन्तजाम न हो जाये।

उसके वहाँ पहुँचने के कुछ दिनों बाद ऐसा हुआ कि वहाँ के राजा की बेटी के बहुत ज़ोर से सिर में दर्द हुआ जो किसी तरह से ठीक ही नहीं हो रहा था।

शहर के सारे डाक्टर बुलाये गये पर कोई भी उसके सिर दर्द का इलाज न कर सका। उसे कई दवाइयाँ खिलायी गयीं पर कोई दवा काम नहीं की। उसका वह भयानक सिर दर्द चलता रहा।

अब राजा को अपनी बेटी की ज़िन्दगी की चिन्ता होने लगी सो उसने सारे राज्य में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई राजकुमारी का सिर दर्द ठीक कर देगा वह उसे अपना आधा राज्य दे देगा और अपनी बेटी की शादी उससे कर देगा।

सैयद को यह सुन कर बहुत खुशी हुई। अब उसको अपने सामने इ़ज़्ज़त शान और ताकत का रास्ता खुलता दिखायी दिया। वह तुरन्त ही महल की तरफ चल पड़ा।

महल के दरवाजे पर पहुँच कर उसने चौकीदार से कहा कि वह राजा को खबर दे कि दरवाजे पर एक आदमी खड़ा है जो महल में आने की इजाज़त चाहता है। वह कहता है कि वह राजकुमारी का सिर दर्द ठीक कर देगा।

राजा ने जब सैयद का यह सन्देश सुना तो चौकीदार से कहा कि उस आदमी को तुरन्त यहाँ ले कर आओ।

सैयद राजा के पास गया तो राजा ने सैयद से पूछा — "ओ लड़के क्या तुम्हारे पास मेरी बेटी के सिर के दर्द की दवा है? मेरे

राज्य के कई डाक्टरों ने उसको कई दवाइयाँ दे कर देख लीं पर उसे किसी से भी फायदा नहीं हुआ। तुम्हारे पास उनकी दवाओं से अच्छी ऐसी कौन सी दवा है जो तुम यह दावा करते हो कि तुम उसका सिर दर्द ठीक कर दोगे?"

सैयद बोला — "योर मैजेस्टी मेरे पास बहुत अच्छी दवा है। आप राजकुमारी जी को बुलायें। अल्लाह ने चाहा तो पाँच मिनट के अन्दर अन्दर वह ठीक हो जायेंगी।"

"अल्लाह तुम्हारी भाषा सफल करें।" कह कर राजा ने अपनी बेटी को बुलाया।

राजकुमारी बहुत ज़ोर ज़ोर से कराहती हुई वहाँ आयी। वह बहुत कमजोर और परेशान दिखायी दे रही थी। सैयद ने उसको उस पेड़ की चूरा की गयी छाल का लड्डू देते हुए कहा जिस पर पहली चिड़िया बैठी थी —"इसे ज़ोर से सूँघो।"

राजकुमारी ने उसको ज़ोर से सूँघा तो तुरन्त ही उसका सिर दर्द चला गया। राजा राजकुमारी और जितने भी लोग वहाँ मौजूद थे सभी यह जादू देख कर आश्चर्यचकित रह गये।

राजा ने सैयद से पूछा कि वह कौन था। उसके राज्य में कब आया था। और वहाँ वह आया ही क्यों था। सैयद ने उसको सब कुछ बता दिया। उसकी कहानी सुन कर राजा को उसमें बहुत रुचि हो गयी। यहाँ तक कि उसने अपने नौकरों को अपने महल में ही उसके लिये कमरे तैयार करने का हुकुम दिया।

समय आने पर उसने अपनी बेटी की शादी उससे कर दी और दहेज में आधा राज्य भी दे दिया। धीरे धीरे सैयद पूरे राज्य पर ही राज करने लगा क्योंकि राजा अब बूढ़ा हो चला था और अपनी इस ज़िन्दगी से छुटकारा पाना चाहता था।

अपनी इस इज़्ज़त मिलने और अमीर बनने में सैयद उस सुन्दर लड़की को नहीं भूला था जिसने उसके साथ इतना बुरा व्यवहार किया था।

उससे उसकी बदला लेने की बड़ी इच्छा थी। उसकी वह इच्छा इतनी बढ़ी कि वह अपने ससुर के पास गया और उससे प्रार्थना की कि वह उसको जाने दे ताकि वह उन डाकुओं को सजा दे सके जिन्होंने रास्ते में उसकी सारी सम्पत्ति हड़प ली थी।

राजा पहले तो उसको यह इजाज़त देने से कुछ हिचकिचाया पर जब सैयद ने उससे बार बार प्रार्थना की तो उसने उसको इजाज़त दे दी।

सैयद ने अपने साथ बहुत सारे आदमी लिये बहुत सारा पैसा लिया और सीधा उस लड़की के घर चल दिया जिसने उसको धोखा दिया था।

उससे मिलने पर उसने उससे कहा — "प्रिये मैं तुम्हें कहाँ कहाँ नहीं ढूँढता रहा। तुम मुझे इस तरह बरबाद होने के लिये वहाँ क्यों छोड़ आयीं। अगर अल्लाह की मेहरबानी मेरे ऊपर नहीं होती तो मैं आज यहाँ नहीं होता।"

लड़की बोली — "यह तो मेरा सबसे बड़ा पाप था। मैं बेवकूफ थी मैं डर गयी थी और जो भी मैंने तुम्हारे साथ किया मैं तुमसे उसके लिये बहुत शरमिन्दा हूँ। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम मुझे माफ कर दो।"

ये शब्द उस लड़की ने कॉपते हुए कहे क्योंकि अब उसे उससे डर लगने लगा था। उसने सोचा "मैं दो बार तो बच चुकी हूँ पर कौन जानता है कि अब यह मेरे साथ क्या करेगा।"

एक रात जब वह लड़की सो रही थी तो सैयद ने वह लड्डू निकाला जो गधा बना देता था और उसकी नाक के नीचे लगा दिया। धीरे धीरे उसका शरीर एक गधे के शरीर में बदलने लगा। जैसे ही उसका शरीर गधे के शरीर में बदला उसने रेंकना शुरू कर दिया।

सैयद को यह देख कर बहुत खुशी हुई। उसने अपना बदला उससे ले लिया था। उसने घर की सारी चाभियॉ ढूँढीं उसके सारे कमरे आलमारियॉ और बक्से खोले और अपना सामान ढूँढा। उसको अपना सब सामान भी मिल गया और चिड़िया का सिर भी।

उनको उसने गट्ठर में बॉधा और अपने नौकरों को दे दिया और उनसे अगले दिन वहॉ से चलने के लिये तैयार रहने के लिये कहा। वह गधा भी उसने उन्हीं की देखभाल में रखवा दिया।

जब बूढ़ी दाई ने उसको अगले दिन जाते देखा तो पूछा — "तुम इतनी जल्दी क्यों जा रहे हो?"

वह बोला — “तुम्हारी मालकिन ने मेरा सारा सामान लूट लिया। अब मैं यहाँ रुक कर क्या करूँ।” कह कर वह वहाँ से भाग गया।

दाई बोली — “नहीं कभी नहीं। किसी दूसरे ने यह किया होगा। या फिर अगर मेरी मालकिन ने तुम्हारा यह पैसा लूटा है तो वह मजाक में लूटा होगा। और इसमें कोई शक नहीं है कि वह उसे तुम्हें जल्दी ही लौटा देगी।

तुम मत जाओ मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। मेरी मालकिन जब आयेगी और उसे पता चलेगा कि तुम छोड़ कर चले गये हो तो वह बहुत नाराज होगी।”

सैयद बोला — “मैं अब कुछ नहीं कर सकता मैं जा रहा हूँ।”

दोपहर तक सैयद चलता रहा और दोपहर को उसने कुछ बड़े पेड़ों के नीचे आराम किया जो एक सुन्दर नदी के किनारे लगे हुए थे।

उसने अपने पास खड़े एक नौकर से कहा कि वह उसको थोड़ा पानी ला कर दे। जब नौकर पानी लाने जा रहा था तो एक गाँव वाला चिल्लाया — “यह पानी तुम अपने मालिक को मत देना। यह बहुत ही तेज़ जहर है। तुम्हारे मालिक या कोई और भी इसका एक घूँट भी बरदाश्त नहीं कर पायेगा। यहाँ से कुछ दूर ऊपर की तरफ चले जाओ वहाँ तुम्हें पीने के लायक पानी मिल जायेगा।”

सो वह नौकर नदी के ऊपर की तरफ चल दिया। इधर सैयद ने देखा कि उसके नौकर को पानी लाने में देर हो रही है। इस देरी की वजह न जानते हुए सैयद उससे बहुत गुस्सा था और बहुत जल्दी में था।

सो उसने उससे पूछा — "तुमने इतनी देर कहाँ लगा दी?"

नौकर बोला — "मालिक जब मैं वहाँ से पानी ले रहा था तो एक गाँव वाले ने मुझसे वहाँ से पानी लेने मना किया। उसने कहा वहाँ का पानी जहरीला है। उसने यह भी कहा कि मैं नदी के ऊपर की तरफ जाऊँ और आपके पीने के लिये वहाँ से पानी ले कर आऊँ। मुझे इसी लिये देर हो गयी सरकार।"

सैयद बोला — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। गाँव के किसी आदमी को बुलाओ और इसकी वजह पता लगाओ।"

गाँव के कई लोगों को बुलाया गया और उनसे वहाँ के पानी के जहरीले होने की वजह पूछी गयी पर कोई भी उसकी ठीक वजह न बता सका। सारे गाँव वाले बस इतना ही जानते थे कि उस नदी में एक खास जगह का पानी जहरीला था।

सो सैयद ने वहाँ उस जगह को खोदने का हुकुम दिया। उसने गाँव से कुछ मजदूर बुलवाये और उनको उस जगह को खोदने पर लगा दिया। वहाँ की खुदी हुई मिट्टी उसने गधे पर लदवा कर दूर गड़वा दी। इस तरह उस नदी का पानी साफ करवा दिया गया। लोग उसके इस काम से बहुत खुश हुए।

गधे ने पूछा — “तुमने मुझे इतना नीचा काम करने के लिये क्यों दिया। क्या तुम्हारे लिये यही काफी नहीं था कि तुमने मुझे जानवर में बदल दिया। यह और बोझा मेरे सिर क्यों।”

सैयद ने उसकी किसी बात का जवाब नहीं दिया। अगले दिन उसने फिर अपनी यात्रा शुरू की और सीधा अपने ससुर के राज्य में ही जा कर रुका। उसको देख कर शहर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। उसने वहाँ बहुत अक्लमन्दी से राज्य किया और जल्दी ही वहाँ का बहुत लोकप्रिय राजा हो गया।

कुछ समय बाद जब वह बहुत लोकप्रिय हो गया और उसकी बहुत इज़्ज़त हो गयी जो एक सुन्दर और नीच लड़की को आकर्षित कर ले तो उसने उस गधे को फिर से लड़की में बदलने का निश्चय किया।

सो उसने उसको दूसरा लड्डू सूँघने के लिये दिया। दूसरा लड्डू सूँघते ही वह फिर से सुन्दर लड़की बन गयी। उसने पूछा — “प्रिय तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया।”

सैयद बोला — “क्योंकि मैं तुम्हें पाठ पढ़ाना चाहता था। अब तुम मेरी ताकत के बारे में जानो और जानो कि मेरे खिलाफ जाना कितना खतरनाक है। साथ में मेरा प्यार भी देखो। मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे लायक एक घर बनवा रखा है। तुम वहाँ जा कर रहो और जो तुम्हें चाहियेगा वह तुम्हें वहाँ मिल जायेगा।”

वह लड़की राजी हो गयी और फिर हमेशा के लिये सैयद की वफादार रही।

सैयद और सईद मिले

अब सैयद ने अपने भाई को ढूँढने में अपनी सारी कोशिशें लगा दीं। उसने अपने कई दूत दुनियाँ भर में भेजे और उसको बहुत सारा इनाम देने का वायदा किया जो भी उसके भाई को ढूँढ कर लायेगा।

खुशकिस्मती से इनमें से एक दूत उस देश में जा पहुँचा जहाँ सईद राज कर रहा था। उसने उसे इस तरह से ढूँढा —

एक रात वह एक बूढ़ी विधवा की झोंपड़ी में रुका। उसको सईद से सहायता मिलती थी। उसने उससे पूछा — "माँ तुम अपना गुजारा कैसे करती हो।"

बुढ़िया बोली — "हाँ तुम यह पूछ सकते हो। जैसा कि तुम देख रहे हो मैं तो कुछ कर नहीं सकती पर हमारा राजा बहुत ही न्यायपूर्ण और अच्छा है। वह रोज बूढ़ों गरीबों और बीमार लोगों को दान देता है। अगर वह यह दान न देता तो हममें से बहुत लोग मर जाते। अल्लाह का शुक्र है राजा का शुक्र है।"

"तुम्हारा राजा कौन है। क्या वह इसी देश का है। उसके माता पिता कहाँ रहते हैं।"

बुढ़िया बोली — "यह तो मुझे पता नहीं। लोगों का कहना है कि वह कहीं दूर देश से आया है। जब वह अपने भाई के साथ आ

रहा था तो वह रास्ते में उससे बिछड़ गया। वह अपने भाई को बहुत प्यार करता था।

उसने चारों तरफ अपने बहुत सारे दूत भेजे सो उसको अपने भाई और पिता के बारे में कुछ खबर मिली।"

"क्या मैं तुम्हारे राजा से मिल सकता हूॅ।"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। राजा हर समय सबकी सुनता है। जो भी चाहे उसके पास कभी भी जा सकता है और उससे बात कर सकता है।"

सो अगले दिन सुबह जैसे ही उसने सुना कि राजा जाग गया वह महल गया और प्रार्थना की वह राजा से मिलना चाहता है। नौकर ने सोचा कि वह शायद किसी खास काम से आया होगा सो वह उसको राजा के खास कमरे में ले गया।

वहॉ जा कर दूत ने राजा को बहुत नीचे तक झुक कर आदाब किया और बोला — "आपके भाई सैयद ने मुझे आपके पास भेजा है। अल्लाह ने उनको बहुत दौलत दी है और उनको एक बड़े और ताकतवर राज्य का राजा बना दिया है। पर उनको दिन और रात कभी भी चैन नहीं है जब तक वह आपके बारे में न जान लें।"

जब सईद ने यह सुना तो वह तो भाई के प्रेम में इतना डूब गया कि उसके मुॅह से तो बोली ही नहीं निकली।

उसने फिर कुछ देर तक दूत से बातें कीं फिर उसने अपने वजीर को बुलाया और उससे कहा कि वह उस दूत को बहुत बढ़िया

कपड़े पहनाये और देखे कि जो उसे चाहिये था वह उसको दे दिया जाये।

उसने वजीर को यह भी बताया कि उसको उसके कितने दिनों से खोये हुए भाई की खबर मिल गयी है। सैयद फलॉ फलॉ राज्य का राजा है और वह उसको तुरन्त ही देखने जाना चाहता है। सो उसकी यात्रा के लिये पूरा इन्तजाम किया जाये।

वजीर इस यात्रा के लिये कुछ अनमना था क्योंकि उस देश को जाने के लिये बीच में और कई देश पड़ते थे जिनके राजा राजा सईद के दुश्मन थे। इसलिये उन्होंने राजा से वहॉ न जाने के लिये कहा और केवल अपना सन्देश भेजने के लिये ही कहा क्योंकि उनको उसका भाई उससे ज़्यादा ताकतवर लगा।

सईद यह सुन कर बहुत नाउम्मीद हुआ हालॉकि यह जान कर खुशी हुई कि उसके वजीर बहुत अक्लमन्द थे। सो उसने दूत को तुरन्त ही अपने भाई के पास लौट जाने के लिये कहा और उसके बारे में सब कुछ बताने के लिये कहा। फिर उसको वापस आ कर उसको सब कुछ बताने के लिये कहा।

एक दो दिन आराम करने के बाद दूत वहॉ से चला गया। वह अपने देश सुरक्षित पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने अपने मालिक को बताया कि वह उनके भाई से मिल कर और उनको सुन कर आया है।

सैयद तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया उसने दूत को बहुत सारा इनाम दिया।

फिर उसने तुरन्त ही आसपास के देशों को जो उसके और उसके भाई के राज्यों के बीच में पड़ते थे जीतने का प्लान बनाया। उसने अपने भाई को खबर भेजी कि वह अपनी तरफ के देश जीत ले और वह अपनी तरफ के देश जीत लेगा।

क्योंकि वे दोनों ही अमीर और ताकतवर थे इसलिये उन देशों को उन्हें जीतने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये। और उन्होंने वे सब देश जीत लिये।

इन सब देशों को जीतने के बाद जब ये दोनों भाई मिले तो उनकी खुशी का अन्दाजा कौन लगा सकता है।

2 राक्षसों की कहानी[6]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही मन्द बुद्धि और गरीब ब्राह्मण था। वह अपनी पत्नी के साथ रहता था पर उसके कोई बच्चा नहीं था। वह गरीब भी बहुत था। बड़ी मुश्किल से वह अपना और अपनी पत्नी के गुजारे लायक कुछ कमा पाता था।

पर इससे भी बड़ी बात यह थी कि वह आलसी भी बहुत था। वह कोई लम्बी यात्रा करने में कतराता था। अगर वह शायद ऐसा कर पाता तो उसके पास काफी कुछ हो सकता था। पर फिर भी अमीर लोगों से भेंट मिलने के रूप में जो कुछ उसे मिलता था उससे वह और उसकी पत्नी आराम से रह रहे थे।

उन्हीं दिनों पड़ोस के एक देश के राजा की माँ की मृत्यु हो गयी तो वह उसकी आखिरी रस्में बड़ी शानो शौकत से कर रहा था। उस राजा से धन और कीमती भेंटें पाने की आशा में देश देश से ब्राह्मण और भिखारी उसके राज्य में आ रहे थे।

यह जान कर कि राजा अपनी माँ के मरने में काफी कुछ दान कर रहा था उस ब्राह्मण की पत्नी ने अपने पति से कहा कि वह भी

---

[6] The Story of the Rakshasas (Tale No 4) – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/The_Story_of_the_Rakshasas
Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. This book is available at the above Web Site.

उसके राज्य में जाये और कुछ धन ले कर आये पर उसका आलसीपन उसके रास्ते में आड़े आ रहा था।

पर उसकी पत्नी भी कम नहीं थी। उसने उसे चैन से नहीं बैठने दिया जब तक कि उसने अपने पति से वहाँ जाने का वायदा नहीं करवा लिया।

उस भली स्त्री ने केले का एक पेड़ काटा और उसे जला कर राख कर लिया। उस राख से उसने अपने पति के कपड़े साफ किये और उनको धो कर इतने सफेद कर लिये जैसे कोई धोबी करता है।

ऐसा उसने इसलिये किया क्योंकि उसका पति एक बहुत बड़े राजा के महल में जा रहा था। मैले कपड़े पहन कर तो वह राजा के पास तक भी नहीं जा सकता था तो फिर वह वहाँ से दान कैसे लाता। इसके अलावा वह एक ब्राह्मण था इसलिये भी उसको तो साफ सुथरा रहना ही था।

सो एक दिन सुबह सुबह ब्राह्मण घर छोड़ कर उस राजा के महल की तरफ चल दिया। अब वह बहुत बेवकूफ तो था ही सो उसने किसी से यह भी पूछने की कोशिश नहीं कि राजा के महल की तरफ कौन सी सड़क जाती है।

इसलिये जहाँ जहाँ उसकी आँखें देखती गयीं बस वह उधर ही की तरफ ही चलता गया और चलता गया और मीलों तक चलता गया।

यकीनन वह सही रास्ते पर नहीं था। चलते चलते वह एक ऐसी जगह आ गया था जहॉ मीलों तक उसको कोई आदमी भी दिखायी नहीं दे रहा था बल्कि उसको तो अब कुछ ऐसा दिखायी देने लगा जो उसने पहले कभी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा था।

रास्ते के दोनों तरफ उसने कौड़ियों[7] के बने हुए ढेर देखे। वह और ज़्यादा दूर नहीं गया था कि फिर उसको पैसों[8] के ढेर दिखायी दिये। उसके बाद उसको चवन्नियों अठन्नियों और रुपयों के ढेर भी दिखायी दिये।

और उसके बाद तो ब्राह्मण को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने चमकीले सोने के सिक्कों के यानी मुहरों के ढेर देखे। वे सब इतने चमक रहे थे जैसे अभी अभी टकसाल[9] से निकल कर आये हों।

इस मुहरों के ढेर के पास ही एक बहुत बड़ा मकान था जो किसी बड़े ताकतवर राजा का महल जैसा लग रहा था। उसके दरवाजे पर एक बहुत ही सुन्दर स्त्री खड़ी थी।

जैसे ही उसने ब्राह्मण को आता देखा तो बोली — “आओ मेरे प्रिय आओ। तुम तो आज बहुत दिनों में आये हो। तुमने मुझसे तब

[7] Cowries – Cowries are sea shells used as money in olden days. See its picture above.
[8] Translated for the word “Pice” – means “Paisa”, a quarter of an “Aannaa” in the form of coin used as currency in India till 1950s. Chavannee, Athannee were also used as currency in coins at that time.
[9] Translated for the word “Mint” – where the coins are made.

शादी की थी जब मैं बहुत छोटी थी और फिर हमारी शादी के बाद तुम फिर कभी एक बार भी नहीं आये। हालाँकि मैं तुम्हारा रोज इन्तजार करती रही।

आज का दिन मेरे लिये कितना अच्छा है कि मुझे अपने पति के दर्शन हो गये। आओ प्रिय आओ। आ कर अपने पैर धोओ। यात्रा की थकान मिटाओ। कुछ खाओ पियो। उसके बाद हम लोग फिर आनन्द करेंगे।”

यह सब देख कर और सुन कर ब्राह्मण के आश्चर्य का तो ठिकाना ही नहीं रहा। उसको तो कुछ भी याद नहीं था कि उसकी बचपन में कभी उस लड़की के अलावा जो अभी उसका घर देखती भालती थी किसी दूसरी लड़की से शादी भी हुई थी।

पर क्योंकि वह एक कुलीन ब्राह्मण था सो उसने सोचा कि हो सकता है कि उसके पिता ने उसकी शादी बचपन में ही कर दी हो और वह भूल गया हो हालाँकि उसको इसकी याद बिल्कुल भी नहीं थी।

पर उसको याद हो या न याद हो पर यह बात तो सच लगती थी क्योंकि उस स्त्री ने जिस तरीके से उससे यह सब कहा था उससे तो यही लगता था कि वह उसकी शादीशुदा पत्नी थी।

इसके अलावा वह तो सुन्दर भी इतनी थी जैसे इन्द्र के दरबार की कोई अप्सरा और साथ में वह जितनी सुन्दर थी उतनी ही अमीर भी।

जब ब्राह्मण के दिमाग में ऐसे विचार घूम रहे थे तो वह स्त्री फिर बोली — "क्या तुम्हें शक हो रहा है कि मैं तुम्हारी पत्नी हूँ या नहीं? यह कैसे मुमकिन है कि उस ख़ुशी की घटना की याद तुम्हारे दिमाग से बिल्कुल ही निकल गयी हो?

वह सब धूमधाम वह हमारे सब रिश्तेदारों का आना क्या तुम सब कुछ भूल गये? प्रिय आओ, अन्दर आओ यह तुम्हारा ही घर है क्योंकि जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा है।"

ब्राह्मण उस सुन्दर स्त्री की मीठी मीठी बातों में आ गया और उसके घर में चला गया।

वह घर कोई मामूली घर तो था नहीं वह तो एक शानदार महल था। उसके सारे कमरे बहुत बड़े बड़े थे और बहुत ज़्यादा सजे हुए थे। पर उसको एक बात ने आश्चर्य में डाल दिया कि उस घर में उस स्त्री के अलावा उसको कोई और आदमी दिखायी नहीं दिया।

उसको यह भी पता नहीं चला कि सारी सुबह और शाम जब वह उधर आ रहा था तो रास्ते में भी उसको कोई आदमी क्यों दिखायी नहीं दिया। इसकी असली वजह तो यह थी कि वह स्त्री खुद ही आदमी नहीं थी। वह तो एक राक्षसी[10] थी।

उसने वहाँ के राजा को, रानी को, उनके शाही परिवार के सारे लोगों को और यहाँ तक कि राजा की जनता को भी खा लिया था।

---

[10] Rakshasas and Rakshasis (male and female or Demons and Demonesses) are in Hindu mythology huge giants and giantesses, or rather demons. The word means literally raw meat-eaters.

यही वजह थी कि धरती के उस हिस्से में कोई आदमी ही दिखायी नहीं दे रहा था।

वह ब्राह्मण उस राक्षसी के साथ करीब करीब एक हफ्ते तक रहा।

एक दिन राक्षसी ने ब्राह्मण से कहा — "मुझे अपनी बहिन यानी तुम्हारी दूसरी पत्नी से मिलने की बहुत इच्छा हो रही है। तुम जाओ और उसको यहाँ ले आओ फिर हम दोनों यहाँ इतने बड़े और सुन्दर घर में आराम से रहेंगीं।

तुम कल सुबह ही चले जाओ। मैं तुम्हें उसके लिये कुछ कपड़े और गहने भी दे दूँगी। तुम उसको ले कर जल्दी से आ जाओ।"

अगली सुबह राक्षसी ने ब्राह्मण को कुछ कपड़े और कुछ कीमती गहने दिये और उनको ले कर वह अपने घर की तरफ रवाना हो गया।

उधर ब्राह्मण की गरीब पत्नी को अपने पति के बारे में बहुत चिन्ता हो रही थी। क्योंकि जितने भी लोग राजा के पास उसकी माँ के अन्तिम संस्कार के लिये गये थे वे सब वहाँ से बहुत बहुत सारा सामान ले कर अब तक वापस आ गये थे पर उसका पति वहाँ से अभी तक वापस नहीं आया था।

किसी ने उसके पति की कोई खबर भी नहीं दी थी क्योंकि किसी ने उसको वहाँ देखा भी नहीं था। उसको लगा कि शायद जाते समय रास्ते में उसको किसी ने मार दिया।

वह यह सोचती ही रही कि उसके पति के साथ क्या हुआ कि एक दिन उसने गाँव वालों से सुना कि उन्होंने उसके पति को अपनी पत्नी के लिये कुछ सुन्दर कपड़े और गहने लाते गाँव की तरफ आते देखा था।

यह सच था सो जल्दी ही ब्राह्मण घर आ गया। जब ब्राह्मण घर आया तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "चलो प्रिये। मुझे अपनी पहली पत्नी मिल गयी है। वह तो एक शाही महल में रहती है। उसके घर के पास तो पैसों के ढेर लगे हुए हैं और एक बहुत बड़ा मुहरों का ढेर भी है।

तुम इस गरीबी में दुख में इस गन्दी सी जगह में क्यों रह रही हो? चलो तुम मेरी पहली पत्नी के घर चलो और अब हम सब वहाँ साथ साथ आराम से रहेंगे।"

ब्राह्मण की पत्नी ने जब ब्राह्मण के मुँह से उसकी पहली पत्नी पैसों और सोने की मुहरों के ढेरों के बारे में सुना तो सोचा कि लगता है उसका पति कुछ पागल हो गया है।

पर जब उसने देखा कि वह बहुत सुन्दर सुन्दर सिल्क और साटिन के कपड़े और हीरे और कीमती पत्थर जड़े गहने ले कर आया है जो रानियों ओर राजकुमारियों के पहनने के लायक हैं तो उसको पता चल गया कि उसका गरीब पति किसी राक्षसी के चंगुल में फँस गया है।

वह उसके साथ उसकी पहली पत्नी के घर जाना तो नहीं चाहती थी पर जब ब्राह्मण ने उससे चलने की जिद की और कहा कि अगर वह उसके साथ नहीं गयी तो वह गरीबी में रहने के लिये आजाद थी तो उसको जाना ही पड़ा। पर जहाँ तक उसका अपना सवाल है वह अपनी पहली और अमीर पत्नी के पास वापस जा रहा है।

ब्राह्मण की पत्नी बहुत ही होशियार थी। उसने सोचा कि अपने पति को ऐसे ही छोड़ देने की बजाय वह उसके साथ जाये और देखे कि मामला क्या है।

सो अगले दिन वे दोनों उसी सड़क से उस राक्षसी के घर चल दिये जिस सड़क से वह ब्राह्मण पहले गया था। ब्राह्मण की पत्नी को उन कौड़ियों के पैसों के चवन्नियों के अठन्नियों के और सोने की मुहरों ढेरों को देख कर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ।

जब वे उस महल के पास आये जहाँ वह राक्षसी रहती थी तो उसने देखा कि एक बहुत ही सुन्दर स्त्री महल से निकल कर बाहर आयी और जल्दी जल्दी ब्राह्मण की पत्नी की तरफ आयी और उसके गले लग कर खुशी से रो पड़ी।

"आओ प्रिय बहिन आओ। आज का दिन मेरे लिये सबसे ज़्यादा खुशी का दिन है कि आज मैं अपनी सबसे प्यारी बहिन से मिली हूँ।" उसके बाद वह सबको अन्दर ले गयी।

उस शाही महल का क्या कहना जिसमें वे ठहराये गये थे। उसमें रखा सामान तो अपने आप ही ऐसे उठ जाता था जैसे जादू से

उठ जाता है। दोनों स्त्रियों में काफी देर तक आपस में एक दूसरे को प्यार और सहलाना चलता रहा – एक आदमी दूसरी राक्षसी।

दोनों ही में अपने अपने पति को खुश करने कै होड़ सी लग गयी। इस तरह ब्राह्मण का समय बहुत ही आनन्द में गुजर रहा था। वह तो बस जैसे आनन्द के समुद्र में गोते लगा रहा था।

समय गुजरता रहा और समय आने पर उसकी दोनों पत्नियों ने एक एक बेटे को जन्म दिया।

राक्षसी का बेटा बड़ा था और बजाय एक आदमी के एक देवता ज़्यादा लगता था। उसका नाम रखा गया सहस्र दल और ब्राह्मणी का बेटा जो उससे एक साल छोटा था उसका नाम रखा गया चम्पा दल[11]।

दोनों भाई एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। दोनों को स्कूल भेजा गया। उनका स्कूल कई मील दूर था इसलिये वे दोनों बहुत ही बढ़िया तेज़ घोड़ों पर चढ़ कर जाते थे।

वहाँ की कुछ घटनाओं को देख कर और उनको सोच कर ब्राह्मणी के दिमाग में हजारों बातें घूम गयीं। उसको लगा कि ब्राह्मण की यह पहली पत्नी आदमी नहीं थी राक्षसी थी।

अभी उसका यह शक पूरी तरह पक्का नहीं हुआ था क्योंकि राक्षसी इन दोनों से बरताव करने में बहुत सावधानी बरत रही थी।

[11] Sahasra Dal means “flower which has 1000 petals, and Champa Dal means the “petal of Champa fower”

वह कभी कोई ऐसा काम नहीं करती थी जो आदमी लोग नहीं करते।

पर उसकी राक्षसी आदत जैसे मारने की आदत उनको पता थी। अब ब्राह्मण के पास वहाँ कुछ करने को नहीं था तो उसने एक दिन शिकार पर जाने की सोची।

पहले दिन जब वह शिकार पर गया तो वहाँ से एक हिरन मार कर लाया। उस हिरन को उसने महल के आँगन में रख दिया। हिरन देखते ही कच्चा माँस खाने वाली राक्षसी के मुँह में पानी आ गया। रसोई में उसको पकाने से पहले वह उसको एक कमरे में ले गयी और उसको खाने लगी।

ब्राह्मणी छिपी हुई यह सब दृश्य देख रही थी। उसने देखा कि उसके पति की पहली पत्नी ने हिरन की एक टाँग तोड़ी और अपना बड़ा सा मुँह खोलते हुए उस टाँग को पूरा का पूरा निगल लिया।

वह तो यह बिल्कुल सोच ही नहीं सकी कि वह ऐसा कर सकती है। उसको उसका मुँह इतना बड़ा खुला हुआ लगा जैसे जमीन से ले कर आसमान तक खुला हुआ हो।

इस तरह से वह सारा हिरन खा गयी रसोई के लिये केवल थोड़ा सा ही माँस का टुकड़ा बचा।

अगले दिन वह ब्राह्मण फिर से शिकार पर गया और फिर से एक हिरन मार कर लाया। तीसरे दिन वह फिर से एक हिरन मार कर लाया।

उन सबको देख कर राक्षसी की कच्चा मॉस खाने की इच्छा रोज रोज बलवती होती गयी और उसने वे दोनों हिरन भी वैसे ही खा लिये जैसे उसने पहले वाला हिरन खाया था। रसोई के लिये वह बस थोड़ा सा ही मॉस छोड़ती बाकी सब खा जाती।

तीसरे दिन ब्राह्मणी ने राक्षसी से आश्चर्य से कहा कि अभी अभी तो यहॉ हिरन आया था और अभी अभी सारा का सारा हिरन गायब भी हो गया सिवाय एक छोटे से टुकड़े को छोड़ कर। कहॉ गया वह सारा हिरन।

यह सुन कर राक्षसी बहुत गुस्सा हुई और बोली — "तो तुम क्या समझती हो कि मैं उस हिरन को खा गयी? क्या मैं कच्चा मॉस खाती हूँ?"

इस पर ब्राह्मणी बोली — "यह तो मैं नहीं कहती पर शायद उसे तुम ही खा जाती होगी नहीं तो बताओ वह कहॉ गया।"

राक्षसी समझ गयी कि आज वह पकड़ी गयी। उसकी चोरी खुल गयी। वह और गुस्सा हो गयी और उसने इसका बदला लेने का निश्चय किया।

उधर ब्राह्मणी ने भी जान लिया कि उसका, उसके पति का और उसके बेटे का अब सबका समय खराब आ गया। वह रात उसकी बहुत खराब बीती। उसको सारी रात नींद नहीं आयी।

उसको यही लगता रहा कि बस अब कल उसको मार कर खा लिया जायेगा। साथ में उसके पति और उसके बेटे का भी यही हाल होगा।

सुबह सवेरे ही चम्पा दल के स्कूल जाने से पहले ही उसने अपने बेटे को एक सोने के बरतन में थोड़ा सा अपना दूध दिया और उससे कहा कि वह बराबर उसका रंग देखता रहे।[12]

उसने उससे कहा कि अगर वह दूध का रंग जरा सा भी लाल देखे तो समझ ले कि उसका पिता मारा गया। और फिर अगर उसका रंग और ज़्यादा लाल देखे तो समझ ले कि उसकी माँ भी मारी गयी।

और इसको देखने के बाद तो बस वह अपनी जान बचाने के लिये अपने घोड़े पर जितनी तेज़ी से भाग सकता हो भाग ले। क्योंकि अगर वह नहीं भागा तो वह भी मारा जायेगा।

उधर रात भर राक्षसी ने यह खयाल रखा कि ब्राह्मण ब्राह्मणी से कोई बात न करे।

सो राक्षसी जब सुबह सो कर उठी तो बोली कि वह और ब्राह्मण आज नहाने के लिये नदी पर जायेंगे। नदी वहाँ से थोड़ी ही दूर पर थी। वह इसके लिये ना सुनने वाली नहीं थी सो ब्राह्मण को उसके साथ मेमने की तरह से जाना ही पड़ा।

---

[12] Here the story writer writes that “the mother gave her son her breast milk in a little golden pot”. This is a questionable statement. How a woman of a more than 5-6 year-old child can produce breast milk? Because when the child was going to school riding the pony by himself, he must be at least above 5 years old.

जैसे ही ब्राह्मणी ने यह सुना तो समझ गयी कि उसकी बरबादी उसके सामने खड़ी है और उस बरबादी को रोकना उसके बस में नहीं था।

उधर राक्षसी ब्राह्मण को नदी के किनारे ले गयी और अपने असली बड़े रूप में आ गयी। उसने ब्राह्मण को पकड़ा और उसके शरीर के सारे हिस्से तोड़ तोड़ कर निगल गयी।

ब्राह्मण को खा कर वह अपने घर की तरफ दौड़ी और वहाँ जा कर ब्राह्मणी को भी उसके बाल और कपड़ों के साथ ही खा गयी।

इधर चम्पा दल अपनी माँ के कहे अनुसार उसके सोने के छोटे से बरतन में दिये हुए दूध को बराबर देख रहा था। उसने देखा कि वह दूध थोड़ा सा लाल पड़ा। वह डर गया और रोने लगा। पूछने पर उसने बताया कि उसका पिता मारा गया था इसलिये वह रो रहा था।

कुछ मिनट बाद ही उसने देखा कि वह दूध और ज़्यादा लाल हो गया है तो वह और ज़ोर से रो पड़ा। तुरन्त ही वह अपने घोड़े की तरफ दौड़ा और उस पर सवार हो कर दौड़ गया।

उसका दोस्त सहस्र दल उसका यह व्यवहार देख कर आश्चर्य में पड़ गया। वह बोला — "चम्पा तुम कहाँ जा रहे हो? और तुम रो क्यों रहे हो चम्पा? मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। रुक जाओ।"

चम्पा बोला — "नहीं नहीं तुम मेरे साथ नहीं आना। तुम्हारी माँ ने मेरे माता पिता को खा लिया है। तुम भी मेरे पीछे पीछे मत आओ क्योंकि तुम भी मुझे खा जाओगे।"

सहस्र दल बोला — "नहीं चम्पा मैं तुम्हें खाऊँगा नहीं मैं तुम्हें बचाऊँगा। तुम रुको तो।"

और यह कहने के तुरन्त बाद ही वह भी अपने घोड़े पर सवार हुआ और चम्पा के पीछे दौड़ गया।

थोड़ी दूर पर ही सहस्र दल की माँ अपनी राक्षसी शक्ल में खड़ी थी। सो जब उसने अपनी माँ को राक्षसी शक्ल में देखा और चम्पा को अपने पास बुलाते सुना तो वह उससे बोला — "तुम्हारे पास चम्पा नहीं आयेगा बल्कि मैं आऊँगा।"

कह कर वह अपनी तलवार निकाल कर जो राजकुमार होने के नाते हमेशा उसके पास रहती थी अपनी माँ की तरफ बढ़ा और उसका सिर काट लिया।

इतनी देर में तो चम्पा दल काफी आगे निकल गया था क्योंकि उसको तो अपनी ज़िन्दगी बचानी थी। पर सहस्र दल भी अपने घोड़े को मारता हुआ तेज़ भगाता हुआ जल्दी ही उसके पास पहुँच गया। उसने उसको बताया कि वह अब डरे नहीं अब उसकी माँ नहीं है। उसने उसको मार डाला है।

पर चम्पा दल के लिये यह एक बहुत छोटी ही तसल्ली थी क्योंकि मारे जाने से पहले ही उस राक्षसी ने उसके माता पिता दोनों

को खा लिया था। फिर भी उसको लगा कि सहस्र दल की दोस्ती उसके लिये बहुत ही वफादारी की दोस्ती थी।

वे दोनों अपने अपने घोड़ों पर तेज़ी से भाग लिये और क्योंकि उनके घोड़े पक्षीराज की नस्ल के थे वे उनके ऊपर सैंकड़ों मील दौड़ लिये।

XXXXXXX

शाम होने से एक दो घंटे पहले ही उनको एक गॉव दिखायी दे गया तो वे दोनों उसी की तरफ चल दिये। वहॉ जा कर वे वहॉ के एक बहुत ही इज़्ज़तदार आदमी के घर ठहर गये।

वहॉ पहुँच कर दोनों दोस्तों ने देखा कि वह परिवार तो बहुत दुखी था। इससे साफ जाहिर होता था कि वे किसी बड़ी परेशानी में थे। उनमें से कुछ अलग बैठे आपस में सलाह कर रहे थे। कुछ दूसरे लोग रो रहे थे।

घर की सबसे बड़ी स्त्री यानी उस परिवार के बड़े आदमी की मॉ ज़ोर से बोली — "मुझे जाने दो क्योंकि मैं सबसे बड़ी हूॅ। मैं बहुत दिन जी ली। अब मेरी ज़िन्दगी ही कितनी रह गयी है – एक या दो साल।"

उस परिवार का सबसे छोटा आदमी जो एक छोटी लड़की थी वह बोली — "नहीं पिता जी वहॉ मैं जाऊॅगी क्योंकि मै सबसे छोटी

हूँ और मैं परिवार के लिये बिल्कुल बेकार हूँ। अगर मैं मर भी गयी तो मुझे कौन याद करेगा।"

उधर परिवार का सबसे बड़ा आदमी यानी उस बड़ी स्त्री का बेटा बोला — "मैं सबसे बड़ा हूँ। परिवार की जिम्मेदारी मेरी है इसलिये मुझे ही अपनी जान देनी चाहिये।"

उसका छोटा भाई बोला — "भैया तुम तो इस परिवार के सबसे बड़े हो अगर तुम गये तो सारा परिवार ही नष्ट हो जायेगा। तुम मत जाओ मुझे जाने दो। क्योंकि अगर मैं गया तो घर पर कोई असर नहीं पड़ेगा।"

वे दोनों अजनबी बच्चे उन सबकी बातों को बड़ी उत्सुकता से सुन रहे थे। वे यही सोच रहे थे कि यह मामला क्या हो सकता है।

सहस्र दल कुछ सोच कर बोला कि उसको परिवार के बड़े आदमी से उस बारे में मिलना है जिसके बारे में वे बात कर रहे हैं। वह उनके उस दुख को जानना चाहता है जिसको वह उनकी बातों से समझ नहीं पा रहा है।

उसको उस बड़े आदमी से मिलवाया गया तो उस आदमी ने सहस्र दल से कहा — "ओ हमारे भले मेहमानो, अगर तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो। इस देश के इस हिस्से में एक बहुत ही भयानक राक्षसी रहती है। उसने यहाँ के सारे लोगों को खा खा कर खत्म कर दिया है। यह शहर भी अब काफी खाली हो गया है।

जब हमारे राजा ने उस राक्षसी से अपनी जनता के लिये उसकी दया की प्रार्थना की तो उस राक्षसी ने राजा से कहा कि वह उसकी जनता पर एक शर्त पर दया दिखा सकती है कि वह उसके खाने के लिये रोज एक आदमी या एक स्त्री को एक खास मन्दिर में भेज दे। अगर वह ऐसा करेगा तो वह उसकी जनता को फिर परेशान नहीं करेगी।

हमारे राजा के पास उसकी बात मानने के अलावा और कोई चारा नहीं था क्योंकि आदमी लोग राक्षस का क्या मुकाबला कर सकते हैं।

उस दिन से राजा ने यह नियम बना दिया कि उस भयानक राक्षसी की भूख और गुस्सा शान्त करने के लिये शहर का हर परिवार अपने घर से एक आदमी को उस मन्दिर में भेजेगा।

हमारे पड़ोस के हर परिवार ने अपने अपने घर से एक आदमी उस राक्षसी के खाने के लिये भेज दिया है और आज की रात हमारे परिवार की बारी है।

हम लोग आपस में यही विचार कर रहे हैं कि आज की रात कौन उसके पास जाये। अब तो तुम लोगों को पता चल गया न कि हमें क्या दुख है?"

दोनों दोस्तों ने आपस में विचार किया और बहुत जल्दी सहस्र दल बोला — "ओ हमारे भले मेजबान, अब आपको चिन्ता करने

की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि आप लोग हमारे ऊपर बहुत मेहरबान हैं।

हमने आपकी इस मेहमानदारी का बदला चुकाने का फैसला कर लिया है। आज की रात हम दोनों उस मन्दिर में जायेंगे और उस राक्षसी का खाना बनेंगे। आपकी तरफ से अब हम लोग जायेंगे इसलिये अब आप बिल्कुल दुखी न हों।"

उनकी इस बात का सारे परिवार ने विरोध किया। वे बोले कि मेहमान लोग तो भगवान होते हैं और हर मेजबान का यह धर्म है कि वह अपने मेहमानों को अपने से भी ज़्यादा आराम से रखे न कि मेहमान मेजबान का दुख अपने सिर ले।"

पर वे दोनों दोस्त बोले कि हम अपके परिवार की तरफ से ही जायेंगे इसलिये आप बिल्कुल चिन्ता न करें।

काफी हील हुज्जत के बाद वह परिवार राजी हो गया।

जैसे ही रात होने को आयी और लोगों ने अपने अपने घरों में मोमबत्तियाँ जलायीं सहस्र दल और चम्पा दल ने भी अपने अपने घोड़े उठाये और मन्दिर जा पहुँचे। उन्होंने मन्दिर का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया और राक्षसी का इन्तजार करने लगे।

सहस्र दल ने चम्पा दल से कहा कि वह सो जाये क्योंकि वह खुद सारी रात वहाँ जाग कर बैठने वाला था और उस राक्षसी के वहाँ आने का इन्तजार करने वाला था।

चम्पा दल जल्दी ही सो गया और सहस्र दल जाग कर राक्षसी का इन्तजार करने लगा। रात के पहले कुछ घंटों में तो कुछ भी नहीं हुआ पर जैसे ही महल के घंटे ने बारह बजाये सहस्र दल ने दौड़ते कदमों की आवाज सुनी और उसने अपनी राक्षसी जानकारी से जान लिया कि वह राक्षसी पास में ही थी।

किसी ने बिजली की कड़क की सी आवाज में मन्दिर का दरवाजा खटखटाया और बाली — "हाउ माउ खाउ। मुझे एक आदमी की बू आ रही है। अन्दर से कौन देख रहा है।"

सहस्र दल बोला — "अन्दर से तुम्हें सहस्र दल देख रहा है। तुम्हें चम्पा दल देख रहा है और दो पंख लगे घोड़े देख रहे हैं।"

यह जवाब सुन कर उस राक्षसी ने जान लिया कि सहस्र दल में राक्षस का खून है।

राक्षसी भुनभुनाती हुई वहाँ से लौट गयी पर एक घंटे बाद वह फिर लौटी और फिर से मन्दिर के दरवाजे को बादल की गरज की आवाज के साथ खटखटाया और बोली — "हाउ माउ खाउ। मुझे एक आदमी की बू आ रही है। अन्दर से कौन देख रहा है।"

सहस्र दल फिर बोला — "अन्दर से तुम्हें सहस्र दल देख रहा है। तुम्हें चम्पा दल देख रहा है और दो पंख लगे घोड़े देख रहे हैं।"

वह राक्षसी फिर भुनभुनायी और फिर वापस चली गयी। पर वह तीन बजे फिर आयी और बार बार आ कर वही पूछती रही। सहस्र दल भी उसको बार बार वही जवाब देता रहा।

तीन बजे सहस्र दल को बहुत ज़ोर की नींद आने लगी तो उसने चम्पा दल को जगाया और उससे राक्षसी का ध्यान रखने को कहा। उसने उससे यह भी कहा कि जब वह उस राक्षसी को जवाब दे तो सहस्र दल का नाम पहले ले और अपना नाम बाद में ले।

यह कह कर वह सोने चला गया। चार बजे जब राक्षसी फिर आयी और उसने बिजली की सी कड़क की आवाज के साथ दरवाजा खटखटाया और पूछा — "हाउ माउ खाउ। मुझे एक आदमी की बू आ रही है। अन्दर से कौन देख रहा है।"

चम्पा दल उसकी आवाज सुन कर इतना डर गया कि सहस्र दल की बतायी बात ही भूल गया। वह बोला — "अन्दर से तुम्हें चम्पा दल देख रहा है। तुम्हें सहस्र दल देख रहा है और दो पंख लगे घोड़े देख रहे हैं।"

यह सुन कर राक्षसी खुशी से चीख पड़ी और ऐसी भयानक हॅसी हॅसी जैसी कि केवल राक्षस ही हॅस सकते हैं। उसकी भयानक हॅसी की आवाज से दरवाजा खुल गया।

इस शोर से सहस्र दल भी जाग गया और तुरन्त ही अपनी तलवार ले कर खड़ा हो गया जो इतनी लचीली थी जैसी ताड़ की

पत्ती होती है। तुरन्त ही उस तलवार से उसने राक्षसी का सिर काट दिया।

राक्षसी का बड़ा पहाड़ जैसा शरीर बहुत ज़ोर का शोर मचाता हुआ नीचे गिर पड़ा। उसने जमीन का काफी हिस्सा ढक लिया था।[13] सहस्र दल ने राक्षसी का कटा हुआ सिर अपने पास रख लिया और सोने चला गया।

अगले दिन सुबह को कुछ लकड़हारे जो मन्दिर के पास से गुजर रहे थे उन्होंने उस राक्षसी का बड़ा शरीर वहाँ पड़ा देखा तो पहले तो इतनी दूर से वे यह नहीं जान सके कि वह है क्या पर जब वे उसके पास आये तब उनको पता चला कि वह तो उस भयानक राक्षसी का शरीर था जिसने उनके शहर के लोगों को खाया था।

राजा के वायदे को याद करते हुए कि राजा ने यह कहा था कि इस राक्षसी के मारने वाले को राजा अपना आधा राज्य और अपनी बेटी दे देगा सब लकड़हारों ने इधर उधर उस आदमी को देखना शुरू किया जिसने उसे मारा होगा पर वह आदमी तो उनको कहीं दिखायी नहीं दिया। तो हर लकड़हारे ने सोचा कि यह इनाम वह खुद ही क्यों न ले ले।

---

[13] Here the story writer writes "covering many acres of land". This expression creates a doubt here. When the demoness was so large how a man could reach her head to severe it?

सो सब लकड़हारों ने उस राक्षसी के शरीर के कई हिस्से काटे और उनको ले कर राजा के पास गये और उसको जा कर बताया कि उस राक्षसी को उन्होंने मारा है और अपना इनाम माँगा।

राजा ने यह जाँचना चाहा कि उस राक्षसी को किसने मारा। उसने अपने मन्त्री को बुलवाया और उससे पूछा कि — "ज़रा पता लगाओ कि कल रात इस राक्षसी के खाने के लिये किस परिवार से कौन गया था।"

मन्त्री उस परिवार के सबसे बड़े आदमी को जिसके घर के आदमी को उस दिन राक्षसी के खाने के लिये जाना था राजा के सामने ले कर आया।

जब वह राजा के सामने आया तो उसने उसे बताया कि किस तरह उसके घर में दो नौजवान बच्चे रात को ठहरने के लिये आये हुए थे। और फिर कैसे उन्होंने उससे कहा कि उसकी जगह वे उस राक्षसी का खाना बन कर मन्दिर जाना पसन्द करेंगे।

इसलिये उसके घर में से उस रात मन्दिर कोई नहीं गया बल्कि वे दोनों बच्चे ही गये थे।

सो सब मन्दिर गये और मन्दिर का दरवाजा तोड़ कर खोला गया तो सबने देखा कि वे दोनों बच्चे, सहस्र दल और चम्पा दल, सो रहे थे और उनके घोड़े भी वही बँधे हुए थे। सब सुरक्षित थे।

बच्चों ने राजा को राक्षसी का कटा हुआ सिर दिखाया जो उन्हीं के पास रखा हुआ था जिससे यह साबित हो गया कि राक्षसी को उन्होंने ही मारा था।

राजा ने अपना वायदा निभाया। उसने अपनी बेटी की शादी सहस्र दल से कर दी और उसको अपना आधा राज्य दे दिया। चम्पा दल अपने दोस्त के पास उसके महल में ही रहा और उसकी खुशी की खूब खुशियाँ मनायीं।

X X X X X X X

सहस्र दल और चम्पा दल दोनों कुछ समय तक साथ साथ खुशी खुशी रहे पर एक दिन उन दोनों में आपस में एक गलतफहमी हो गयी।

रानी माँ की सेवा में एक दासी थी जो उनके महल के कामों में बहुत सहायता करती थी और बहुत अच्छी थी। घर का कोई ऐसा काम नहीं था जो वह न कर सकती हो।

इसके अलावा एक स्त्री होने के नाते उसमें जितनी ताकत होनी चाहिये थी उसमें उससे कहीं ज़्यादा ताकत थी। अक्ल भी उसमें कम नहीं थी।

इस तरह से वह महल में बहुत काम करती थी और बहुत ताकतवर थी। वह महल के लिये इतने काम की थी कि अगर वह एक दिन के लिये भी काम पर नहीं आये तो घर की तो हालत ही

खराब हो जाती। इसलिये रानी माँ और महल की दूसरी स्त्रियाँ उसकी सेवाओं की बहुत कद्र करती थीं।

पर वह स्त्री स्त्री नहीं थी। वह तो एक राक्षसी थी जो अपना कोई काम करने के लिये एक स्त्री की शक्ल में उस शाही महल में काम करने आयी थी।

हर रात महल में जब सब सो जाते तो वह अपनी असली शक्ल में आती और अपने लिये खाना ढूँढती जो एक आदमी के लिये तो काफी हो सकता था पर एक राक्षसी के लिये नहीं।

चम्पा दल अभी तक कुँआरा था इसलिये वह महल के अन्दर तो नहीं सोता था पर वह महल के बाहरी दरवाजे से बहुत दूर भी नहीं सोता था।

एक दिन उसने उस दासी को इधर उधर घूमते और इधर उधर घूमती बकरियों भेड़ों घोड़ों और हाथियों को खाते देख लिया। उस दासी ने सोचा कि यह चम्पा दल तो उसके खाने के रास्ते में आ रहा है सो उसने उसे अपने रास्ते से हटाने का सोचा।

एक दिन वह रानी माँ के पास गयी और बोली — "रानी माँ रानी माँ, मैं अब इस महल में काम नहीं कर सकती।"

रानी माँ यह सुन कर घबरा गयीं और उन्होंने उससे पूछा — "क्या बात है दासी तुम अब यहाँ काम क्यों नहीं कर सकतीं? मैं तुम्हारे बिना कैसे रहूँगी? तुम कोई वजह तो बताओ कि तुम यह काम क्यों छोड़ना चाहती हो तुम्हें यहाँ क्या दुख है?"

दासी बोली — "आजकल मुझ जैसी गरीब स्त्री के लिये इस महल में अपनी इज़्ज़त बचाना बहुत मुश्किल हो गया है। आपके दामाद का यह दोस्त चम्पा दल हमेशा मुझे छेड़ता रहता है और मुझसे भद्दे मजाक करता रहता है।

सो अगर यह चम्पा दल इस महल में रहेगा तो मैं यहाँ नहीं रह सकती। मैं यहाँ से कहीं और चली जाती हूँ।"

क्योंकि यह दासी महल की एक जरूरत थी रानी माँ ने चम्पा दल को ही महल से निकालने का विचार किया। उन्होंने सहस्र दल से कहा कि चम्पा दल अच्छा आदमी नहीं है, उसका चरित्र अच्छा नहीं है इसलिये उसको महल छोड़ देना चाहिये।

सहस्र दल ने रानी माँ को अपने दोस्त की तरफ से बहुत कुछ समझाया पर सब बेकार। रानी माँ ने जो सोच लिया था वह सोच लिया था। उनको तो उसे महल से बाहर निकालना ही था क्योंकि नहीं तो उनकी दासी महल छोड़ कर चली जाती और यह उनको मंजूर नहीं था।

सहस्र दल की इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह खुद अपने दोस्त से यह सब कह सके। सो उसने चम्पा दल को एक चिट्ठी लिखी जिसमें केवल यही लिखा कि किन्हीं खास वजहों से उसको यह महल तुरन्त ही छोड़ देना चाहिये।

जब वह नहाने गया हुआ था तो उसने वह चिट्ठी उसके कमरे में रख दी। चम्पा दल जब नहा कर वापस आया तो उसने अपने कमरे

में एक चिट्ठी रखी देखी। उसने वह चिट्ठी पढ़ी तो वह बहुत दुखी हुआ। पर फिर भी वह अपने घोड़े पर चढ़ा और महल छोड़ कर चला गया।

X X X X X X X

चम्पा दल का घोड़ा बहुत तेज़ दौड़ने वाला था सो कुछ घंटों में ही वह हजारों मील दौड़ गया। आखिर वह एक शानदार महल के दरवाजे पर आ गया।

वहाँ वह अपने घोड़े से उतरा और उस महल के अन्दर चला गया। पर वहाँ उसके अन्दर तो एक भी जीव नहीं था। वह वहाँ के सारे कमरों में घूम आया पर उसको इतने बड़े महल में कोई एक आदमी भी दिखायी नहीं दिया हालाँकि उस महल के सारे कमरे बहुत कीमती कीमती चीज़ों से सजे हुए थे।

आखिर एक तरफ के एक कमरे में उसको एक बहुत ही सुन्दर नौजवान लड़की एक बढ़िया से पलंग पर लेटी हुई दिखायी दे गयी। वह सो रही थी। चम्पा दल ने उस सोती हुई सुन्दरी को देखा। उसने इससे पहले इतनी सुन्दर लड़की कभी नहीं देखी थी।

लड़की के सिर के पास दो सलाइयाँ रखी थीं – एक सोने की दूसरी चाँदी की। चम्पा दल ने चाँदी की सलाई उठायी और उसको उस लड़की के शरीर से छुआ दी। पर इससे तो कुछ भी नहीं हुआ।

फिर उसने सोने की सलाई उठायी और उसको उसके शरीर से छुआ दी। सोने की सलाई छुआते ही वह लड़की तो पल भर में ही जाग गयी और उठ कर बैठी हो गयी।

उसने चम्पा दल से पूछा कि वह कौन है तो चम्पा दल ने थोड़े में उसको अपनी कहानी बता दी।

वह लड़की, या कहो तो वह राजकुमारी, क्योंकि इससे कम तो वह थी ही नहीं, बोली — "ओ दुखी आदमी, तुम यहाँ क्यों आये हो यह तो राक्षसों का देश है। और इस महल में और इसके आस पास सात सौ राक्षसों से कम राक्षस नहीं रहते।

वे हर सुबह खाना ढूँढने के लिये समुद्र के उस पार निकल जाते हैं और फिर शाम को ही घर वापस लौटते हैं। मेरे पिता यहाँ के एक बहुत बड़े राजा थे। वे लाखों लोगों के ऊपर राज करते थे जो उस समय बड़े बड़े शहरों में रहते थे।

पर कुछ साल पहले राक्षसों ने उन पर हमला कर दिया। उन्होंने उनके सारे आदमी खा लिये। उन्होंने उनको खुद को, मेरी माँ को और मेरे भाइयों बहिनों को भी खा लिया। उन्होंने देश के सारे जानवर भी खा लिये।

अब इस राज्य में मेरे सिवा और कोई ज़िन्दा आदमी नहीं बचा है। वैसे तो उनको मुझे भी बहुत पहले ही खा जाना चाहिये था पर एक बूढ़ी राक्षसी के प्यार ने मुझे उनके खाने से बचा लिया।

तुम ये सोने और चाँदी की सलाइयाँ देख रहे हो न। वह बूढ़ी राक्षसी सुबह जाने से पहले मुझे इस चाँदी की सलाई से मुझे मार जाती है और फिर जब शाम को वापस लौटती है तब इस सोने की सलाई से मुझे फिर से ज़िन्दा कर लेती है।

मुझे नहीं पता कि मैं तुमको क्या सलाह दूँ। मैं तो बस इतना ही कह सकती हूँ कि अगर राक्षसों ने तुम्हें देख लिया तो वे तुम्हें मार देंगे।"

उसके बाद वे दोनों काफी देर तक प्यार से बातें करते रहे। फिर वे दोनों मिल कर कोई ऐसा तरीका सोचते रहे जिससे वे दोनों इन राक्षसों के हाथों से बच सकें।

सात सौ राक्षसों के वापस आने का समय बहुत तेज़ी से पास आता जा रहा था। उस लड़की का नाम केशवती था क्योंकि उसके बाल बहुत घने और लम्बे थे।

उसने चम्पा दल से कहा कि वह मन्दिर के महल के बीच के हिस्से में जो शिव जी का मन्दिर था उसमें पड़े बेल पत्र[14] के ढेर में जा कर छिप जाये।

अपने छिपने की जगह जाने से पहले चम्पा दल ने केशवती के शरीर से चाँदी की सलाई छुआई जिससे वह तुरन्त ही मर गयी। उसके बाद वह शिव जी के मन्दिर चला गया और जा कर वहाँ पड़े बेल पत्र के ढेर के नीचे छिप गया।

---

[14] Translated for the word "Trefoil".

सूरज के डूबने के थोड़ी देर बाद ही बेल पत्र के ढेर के नीचे से उसने तूफान से आने की आवाज सुनी। फिर उसने महल में बहुत ज़ोर की आवाजें सुनी।

राक्षस लोग अपना खाना खा कर घर वापस आ गये थे। हर एक के पास कुछ बकरे भेड़ गाय घोड़े भैंस और हाथी थे। वह बुढ़िया राक्षसी केशवती के कमरे में आयी और उसने उसको सोने की सलाई से उसे जगाया।

वह बोली — "हे मे खे। मुझे एक आदमी की बू आ रही है।"

इस पर केशवती बोली — "यहाँ पर तो केवल मैं अकेली ही आदमी हूँ। अगर तुम मुझे खाना चाहती हो तो खा लो।"

इस पर राक्षसी बोली — "मैं तो तुम्हारे दुश्मनों को खाऊँगी। तुमको मैं क्यों खाऊँ।"

यह कह कर वह जमीन पर लेट गयी। वह वहाँ लेटी हुई ऐसी लग रही थी जैसे विन्ध्याचल पर्वत[15] नीचे पड़ा हो।

लेटते ही वह सो गयी। दूसरे राक्षस और राक्षसियाँ भी सो गये क्योंकि वे सब सारे दिन मेहनत करके बहुत थक गये थे। केशवती भी सोई पड़ी थी। पर चम्पा दल की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वह बेल पत्र के ढेर से बाहर निकले। वह तो बस भगवान शिव की प्रार्थना ही करता रहा।

---

[15] The name of a very important mountain of India going from Chitrkoot (UP) towards South.

अगले दिन सुबह सवेरे ही वे सब राक्षस और राक्षसियाँ फिर से अपने खाने की खोज में बाहर चले गये। उनके साथ वह बूढ़ी राक्षसी भी केशवती को चाँदी की सलाई से मार कर चली गयी।

जब चम्पा दल ने देखा कि अब समुद्र के किनारे पर कोई नहीं है तो वह बेल पत्र के ढेर के नीचे से निकल कर मन्दिर के बाहर आया और केशवती के कमरे में जा कर उसे सोने की सलाई से जगाया। वह तुरन्त ही जाग गयी।

वे वहाँ के बागीचों में घूमे सुबह की ठंडी हवा का आनन्द लिया जमीन में बने तालाब में नहाये। फिर उन्होंने खाया पिया और सारा दिन बातें करते रहे। आखिर उन्होंने वहाँ से निकलने का एक प्लान सोच ही लिया।

उन्होंने निश्चय किया कि केशवती राक्षसी से पूछेगी कि राक्षस की ज़िन्दगी किस चीज़ पर निर्भर करती है और जब इसका पता चल जायेगा तो वे फिर वैसा ही करेंगे जिससे सब राक्षस मर जायें।

पिछली शाम की तरह से चम्पा दल ने इस शाम को भी चाँदी की सलाई से केशवती को सुलाया और फिर खुद महल के बीच में बने शिव जी के मन्दिर में पड़े बेल पत्र के ढेर में छिप गया।

शाम को राक्षस घर आये तो राक्षसी ने केशवती को जगाते हुए उससे कहा — "हे मे खे। मुझे एक आदमी की बू आ रही है।"

केशवती बोली — “यहाँ और दूसरा आदमी कौन है सिवाय मेरे। और तुम दूसरा कौन सा आदमी सोच रही हो कि यहाँ होगा। और तुम अगर मुझे ही खाना चाहती हो तो खा लो।”

राक्षसी बोली — “मेरी प्यारी बेटी मैं तुमको क्यों खाऊँगी मैं तो तुम्हारे दुश्मनों को खाऊँगी।”

कह कर वह जमीन पर लेट गयी। उसका बड़ा शरीर वहाँ लेटा हुआ हिमालय पहाड़ का एक हिस्सा दिखायी दे रहा था। केशवती ने सरसों के गरम तेल की एक शीशी ली और राक्षसी के पैरों की तरफ चल दी।

उसके पैरों पर गरम तेल की मालिश करती हुई बोली — “माँ तुम्हारे पैर सारा दिन चलते चलते थक जाते होंगे। मैं उन पर तेल लगा देती हूँ।”

जब वह राक्षसी के पैरों पर तेल लगा रही थी तो दो आँसू उसकी आँखों से राक्षसी के पैरों पर टपक पड़े। राक्षसी ने उसके वे आँसू अपने होठों से चाट लिये।

उसको वे नमकीन लगे तो वह केशवती से बोली — “बेटी तू क्यों रोती है। तुझे क्या तकलीफ है।”

केशवती बोली — “माँ मैं इसलिये रोती हूँ कि जब तक तुम हो तब तक तो सब ठीक है पर तुम बूढ़ी हो। जब तुम मर जाओगी तो यकीनन इन राक्षसों में से कोई न कोई राक्षस मुझे खा जायेगा।”

सुन कर राक्षसी बोली — “क्या कहा मैं मर जाऊँगी? तो सुन ओ बेवकूफ लड़की। हम राक्षस कभी नहीं मरते। हम लोग साधारण रूप से तो अमर नहीं हैं पर हमारी ज़िन्दगी किसी चीज़ पर निर्भर करती है जो कोई भी आदमी नहीं जानता इसलिये हम अमर जैसे ही होते हैं।

चल मैं तुझे कुछ बताती हूँ ताकि तुझे कुछ तसल्ली हो जाये। तुझे उस पास वाले तालाब का तो पता ही है। उस तालाब के बीच में स्फटिक[16] का एक खम्भा है। उस खम्भे के सबसे ऊपर गहरे पानी के अन्दर ही दो मधुमक्खियाँ हैं।

अगर कोई आदमी उस गहरे पानी में डुबकी लगा जाये और एक ही साँस में वह उन दोनों मधुमक्खियों को पानी के ऊपर जमीन पर ले आये। और उनको वह फिर ऐसे मार दे कि उनका खून जमीन पर न गिरे तो हम सब राक्षस यकीनन मर जायेंगे।

पर अगर उनके खून की एक बूँद भी जमीन पर गिर गयी तो उस बूँद से हजार राक्षस और पैदा हो जायेंगे।

पर यह भेद किस आदमी को पता चलेगा। और अगर किसी को पता चल भी गया तो इस काम को कर कौन सकता है। इसलिये मेरी बच्ची तुझे दुखी होने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। मैं अमर हूँ।”

---

[16] Sphatik means “Crystal”

केशवती ने उसका यह भेद याद कर लिया और वह सोने चली गयी।

अगले दिन सुबह जब सब राक्षस अपना खाना ढूँढने बाहर चले गये तो चम्पा दल अपनी छिपने वाली जगह से बाहर निकला और केशवती के पास पहुँच कर उसे जगाया। उसने उससे बातें कीं तो केशवती ने उसको राक्षसों को मारने का भेद बताया जो उसने राक्षसी से मालूम किया था।

चम्पा दल ने तुरन्त ही यह काम करने की तैयारी की। उसने अपने साथ एक चाकू और कुछ राख ली और उस तालाब के किनारे आ गया।

उसने अपने कपड़े उतारे एक दो बूँद सरसों का तेल अपने दोनों कानों में डाला ताकि पानी उसके कानों में अन्दर न जाने पाये और पानी में कूद गया।

पल भर में ही वह उस स्फटिक के खम्भे के ऊपर पहुँच गया जो उस तालाब के बीच में खड़ा हुआ था। उसने वहाँ बैठी दोनों मधुमक्खियों को पकड़ा और फिर एक ही साँस में ऊपर जमीन पर आ गया।

फिर उसने अपना चाकू उठाया और उससे उनको राख के ऊपर रख कर काट दिया। उनको वहाँ काटने में एक दो बूँद खून तो गिरा पर उनका खून जमीन पर नहीं गिरा बल्कि राख पर गिरा।

जैसे ही उसने उन मधुमक्खियों को पकड़ा दूर बहुत भयानक चीखें सुनायी पड़ीं। यह राक्षसों की चीखें थीं। वे चीखते हुए घर की तरफ भाग रहे थे ताकि वे उन मधुमक्खियों को मारे जाने से रोक सकें।

पर इससे पहले कि वे महल आ सकते चम्पा दल ने उन्हें मार दिया था। उन मक्खियों के मरते ही सारे राक्षस मर गये। उनके शरीर वहीं की वहीं गिर पड़े जहाँ वे खड़े थे।

चम्पा दल और केशवती ने देखा कि महल का दरवाजा तो कई राक्षसों के मरे हुए शरीरों से बन्द हो चुका था।

ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि उनमें से कुछ राक्षस महल के दरवाजे तक पहुँचने में कामयाब हो चुके थे और उसके अन्दर घुस रहे थे सो वे तभी मर गये थे।

इस तरह से चम्पा दल ने सात सौ राक्षसों को मार दिया। इनको मारने के बाद चम्पा दल और केशवती ने एक दूसरे को फूलों की माला पहना कर आपस में शादी कर ली।

केशवती ने जो कभी घर से बाहर नहीं निकली थी चम्पा दल से बाहर की दुनियाँ देखने की इच्छा प्रगट की। वे दोनों हर सुबह शाम दूर दूर तक घूमने के लिये जाते।

उनके पास ही एक बहुत बड़ी नदी बहती थी। एक बार केशवती ने उसमें नहाने की इच्छा प्रगट की। तो पहले ही दिन जब

वह उस नदी में नहा रही थी तो उसके सिर से उसका एक बाल झड़ गया।

वहाँ की रीति कुछ ऐसी थी कि किसी बाल को अकेले ही बिना किसी के साथ नहीं फेंका जा सकता था। सो उसने उस बाल को फेंकने के लिये उसके साथ के लिये कुछ ढूँढा।

उसकी निगाह एक सीपी पर पड़ गयी जो वहीं पानी में बह रही थी। उसने वह सीपी उठा ली और उसके साथ अपना वह बाल बाँध दिया और उसको उसी नदी में फेंक दिया। उसके बाद वे घर लौट आये।

पानी के बहाव के साथ साथ वह सीपी भी जिसमें केशवती का बाल बँधा था नीचे की तरफ बहती चली गयी। बहते बहते वह उस घाट पर पहुँच गयी जहाँ सहस्र दल अपने साथियों के साथ अपनी पूजा किया करता था।

उस समय सहस्र दल और उसके दोस्त वहाँ नहा रहे थे। सहस्र दल ने कुछ दूर पर वह सीपी तैरती देखी तो तुरन्त ही अपने साथियों से कहा — "जो कोई भी उस सीपी को पहले उठा कर लायेगा उसे सौ रुपये इनाम मिलेगा।"

सो सब उस तरफ तैर गये। सहस्र दल क्योंकि सबसे ज़्यादा तेज़ तैरने वाला था वह उसे तुरन्त ही ले आया। देखने पर पता चला कि उस सीपी पर तो एक बाल बँधा हुआ है। पर यह कैसा बाल था। उसने इतना लम्बा बाल पहले कभी नहीं देखा था।

उसने सोचा "यह बाल जिसका भी होगा वह तो एक बहुत ही सुन्दर स्त्री होगी। यह ठीक सात क्यूबिट[17] लम्बा है। मुझे उस स्त्री को देखना है जिसका यह बाल है।"

यह सोच कर सहस्र दल नदी से कुछ उदास सा घर चला गया। और बजाय घर में नाश्ते के लिये जाने के वह महल में बाहर ही बैठ गया।

यह सुन कर कि सहस्र दल कुछ उदास है और नाश्ते के लिये भी अन्दर नहीं आया रानी माँ खुद उसको बुलाने के लिये उसके पास गयीं।

उन्होंने उससे पूछा कि क्या बात है वह नाश्ते के लिये अन्दर क्यों नहीं आया। इस पर उसने उनको बाल दिखाया और कहा कि वह उस स्त्री को देखना चाहता है जिसके सिर का यह बाल है।

रानी माँ ने कहा — "ठीक है पर अभी तुम नाश्ते के लिये तो चलो। तुमको वह स्त्री महल में जल्दी से जल्दी मिल जायेगी। मैं वायदा करती हूँ कि वह यहाँ आयेगी।"

रानी माँ ने अपनी प्रिय दासी को बुलाया जिसको कि वह यह समझती थी कि वह सब काम कर सकती थी। यह वही राक्षसी थी जिसके कहने पर उन्होंने चम्पा दल को महल से बाहर निकाल दिया था।

---

[17] One Cubit is equal to 18". It means that that hair was 18 X 7 = 56" long.

रानी माँ ने उससे कहा कि वह जल्दी से जल्दी उस सात क्यूबिट लम्बे बाल वाली स्त्री को महल में ल कर आये।

दासी ने कहा कि वह उसको महल में जरूर ले आयेगी। उसने हजोल[18] की लकड़ी की एक नाव बनवायी और मौन पाबान[19] की लकड़ी की उसकी पतवारें बनवायीं। और उसकी वह नाव उस नदी में चल दी जिसमें सहस्र दल को सीपी मिली थी।

उस नाव पर उसने डंडियों की बुनी हुई कुछ अजीब सी टोकरियाँ भी रख लीं और उसने अपने साथ कुछ जहरीली मिठाई भी ले ली।

फिर उसने अपनी उँगलियाँ तीन बार मारीं और यह जादू बोला — "ओ हजोल की नाव। ओ मोन पाबान की पतवारें। तू मुझे उस घाट पर ले चल जहाँ केशवती नहाती है।"

जैसे ही उसने ये शब्द बोले वह नाव बिजली की सी तेज़ी से पानी के ऊपर दौड़ ली। वह बहुत सारे शहर पार करती जा रही थी।

आखिर वह एक घाट पर जा कर रुक गयी। राक्षसी को लगा कि यही वह घाट था जिस पर केशवती नहाने के लिये आया करती थी। राक्षसी ने अपनी लायी जहरीली मिठाई अपने हाथ में ली और वहाँ उतर गयी।

---

[18] Hajol wood

[19] Mon Paban wood

वहाँ से वह महल के दरवाजे तक गयी और ज़ोर से चिल्लायी — "ओ केशवती ओ केशवती। मैं तेरी मौसी हूँ तेरी माँ की बहिन। देख तो मैं तुझसे कितने सालों बाद मिलने आयी हूँ। क्या तू अन्दर है केशवती?"

यह सुन कर केशवती अपने कमरे में से बाहर निकल कर आयी और यह पक्का करते हुए कि वह उसकी मौसी ही थी उसके गले लग गयी। दोनों खुशी से रो पड़ीं। कम से कम राक्षसी दासी तो रोयी ही पर केशवती उसके साथ रोयी।

चम्पा दल को तो कुछ पता नहीं था। उसने सोचा कि यह उसकी नयी शादीशुदा पत्नी की मौसी होगी। उन सबने खाया पिया और फिर दिन में आराम करने के लिये लेट गये। चम्पा दल जैसी कि उसकी आदत थी वह भी नाश्ते के बाद सोने चला गया।

तीसरे पहर उस राक्षसी ने केशवती से कहा — "चल केशवती हम लोग नदी पर नहाने धोने के लिये चलते हैं।"

केशवती बोली — "मैं अभी कैसे जा सकती हूँ मेरे पति अभी सोये हुए हैं।"

मौसी बोली — "तो क्या हुआ। उसको सोने दो। मैं यह मिठाई यहाँ उसके बिस्तर के पास रख देती हूँ ताकि जब वह जागे तब वह इसको खा सकता है।"

उसके बाद वह केशवती को नदी के किनारे ले गयी जहाँ उसकी नाव खड़ी थी। केशवती ने दूर से डंडियों की बनी वे अजीब

सी टोकरियाँ देखीं तो बाली — "मौसी इतनी सुन्दर चीज़ वह क्या है। काश मैं भी उनमें से कुछ ले सकती।"

राक्षसी बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आ मेरी बच्ची आ। देख उनको और फिर तुझको जितनी चाहिये उतनी ले लेना।"

पहले तो केशवती ने उसकी नाव पर जाने से इनकार कर दिया पर जब उसकी मौसी ने उससे काफी जिद की तो वह उसके साथ चली गयी।

जैसे ही वे दोनों नाव पर चढ़ीं मौसी ने अपनी उँगलियाँ तीन बार मारीं और यह जादू के बोल बोले — "ओ हजोल की नाव। ओ मोन पाबान की पतवारें। तू मुझे उस घाट पर ले चल जहाँ सहस्र दल नहाता है।"

जैसे ही उसने जादू के ये शब्द बोले कि वह नाव पानी पर तीर की तरह चल दी। यह देख कर केशवती डर गयी और रोने लगी। पर नाव तो शहर पर शहर छोड़ती चलती ही जा रही थी। पल भर में वह उसी घाट पर जा पहुँची जिस घाट पर सहस्र दल नहाया करता था।

वहाँ से केशवती को उतार कर सहस्र दल के महल ले जाया गया। सहस्र दल ने जब उसको देखा तो उसने उसकी सुन्दरता और उसके बालों की बहुत तारीफ की।

महल की दूसरी स्त्रियों ने केशवती को तसल्ली देने की बहुत कोशिश की पर वह तो और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी और अपने पति के पास वापस जाने के लिये कहने लगी।

आखिर उसको पता चल गया कि वह तो बन्दी बनायी जा चुकी है। उसने महल की स्त्रियों से कहा कि उसने यह कसम खा रखी है कि वह छह महीने तक किसी दूसरे आदमी का चेहरा नहीं देखेगी।

सो उसको महल से अलग एक छोटे से घर में ठहरा दिया गया। उसकी खिड़की से बाहर की सड़क दिखायी देती थी। वह वहाँ दिन रात बैठी बैठी बाहर देखती रहती। क्योंकि वह हमेशा रोती रहती इसलिये वह ठीक से सो भी नहीं पाती थी।

इस बीच चम्पा दल सो कर उठा तो वह अपनी पत्नी को वहाँ न पा कर बहुत दुखी हुआ। उसने सोचा कि उसकी पत्नी कहाँ जा सकती है।

फिर उसको लगा कि वह स्त्री जो सुबह आयी थी वह तो केवल बहाना बना रही थी कि वह उसकी मौसी थी। वास्तव में वह उसकी मौसी वौसी कोई नहीं थी। वह तो कोई धोखा देने वाली थी और वही केशवती को कहीं ले गयी है।

इसी लिये उसने मिठाई भी नहीं खायी क्योंकि उसने सोचा कि वह जहरीली भी हो सकती थी। उसने अपनी बात को पक्का करने

के लिये उसमें से एक मिठाई का टुकड़ा एक कौए को फेंका तो जैसे ही उसने उसे खाया वह मर कर गिर गया।

अब उसका विचार पक्का हो गया था कि वह स्त्री उसकी नकली मौसी थी और वही उसको कहीं ले गयी है। दुख से पागल सा वह घर के बाहर भागा और जहाँ उसको कुछ नजर आये वह वहीं चल दिया।

पागलों की तरह से वह केशवती केशवती पुकारता हुआ चारों तरफ घूमने लगा। वह दिन ब दिन पैदल ही घूमता रहा। उसको यह भी पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा था।

इस तरह से घूमते घूमते उसको छह महीने बीत गये। छह महीने के बाद वह सहस्र दल की राजधानी में आ पहुँचा। वह महल के दरवाजे के पास से गुजर रहा था कि उसको किसी स्त्री के रोने और सिसकने की आवाजें सुनायी पड़ीं।

उसने देखा कि महल के पास के एक घर की एक खिड़की में बैठी एक स्त्री रो रही है। उसने उसको देखा तो तुरन्त ही पहचान लिया कि वह तो केशवती थी। वे आपस में छिप छिप कर मिलने लगे। चम्पा दल ने उसकी कसम की कहानी भी सुन ली थी और अब अगला दिन उसकी कसम का आखिरी दिन था।

अब जब कोई कसम खाता है तो यह रीति है कि कोई ब्राह्मण लोगों को उस आदमी के बारे में बताये और यह बताये कि उससे

सम्बन्धित क्या घटनाऐं थीं। सो यह निश्चय किया गया कि चम्पा दल ही इस बात को सब लोगों को बताये।

सो अगले दिन महल के ऑगन में लोग यह सुनने के लिये जुड़े। ढोल की चोट पर लोगों को यह बताया गया कि राजा को एक विद्वान ब्राह्मण की जरूरत है जो केशवती की कसम पूरी होने पर उसकी कहानी उनको बता सके।

सहस्र दल, उसके दरबारी और बहुत सारे विद्वान ब्राह्मण वहॉ मौजूद थे। केशवती भी एक परदे के पीछे वहॉ बैठी हुई थी ताकि वह लोगों की बुरी नजरों से बची रहे। चम्पा दल एक चबूतरे पर बैठा हुआ था।

उसने केशवती की कहानी सुनानी शुरू की जैसी कि हम अब तक पढ़ चुके हैं। उसने शुरू किया — "एक बार की बात है कि एक बहुत ही बेवकूफ और गरीब ब्राह्मण था..."

जैसे जैस चम्पा दल केशवती की कहानी सुनाता जा रहा था वह बीच बीच में परदे के पीछे बैठी केशवती से पूछता जा रहा था कि वह जो कहानी सुना रहा था वह ठीक थी या नहीं।

बीच बीच में वह उसको कहती रही — "तुम्हारी कहानी ठीक है ब्राह्मण, सुनाते रहो।"

उधर चम्पा दल की कहानी जैसे जैसे आगे बढ़ रही थी राक्षसी दासी पीली पड़ती जा रही थी क्योंकि उसका सच्चा रूप सामने आ

रहा था। उधर सहस्र दल भी आश्चर्य में डूबता जा रहा था कि इस कहानी कहने वाले को मेरी कहानी कैसे मालूम।

जैसी ही चम्पा दल ने अपनी कहानी खत्म की सहस्र दल अपने सिंहासन से कूदा और दौड़ कर कहानी कहने वाले को गले लगा लिया — "तुम मेरे भाई चम्पा दल के सिवा और कोई हो ही नहीं सकते।"

फिर गुस्से में भर कर उसने अपने भाई के सामने ही राक्षसी दासी को मार डालने का हुकुम सुना दिया।

एक आदमी की ऊँचाई के बराबर जमीन में एक गड्ढा खोदा गया। उस राक्षसी दासी को उसके अन्दर खड़ा कर दिया गया। उसके चारों तरफ गड्ढे में कॉटे भर दिये गये जो उसके सिर तक आ रहे थे। फिर उनमें आग लगा दी गयी। इस तरह उसको ज़िन्दा ही जला दिया गया।

उसके बाद सहस्र दल उसकी पत्नी चम्पा दल और उसकी पत्नी केशवती सब लोग एक साथ बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे।

3 एक लड़का जिसके माथे पर चॉद था[20]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके छह रानियॉ थीं पर उनमें से किसी के कोई बच्चा नहीं था। डाक्टर ऋषि मुनि सन्यासी सबसे सलाह ली गयी। अनगिनत दवाऐं आजमायी गयीं पर सब बेकार। किसी से कोई फायदा नहीं हुआ। राजा को तसल्ली देना बहुत मुश्किल हो गया।

तब उसके मन्त्रियों ने उसको सलाह दी कि वह एक और लड़की से शादी कर ले। शायद वह सातवीं लड़की उसके लिये खुशकिस्मती ले कर आये। सो उसने अपने लिये एक लड़की ढूॅढनी शुरू की जिसको वह अपनी सातवीं रानी बना सके।।

इस राजा के शहर में एक गरीब बुढ़िया रहती थी जो खेतों से गाय का गोबर उठाती थी उसके कंडे[21] बना कर उनको बाजार में आग जलाने के लिये बेच देती थी। बस यही उसकी रोटी पानी का जरिया था।

---

[20] The Boy With the Moon on His Forehead (Tale No 19) – a folktale from India, Asia.
Taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/The_Boy_with_the_Moon_on_his_Forehead
Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. This book is available at the above Web Site.

[21] Translated for the words "Cow Dung Cakes". These Kande are made of cow dung indo a little flat shape, may be of 8-10" diameter and 1" thick, are dried and then are used to burn as fuel. It is very common in villages.

इस बुढ़िया की एक बेटी थी जो बहुत सुन्दर थी। जो भी उसको देखता वही उसकी सुन्दरता की तारीफ करता। और केवल उसकी सुन्दरता की वजह से तीन नौजवान लड़कियों ने जो उससे ओहदे और घर में बहुत ऊँची थीं उससे दोस्ती कर रखी थी।

इन तीन नौजवान लड़कियों में एक राजा के वजीर की बेटी थी दूसरी एक बहुत ही अमीर सौदागर की बेटी थी और तीसरी शाही पादरी की बेटी थी।

ये तीनों नौजवान लड़कियॉ और यह गरीब बुढ़िया की बेटी चारों एक दिन एक तालाब में नहा रही थीं। यह तालाब महल के पास ही था। इन चारों लड़कियों के अपने अपने अलग अलग गुण थे।

नहाते समय वे पूजा कर रही थीं कि वजीर की बेटी सौदागर की बेटी से बोली — "इधर देखो बहिन, जो आदमी भी मुझसे शादी करेगा वह मुझसे बहुत खुश रहेगा क्योंकि उसको मेरे लिये कपड़े नहीं खरीदने पड़ेंगे। मैं एक कपड़े को जब पहन लेती हूॅ तो वह मैला ही नहीं होता, पुराना भी नहीं होता और फटता भी नहीं।"

सौदागर की बेटी ने कहा — "मेरा पति भी मुझसे शादी करके बहुत खुश रहेगा। क्योंकि खाना पकने में मैं जो ईंधन इस्तेमाल करती हूॅ उसकी कभी राख ही नहीं बनती – दिन ब दिन, साल ब साल वह ऐसे ही जलता रहता है।"

शाही पादरी की बेटी बोली — “और मेरा पति भी मुझसे शादी करके बहुत खुश रहेगा क्योंकि मैं जब चावल पकाती हूँ तो वह चावल कभी खत्म ही नहीं होता।

इस पर गरीब बुढ़िया की बेटी बोली — “और जो मुझसे शादी करेगा वह तो मुझसे बहुत ही खुश रहेगा क्योंकि मैं जुड़वाँ बच्चों को जन्म दूँगी – एक बेटा और एक बेटी। मेरी बेटी दैवीय रूप से बहुत सुन्दर होगी और मेरे बेटे के माथे पर चाँद होगा और उसकी हथेली पर सितारे।”

उन लड़कियों की यह बातचीत उस राजा ने सुनी जो अपनी सातवीं रानी बनाने के लिये लड़की ढूँढ रहा था। उसने सोचा कि वह उन लड़कियों को उन जगहों पर देखेगा जहाँ वे लड़कियाँ मिलती थीं।

उसको उन लड़कियों की कोई जरूरत नहीं थी जिसके कपड़े कभी मैले नहीं होते थे या पुराने नहीं होते थे या फिर कभी फटते नहीं थे। उसको उस लड़की की भी कोई जरूरत नहीं थी जिसका ईंधन कभी खत्म ही नहीं होता था। और उसको उस लड़की की भी कोई जरूरत नहीं थी जिसके बनाये हुए चावल कभी खत्म नहीं होते थे।

हाँ चौथी लड़की जरूर अच्छी थी क्योंकि वह जुड़वाँ बच्चों को जन्म देगी – एक बेटा और एक बेटी। उसकी बेटी दैवीय रूप से बहुत सुन्दर होगी और उसके बेटे के माथे पर चाँद होगा और उसकी

हथेली पर सितारे। यही वह लड़की है जिसकी मुझे जरूरत है। मैं इसी से शादी करूँगा।

उसने उसी दिन उन लड़कियों के बारे में पूछताछ की तो उसको पता चला कि वह लड़की जिससे वह शादी करना चाहता है वह तो एक गरीब बुढ़िया की बेटी है जो खेतों से गाय का गोबर इकट्ठा करती है और उसके कंडे बना कर बाजार में बेच देती है।

हालॉकि उन दोनों की हैसियत में बहुत फर्क था पर फिर भी राजा ने उस गरीब बुढ़िया की बेटी से ही शादी करने का फैसला किया। उसने उसी दिन उस बुढ़िया को बुलवा भेजा।

जब बुढ़िया ने राजा का दूत अपने घर के दरवाजे पर खड़ा देखा तो बेचारी बुढ़िया तो डर के मारे कॉप गयी। उसको लगा कि राजा उसको सजा देना चाहता है क्योंकि शायद गलती से उसने राजा की गाय का गोबर उठा लिया है।

पर अब वह क्या कर सकती थी सो डर के मारे कॉपती कॉपती वह राजा के महल गयी। उसको राजा के अपने कमरे में ले जाया गया।

राजा ने पूछा कि क्या उसके कोई बहुत सुन्दर सी बेटी थी और क्या वह उसके वजीर शहर के सौदागर और उसके शाही पादरी की बेटियों की दोस्त थी।

बुढ़िया बोली "जी हॉ है तो और वह उनकी दोस्त भी है।"

राजा बोला — "मैं आपकी बेटी से शादी करके आपकी बेटी को अपनी रानी बनाना चाहता हूँ।"

बुढ़िया को तो यह सुन कर अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। यह तो बड़ी अजीब सी बात थी। पर राजा ने तो इस बात का पक्का इरादा कर लिया था सो उसने फिर यह घोषित कर दिया कि वह उस बुढ़िया की बेटी से शादी कर रहा है तो वह बुढ़िया कुछ न कह सकी।

अब क्या था तुरन्त ही सारे शहर में यह बात फैल गयी कि राजा उस बुढ़िया की बेटी से शादी कर रहा था जो खेतों से गाय का गोबर उठा कर उसके कंडे बना कर बाजार में बेच देती थी।

जब राजा की छहों रानियों ने यह खबर सुनी तो उनको भी अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ जब तक राजा ने उनसे खुद नहीं कहा कि "हाँ यह खबर सच है।"

उन्होंने उसको इस शादी को न करने की सलाह दी और यह वजह दी — "यह क्या बेवकूफी है। यह क्या पागलपन है कि आप एक ऐसी लड़की से शादी कर रहे हैं जो हमारी दासी होने के काबिल भी नहीं है।

और फिर आप हमसे एक ऐसी लड़की जिसकी माँ खेतों में से गाय का गोबर उठा कर उसके कंडे बना कर बाजार में बेचती है अपने बराबर का बरताव करने के लिये कहेंगे। यह तो नामुमकिन

है। हमें यकीन है कि आप होश में नहीं हैं कि आप क्या करने जा रहे हैं।”

पर राजा अपने इरादे से नहीं डिगा। शाही ज्योतिषी बुलवाया गया और राजा की शादी के लिये एक शुभ दिन निकलवाया गया और उस दिन राजा की शादी उस बुढ़िया की लड़की से हो गयी।

इस तरह एक गाय का गोबर उठाने वाली की लड़की राजा की सातवीं और सबसे प्यारी रानी हो गयी।

शादी हो जाने के कुछ समय बाद राजा छह महीने के लिये अपने राज्य के दूसरे हिस्सों में गया। जाने से पहले उसने अपनी सातवीं रानी को बुलाया और कहा — “मैं कुछ दिनों के लिये अपने राज्य के दूसरे हिस्सों में जा रहा हूँ तब तक के लिये मैं चाहता हूँ कि तुम किसी से न मिलो जुलो।

मैं चाहता हूँ कि जब भी तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे साथ कुछ शरारत करें मैं तुम्हारे साथ ही रहूँ। यह सोने की घंटी लो और इसको अपने कमरे में टाँग लो।

जब भी तुमको लगे कि अब तुम्हारे बच्चा होने वाला है तो बस इस घंटी को बजा देना मैं अपने राज्य के किसी भी हिस्से में होऊँगा तुरन्त ही तुम्हारे पास आ जाऊँगा। याद रखना यह घंटी तभी बजाना जब तुमको लगे कि तुम्हारे बच्चा होने वाला है। कभी और नहीं।”

यह कह कर राजा अपनी यात्रा पर चला गया।

छहों रानियों ने राजा की यह बात सुन ली थी सो अगले दिन ही वे सातवीं रानी के कमरे में गयीं और बोलीं — “बहिन तुम्हारे कमरे में टॅगी यह घंटी तो बहुत सुन्दर है। तुमको यह कहॉ से मिली और तुमने इसे ऊपर क्यों टॉग रखा है?”

सातवीं रानी बहुत सीधी थी सो सीधे स्वभाव उसने उनको जवाब दिया — “यह घंटी मुझे राजा ने दी है। जब भी मैं इसे बजाऊँगी तो राजा कहीं भी हों जल्दी ही मेरे पास आ जायेंगे।”

छहों रानियों के मुॅह से एक साथ निकला — “नामुमकिन। यह कैसे हो सकता है। हमें लगता है कि तुमने राजा को गलत समझ लिया है। इस बात पर कौन विश्वास कर सकता है कि इस घंटी की आवाज सैंकड़ों मील दूर तक सुनी जा सकती है।

इसके अलावा अगर इसकी आवाज सैंकड़ों मील दूर तक सुनी भी जा सकती है तो भला पलक झपकते राजा यहॉ इतनी दूर कैसे आ सकते हैं।

यह सब झूठ है। अगर तुम घंटी बजा कर देखोगी तब तुमको पता चलेगा कि राजा ने जो कुछ तुमसे कहा है वह सब ऐसे ही कहा है। उसका कोई मतलब नहीं है।”

ऐसा कह कर छहों रानियों ने उसको वह घंटी बजा कर इस बात की जॉच करने के लिये कहा। राजा की बात याद करके पहले तो रानी हिचकिचायी पर फिर वह घंटी बजाने के लिये तैयार हो गयी। और फिर उसने वह घंटी बजा दी।

उस समय राजा अपने राज्य से लौट कर अपने शहर आ रहा था और आधे रास्ते में था। जैसे ही उसने घंटी की आवाज सुनी तो वह रुक गया, वापस पलटा और तुरन्त ही वह रानी के महल था।

उसने रानी को उसके कमरे में ढूँढा और उससे पूछा कि उसने वह घंटी क्यों बजायी क्योंकि अभी तो उसके बच्चे के होने का समय नहीं था।

रानी ने उसको उसकी छहों रानियों की बात बताये बिना ही कहा कि वह उस घंटी की सचाई जाँच रही थी कि जो कुछ उसने उसके बारे उससे कहा था वह सच था कि नहीं।

राजा उसकी इस बात पर थोड़ा सा नाराज तो हुआ पर उसने उससे साफ साफ कहा कि उसको जब तक उसके बच्चा पैदा होने का समय न आ जाये वह वह घंटी न बजाये। यह कह कर वह वहाँ से चला गया।

कुछ हफ्ते बाद राजा की छहों रानियों ने सातवीं रानी से फिर से प्रार्थना की कि वह दोबारा उसको जाँचे।

उन्होंने कहा — "उस बार जब तुमने घंटी बजायी थी तब राजा तुमसे कुछ ही दूरी पर ही थे इसलिये उनको इस घंटी की आवाज सुनना मुमकिन था पर अब वह बहुत दूर हैं तो अब देखते है कि वह अभी भी इस घंटी की आवाज सुन सकते हैं या नहीं। और अभी भी यहाँ आ सकते हैं कि नहीं।"

राजा की बात याद करके वह बहुत देर तक उनको मना करती रही पर उन्होंने उसको फिर घंटी बजाने पर मजबूर कर दिया सो उसने फिर से घंटी बजा दी।

इस बार जब रानी ने घंटी बजायी तो राजा अपने दरबार में बैठा न्याय कर रहा था। उस घंटी की आवाज राजा के सिवा और किसी को सुनायी नहीं दी तो जब उसने उस घंटी की आवाज सुनी तो उसने अपना दरबार बन्द किया और तुरन्त ही रानी के कमरे में आ खड़ा हुआ।

यह देख कर कि रानी कमरे में बन्द नहीं थी उसने रानी से पूछा कि उसने बच्चे के पैदा होने के समय से पहले यह घंटी क्यों बजायी।

उसने फिर से उसकी दूसरी रानियों की करतूत बताये बिना ही उसको बताया कि यह उसने केवल दूसरी बार उस घंटी की जॉच करने के लिये बजायी थी।

इस बार राजा बहुत गुस्सा था। वह बोला — "अब तुम मेरी बात ध्यान से सुन लो। मेरे कहने के बावजूद कि तुम मुझको तभी बुलाना जब तुम्हें बच्चा होने वाला हो पर तुम नहीं मानी।

और क्योंकि तुम मुझे दो बार बिना समय के ही बुला चुकी हो इसलिये अब तुम यह भी जान लो कि जब तुम्हारे सचमुच में बच्चा पैदा होगा तब तुम कितनी भी ज़ोर से घंटी बजाना मैं नहीं आऊँगा। तुम जानो और तुम्हारी किस्मत।"

कह कर राजा वहाँ से चला गया।

आखिर सातवीं रानी का वह दिन भी आया जब उसके बच्चा होने वाला था। महसूस होते ही कि अब उसको बच्चा होने वाला है उसने वह सोने की घंटी बजायी। उसने इन्तजार किया पर राजा नहीं आया।

उसने फिर से अपनी पूरी ताकत लगा कर उस घंटी को फिर से बजाया पर राजा अभी भी नहीं आया। राजा ने यकीनन घंटी की आवाज सुन तो ली थी पर क्योंकि वह रानी से बहुत गुस्सा था इसलिये वह नहीं आया।

जब राजा की पहली छह रानियों ने देखा कि राजा नहीं आया तो वे सातवीं रानी के पास गयीं और बोलीं — "यह यहाँ का रिवाज नहीं है कि महल की स्त्रियाँ राजा के महल में इस तरह बन्द रहें। तुमको घुड़साल के पास एक झोंपड़ी में जाना चाहिये।"

यह कह कर उन्होंने महल की दाई[22] को बुलवाया और उसको बहुत सारी रिश्वत दी ताकि वह सातवीं रानी के बच्चे को जैसे ही वह पैदा हो उसको मार दे।

सातवीं रानी ने एक बेटे को जन्म दिया जिसके माथे पर चाँद था और उसकी हथेली पर सितारे थे। और फिर एक बेटी को जन्म दिया जो बहुत सुन्दर थी।

[22] Translated for the word "Mid-wife". She is neither a doctor nor a trained nurse who is trained in delivering a child. She is a traditional woman who helps delivering the child at home.

जब यह दाई सातवीं रानी के पास आयी थी तो छहों रानियों ने इसको दो पिल्ले[23] दे दिये थे। सो उसने वे दोनों पिल्ले माँ के सामने रखे और उससे कहा "तुमने इनको जन्म दिया है।" और उसके असली बच्चों को एक मिट्टी के बरतन में रख कर बाहर ले जाये।

रानी तो उस समय अपने होश में ही नहीं थी सो वह अपने जुड़वाँ बच्चों को ही नहीं देख पायी कि वे बच्चे थे या पिल्ले। और दाई उसके बच्चों को वहाँ से ले गयी।

उधर राजा हालाँकि अपनी सातवीं रानी से बहुत गुस्सा था फिर भी उसको याद था कि उसकी वह रानी उसकी राज गद्दी के लिये जुड़वाँ बच्चों को जन्म देने वाली थी सो उसने अपना इरादा बदल दिया और अगली सुबह उसके पास आ गया।

वे दोनों पिल्ले राजा को दिखाये गये कि रानी ने ये बच्चे पैदा किये हैं। यह देख कर राजा का गुस्सा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया।

उसने हुकुम दिया कि सातवीं रानी को महल से बाहर निकाल दिया जाये। उसको कपड़ों की जगह चमड़ा पहना दिया जाये और उसको बाजार में से गायों और कुत्तों को भगाने का काम दे दिया जाये।

हालाँकि वह रानी मुश्किल से हिल सकती थी फिर भी उसको महल से बाहर निकाल दिया गया। उसके बढ़िया कपड़े निकाल

---

[23] Translated for the word "Puppies"

लिये गये और उसको चमड़ा पहना दिया गया और उसको बाजार में से कौओं को भगाने का काम दे दिया गया।

दाई ने बच्चों को मिट्टी के बरतन में रखने के बाद यह सोचा कि उनको मारने का सबसे अच्छा तरीका क्या हो सकता था।

उसको लगा कि उनको किसी तालाब में डुबोना तो ठीक नहीं रहेगा क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि अगले दिन वे उस तालाब में से ढूँढ लिये जायें।

इसी तरह से उसको उन्हें जमीन में गाड़ना भी ठीक नहीं लगा। क्योंकि इस तरह से तो कोई गीदड़ उनको खोद कर बाहर निकाल सकता था और फिर वे लोगों की निगाह में आ जाते।

सो उनको मारने का सबसे अच्छा रास्ता जो उसको लगा वह था कि उनको जला दिया जाये ताकि उनका नामो निशान ही मिट जाये। पर इस समय इतनी रात के समय वह अकेली बिना किसी दूसरे की सहायता के यह काम कैसे करे।

तभी उसके दिमाग में एक बहुत ही अच्छा विचार आया। शहर के बाहर पास में ही एक कुम्हार रहता था। वह दिन में अपने चाक से मिट्टी के बरतन बनाता था और रात को उन बरतनों को भट्टे में पकने के लिये रख देता था।

दाई ने सोचा कि सबसे अच्छा प्लान यही रहेगा कि वह उस मिट्टी के बरतन को जिस बरतन में वह बच्चे रख कर लायी थी उस

कुम्हार के कच्चे बरतनों के साथ रख दे जिनको कुम्हार ठीक करके रख कर सोने चला गया है।

फिर वह रात को उनको पकाने के लिये उठेगा और उनमें आग लगा देगा। उसने सोचा कि इस तरह से वे दोनों जुड़वाँ बच्चे जल कर राख हो जायेंगे।

इस तरह सोचते हुए उसने कुम्हार के सजाये हुए कच्चे बरतनों के साथ ही अपना लाया बरतन जिसमें बच्चे थे रख दिया और वहाँ से चली गयी।

पर उस रात क्या हुआ कि कुम्हार और उसकी पत्नी किसी वजह से देर तक सोते रह गये। जब कुम्हार की पत्नी सुबह सवेरे सो कर उठी तो दिन निकल आया था। उसने अपने पति को उठाया।

वह बोली — "ओह मेरे भगवान, हम लोग तो आज सोते ही रह गये। यह तो सुबह भी हो गयी। हम लोगों को आज बरतन भट्टे में रखने के लिये तो बहुत देर हो गयी।"

उसने जल्दी से अपने घर का दरवाजा खोला और उस जगह की तरफ भागी जहाँ वे लोग अपने कच्चे बरतन भट्टे में रखने के लिये सजा कर रखते थे।

वह तो यह देख कर दंग रह गयी उसके सारे बरतन पकाये जा चुके हैं और वे चमकीले लाल रंग के दिखायी दे रहे हैं। जबकि न तो उसने और न ही उसके पति ने उनको भट्टे की आग में रखा था।

अपनी खुशकिस्मती पर आश्चर्य करते हुए और यह न समझते हुए कि यह सब कैसे हुआ वह अपने पति के पास दौड़ी गयी और बोली — “अरे ज़रा यहाँ आ कर तो देखो।”

पत्नी की आवाज सुन कर कुम्हार भी बाहर आया तो उसने वह सब देखा तो वह भी आश्चर्य में भर गया।

उसके बरतन पहले तो इतने अच्छे कभी नहीं पके थे। यह सब किसने किया होगा। यह तो किसी देवी देवता का काम लगता है।

बरतनों के बारे में इस तरह बुडबुड़ाते हुए उसने एक बरतन पलटा तो लो देखो उस बरतन में तो दो नये जन्मे दैवीय सुन्दर बच्चे गठरी बने पड़े थे।

कुम्हार उन बच्चों को देख कर बहुत खुश हुआ और अपनी पत्नी से बोला — “तुमको किसी तरह यह दिखाना ही पड़ेगा कि ये तुम्हारे ही बच्चे हैं।”

सो इस प्लान के अनुसार सारा इन्तजाम किया गया और फिर यह घोषित कर दिया गया कि कुम्हार की पत्नी ने जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया है। और वे दोनों कितने प्यारे जुड़वाँ बच्चे थे।

उसी दिन कितनी सारी स्त्रियाँ उन बच्चों को देखने आयीं और कुम्हार और उसकी पत्नी को इस अचानक खुशकिस्मती पर बधाइयाँ दे गयीं।

कुम्हार की पत्नी तो इन बच्चों को पा कर बहुत ही खुश थी। उसने अपनी तारीफ करने वाली दोस्तों से कहा — “मुझे तो अब

बच्चों की कोई उम्मीद भी नहीं थी पर अब जब भगवान ने इन्हें मुझे दे ही दिया है तो इनको तुम सबका आशीर्वाद मिले और ये हमेशा ज़िन्दा रहें।

धीरे धीरे जुड़वाँ बच्चे बड़े होने लगे और ताकतवर होने लगे। वे भाई बहिन जब भी खेतों में और गलियों में खेलते तो जो कोई भी उनको देखता बस देखता ही रह जाता। और साथ में उस कुम्हार की खुशकिस्मती की भी तारीफ करता जो उसको इन देवदूत जैसे बच्चों के रूप में अचानक ही मिल गयी थी।

वे अब करीब करीब बारह साल के हो गये थे कि कुम्हार अचानक बीमार पड़ गया। वह इतना बीमार था कि सबको ऐसा लग रहा था कि वह अब बचेगा ही नहीं।

जब कुम्हार ने देखा कि अब उसका आखिरी समय आ गया है तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "प्रिये मैं तो अब मरने वाला हूँ पर मैं तुम्हारे खाने पीने और रहने के लिये काफी कुछ छोड़े जा रहा हूँ। सो तुम ज़िन्दा रहो और इन बच्चों की देखभाल करना।"

कुम्हार की पत्नी बोली — "मैं तुम्हारे बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती। दूसरी अच्छी और वफादार पत्नियों की तरह से मैं भी तुम्हारे साथ ही चली जाऊँगी। तुम और मैं दोनों साथ साथ एक ही चिता पर जलेंगे।

और जहाँ तक बच्चों का सवाल है वे लोग अपनी देखभाल करने के लिये अब काफी बड़े हैं।"

कुम्हार की पत्नी की दोस्तों ने उसको सती होने के लिये काफी रोका पर उसका कोई फायदा नहीं हुआ। कुम्हार मर गया उसका शरीर जला दिया गया। उसकी विधवा पत्नी ने भी उसी चिता में जल कर अपनी जान दे दी।[24]

वह लड़का जिसके माथे पर चॉद था हमेशा अपना सिर एक पगड़ी से ढके रहता था ताकि उसके उस चॉद की रोशनी लोगों का ध्यान न खींच ले।

उसकी बहिन ने कुम्हार का सारा सामान बेच दिया – उसका बरतन बनाने वाला चाक बरतन आदि। फिर वे दोनों बाजार चले गये जो राजा के शहर में था।

जैसे ही वे बाजार में घुसे तो अचानक बाजार रोशनी से चमक गया। बाजार में बैठे सारे दूकानदार चौंक गये कि बाजार में इतनी रोशनी कहॉ से आ गयी। उनको लगा कि कोई दैवीय लोग यहॉ आ गये हैं।

उन्होंने देखा कि एक लड़का और एक लड़की बाजार में चले आ रहे हैं। वे ते उन्हें आश्चर्य से देखते ही रह गये। उन्होंने उनसे बाजार में ही रहने की प्रार्थना की और उनके रहने के लिये एक मकान भी बना दिया। वे अब वहीं रहने लगे।

[24] About 200 years ago this custom was called “Sati Pratha” in which after the husband died and when his body was burnt on the pyre, his widow also got burnt in the same pyre. This custom was abolished by Lord William Bentik in 1829.

जब वे बाजार में इधर उधर घूमते तो वहाँ काम करती चमड़ा पहने एक स्त्री कुछ दूरी से उनका पीछा करती रहती। यह स्त्री वही थी जिसको राजा ने बाजार के कौए उड़ाने के लिये रखा हुआ था। किसी अनजानी ताकत से खिंची हुई वह स्त्री उस मकान के आस पास घूमती रहती जिसमें वे रहते थे।

लड़के ने बहुत जल्दी ही एक घोड़ा खरीद लिया था और वह पास के जंगलों में शिकार के लिये चला जाता था।

एक दिन जब वह शिकार के लिये जंगल गया हुआ था तो राजा भी शिकार के लिये वहीं आया हुआ था। उसने एक और शिकारी को देखा तो वह उसके पास चला गया।

राजा उसकी सुन्दरता देख कर आश्चर्यचकित रह गया और जैसे ही उसने उसे देखा तो उसके दिल में उस लड़के को अपने पास रखने की एक इच्छा पैदा हो गयी।

तभी उधर से एक हिरन भागा तो उस लड़के ने उसको एक तीर मारा। तीर मारने में उसको जो ज़ोर लगाना पड़ा उससे उसके सिर की पगड़ी गिर गयी। इससे उसके माथे पर चाँद की रोशनी चमकने लगी।

राजा ने भी उस रोशनी को देखा तो उसको तुरन्त ही याद आयी उस बेटे की जिसके माथे पर चाँद होता और उसकी हथेली पर सितारे होते और जिसको उसकी सातवीं रानी से पैदा होना था।

राजा वहीं उसके इन्तजार में खड़ा रहा क्योंकि वह उससे बात करना चाहता था पर तीर छोड़ने के बाद वह लड़का उस हिरन को पकड़ने के लिये उसी दिशा में भाग लिया जिसमें वह हिरन भाग कर गया था।

यह देख कर राजा वहाँ से उससे ज़्यादा दुखी हो कर चला गया जितना दुखी हो कर वह घर से शिकार के लिये आया था। अब घर में भी वह बहुत मूडी और दुखी रहने लगा था।

उसकी छहों रानियों ने उससे पूछा कि वह इतना उदास और दुखी क्यों है। उसने उनसे कहा कि उसने जंगल में एक लड़का देखा जिसके माथे पर चाँद था जिसको देख कर उसको अपने उस बेटे की याद आ गयी जिसको उसकी सातवीं रानी से पैदा होना था।

छहों रानियों ने उसको तसल्ली देने की बहुत कोशिश की पर वे खुद परेशान थीं कि वह नौजवान कौन हो सकता था। क्या ये वे ही जुड़वाँ बच्चे थे जिनको उन्होंने दाई को मारने का हुकुम दिया था? क्या वे अभी तक ज़िन्दा थे?

क्या दाई ने यह नहीं कहा था कि उसने लड़का और लड़की दोनों बच्चों को जला दिया और अगर उसने उनको जला दिया तो फिर यह लड़का कौन है?

सो छहों रानियों ने दाई को बुलवाया और उससे पूछताछ की तो उसने कसम खायी कि उसने देखा कि उसने दोनों बच्चों को जला

दिया। और जहाँ तक उस लड़के का सवाल है जो राजा को जंगल में मिला था वह उसके बारे में खुद पता करेगी कि वह कौन है।

दाई ने इधर उधर पूछताछ की तो उसको पता चला कि वे दोनों अजनबी बाजार में ही एक मकान में रह रहे थे जो उनको दूकानदारों ने बनवा कर दिया था।

वह उस मकान के अन्दर गयी तो वहाँ उसको केवल लड़की ही मिली क्योंकि लड़का शिकार पर गया हुआ था। उसने उस लड़की से बहाना बनाया कि वह उसकी मौसी थी जो उनके जन्म के कुछ समय बाद ही देश के दूसरे हिस्से में रहने के लिये चली गयी थी।

वह उनको बहुत दिनों से ढूँढ रही थी। आज उनको पा कर वह बहुत खुश है और यह जान कर भी कि वे राजा के शहर में राजा के महल के पास ही रहते हैं।

उसने लड़की की सुन्दरता की भी बहुत तारीफ की और उससे कहा — "मेरी बच्ची तू इतनी सुन्दर है कि तुझे तो केतकी के फूलों से अपने आपको सजाना चाहिये। तू अपने भाई से कहना कि वह अपने घर के आँगन में केतकी के पेड़ों की एक कतार लगाये।"

"यह कौन सा फूल है मौसी मैंने तो कभी इसे देखा नहीं।"

दाई बोली — "तू कहाँ से देखती बेटी। यह यहाँ नहीं मिलता। यह तो समुद्र के उस पार होता है और सात सौ राक्षस इसकी रक्षा करते हैं।"

लड़की बोली — "तो फिर मेरा भाई उसको कैसे लायेगा?"

दाई बोली — "अगर तू उससे कहेगी तो वह उसे लाने की कम से कम कोशिश तो कर सकता है।"

दाई ने यह सलाह उसको इसलिये दी थी कि हो सकता है कि लड़के के माथे का चाँद उस फूल को लाने में नष्ट हो जाये।

जब माथे पर चाँद वाला लड़का शाम को शिकार से वापस आया तो उसकी बहिन ने उनकी मौसी के आने की बात उसको बतायी और उससे प्रार्थना की कि अगर हो सके तो वह उसको केतकी के फूल ला दे।

लड़के को शक था कि उसकी कोई मौसी इस दुनियाँ में थी भी पर फिर भी उसने अपनी बहिन को खुश करने के लिये केतकी के फूल लाने का फैसला किया जो उसकी बहिन को चाहिये था।

और इसी इरादे के साथ अगले दिन उसने अपनी यात्रा शुरू की। जाने से पहले उसने अपनी बहिन से कहा कि जब तक वह वापस न आ जाये वह घर से बाहर न निकले।

उसने अपना सबसे तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा लिया जो पक्षीराज नस्ल का था[25] और जल्दी ही शहर के बाहर पहुँच गया। वह तो एक बहुत ही लम्बा और घना जंगल था। उसने वहाँ कुछ राक्षस भी इधर उधर घूमते देखे।

---

[25] Winged horse. It literally means the king of birds, a fabulous species of horse remarkable for their swiftness.

वह उस जंगल में कुछ दूर तक गया और फिर उसने अपने पास में लगी घनी झाड़ियों में अपने तीरों से कुछ हिरन और राइनोसिरौस[26] मारे।

इसके बाद वह उधर की तरफ चला जहॉ वे राक्षस घूम रहे थे और आवाज लगायी — "ओ मौसी ओ मौसी मैं आपका भानजा आ गया हूँ।"

उसकी आवाज सुन कर एक बहुत बड़ी राक्षसी वहॉ निकल कर आयी और बोली — "ओह तो तुम हो वह नौजवान जिसके माथे पर चॉद है और हथेली में तारे हैं।

हम सब तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे हैं पर क्योंकि तुमने मुझे मौसी कहा है इसलिये मैं तुम्हें खाऊॅगी नहीं। बोलो तुमको क्या चाहिये। क्या तुम मेरे लिये कोई खाने की चीज़ लाये हो?"

लड़के ने उसको वे हिरन और राइनोसिरौस दिये जो उसने जंगल में मारे थे। इन मरे हुए जानवरों को देख कर उस राक्षसी के मुँह में पानी आ गया। उसने उनको तुरन्त ही खाना शुरू कर दिया।

उन सब जानवरों को खाने के बाद वह फिर बोली — "अब बताओ तुमको क्या चाहिये?"

[26] Rhinoceros is a large animal – see its picture above.

लड़का बोला — "मुझे अपनी बहिन के लिये केतकी के कुछ फूल चाहिये।"

तब उसने उसको बताया कि केतकी का फूल लेना तो उसके लिये नामुमकिन सा है क्योंकि वह तो सात सौ राक्षसों की निगरानी में है फिर भी कोशिश करने में क्या हर्ज है। पर पहले उसको जंगल के उत्तर की तरफ अपने मौसा के पास जाना चाहिये।

सो वह लड़का जंगल के उत्तर की तरफ चल दिया। रास्ते में उसने फिर से कुछ हिरन और राइनोसिरौस मारे और आगे बढ़ा।

कुछ दूर आगे जाने पर उसको एक बहुत बड़ा राक्षस खड़ा दिखायी दिया तो वह उससे बोला — "मौसा जी मैं आपका भानजा आ गया हूँ। मौसी ने मुझे आपके पास भेजा है।"

राक्षस उसके पास तक आया और बोला — "सो तुम हो वह नौजवान माथे पर चाँद वाले और हथेली में सितारे वाले। मैं तुम्हें अभी खा जाता अगर तुमने मुझे मौसा न कहा होता और यह न कहा होता कि मौसी ने तुम्हें यहाँ भेजा है। अब बताओ तुम्हें क्या चाहिये।"

लड़के ने उसको हिरन और राइनोसिरौस दिये तो उसने उन सबको खा लिया। उसके बाद उसने लड़के से फिर पूछा कि उसको उससे क्या चाहिये। लड़के ने कहा कि उसको केतकी के फूल चाहिये।

राक्षस बोला — "तो तुमको केतकी के फूल चाहिये। अच्छा तो तुम कोशिश करके देखो अगर तुम उसको ले सकते हो तो। इस जंगल को पार करने के बाद तुम काचिरी के जंगल में पहुँचोगे जिसमें घुसना भी बहुत मुश्किल है।

वहाँ जा कर तुम कहना — "ओ माँ काचिरी, मेहरबानी करके मुझे रास्ता दो नहीं तो मैं मर जाऊँगा।" यह कहने पर तुम्हारे लिये उस जंगल में एक रास्ता खुल जायेगा।

उस रास्ते पर चले जाना तो तुम समुद्र के किनारे आ जाओगे। वहाँ भी ऐसा ही बोलना "ओ माँ समुद्र, मेहरबानी करके मुझे रास्ता दो नहीं तो मैं मर जाऊँगा।" यह कहने पर समुद्र तुम्हारे लिये एक रास्ता बना देगा।

उस रास्ते से तुम वह समुद्र पार कर जाना। समुद्र पार करके तुम एक बागीचे में आ जाओगे। उसी बागीचे में केतकी के फूल लगे हैं। अच्छा जाओ और जैसा मैंने तुमसे करने के लिये कहा है वैसा ही करना।"

लड़के ने राक्षस मौसा को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दिया। वह जंगल पार करके उसको काचिरी का जंगल मिला। वह जंगल इतना घना था और उसमें इतने सारे काँटे थे कि कोई चूहा भी उसके अन्दर नहीं जा सकता था।

अपने मौसा की सलाह मान कर वह उसके सामने खड़े हो कर हाथ जोड़ कर बोला — "ओ माँ काचिरी, मेहरबानी करके मुझे

रास्ता दो नहीं तो मैं मर जाऊँगा।” उसके यह कहते ही अचानक से उस जंगल में एक रास्ता खुल गया और वह लड़का उसको पार कर गया।

अब वह समुद्र के किनारे आ गया था। उसने समुद से भी यही कहा — “ओ माँ समुद्र, मेहरबानी करके मुझे रास्ता दो नहीं तो मैं मर जाऊँगा।”

यह कहने ही समुद्र दोनों तरफ से दीवार की तरह से ऊपर उठ गया और उनके बीच में उसके लिये एक रास्ता खुल गया और वह समुद्र पार कर गया।

अब उसके सामने केतकी के फूलों का बागीचा था। वह उस बागीचे में घुसा तो एक बहुत बड़े महल में आ गया पर ऐसा लग रहा था कि उस महल में कोई रहता नहीं था। क्योंकि जब वह इधर उधर घूम रहा था तो उसको वहाँ कोई दिखायी ही नहीं दे रहा था।

वह इस कमरे से उस कमरे में घूमता रहा कि तभी एक कमरे में उसको एक बहुत सुन्दर लड़की एक सोने के पलंग पर सोयी हुई मिल गयी।

वह उस लड़की के पलंग के पास तक गया तो उसके पास उसे दो छोटी डंडिया रखी दिखायी दीं। उनमें से एक सोने की थी और एक चाँदी की। चाँदी की डंडी लड़की के पैरों की तरफ रखी थी और सोने की डंडी उसके सिर की तरफ रखी थी।

उसने वे दोनों डंडियॉ अपने हाथ में उठा लीं और उनको देखने लगा कि अचानक सोने की डंडी उसके हाथ से फिसल कर उस लड़की के पैरों पर गिर पड़ी। अगले ही पल वह लड़की जाग गयी और उठ कर बैठी हो गयी।

वह उस लड़के से बोली — "अजनबी तुम यहॉ इस जगह कैसे आ गये। मुझे मालूम है कि तुम कौन हो और मुझे तुम्हारी कहानी भी पता है। तुम वह नौजवान हो जिसको माथे पर चॉद है और हथेली में सितारे हैं।

तुम यहॉ से भाग जाओ। यहॉ सात सौ राक्षस रहते हैं जो केतकी के फूलों की रखवाली करते हैं। इस समय वे शिकार के लिये गये हुए हैं। वे सूरज ढलने पर लौटेंगे। और अगर उन्होंने तुमको यहॉ देख लिया तो वे तुमको खा जायेंगे।

एक राक्षसी मुझे धरती से यहॉ ले आयी थी। वहॉ मेरे पिता राजा हैं। वह राक्षसी मुझे बहुत प्यार करती है और इसी लिये वह मुझे यहॉ से जाने भी नहीं देती।

इन सोने ओर चॉदी की डंडियों की सहायता से सुबह को जब वह यहॉ से जाती है तो मुझे मार जाती है और शाम को जब वापस आती ही तब ज़िन्दा कर लेती है। इसलिये तुम यहॉ से भाग जाओ नहीं तो तुम मारे जाओगे।"

लड़के ने उस लड़की को बताया कि कैसे उसकी बहिन ने उससे प्रार्थना की थी कि वह उसको केतकी का फूल ला कर दे। सो

उनको लाने के लिये कैसे वह काचिरी के जंगल में से गुजरा फिर कैसे समुद्र पार किया। और अब वह यहाँ से अकेला नहीं जायेगा बल्कि उस लड़की को भी साथ ले जायेगा।

बाकी बचा दिन उन्होंने बागीचे में घूम कर बिताया। जैसे जैसे शाम का समय और राक्षसों के आने का समय पास आता जा रहा था तो लड़के ने लड़की को सोने की डंडी को उसके सिर से छुआ कर मार दिया और खुद जा कर केतकी के फूलों के ढेर में छिप कर बैठ गया जो उस लड़की के कमरे के बराबर वाले कमरे में रखा हुआ था।

तभी लड़के ने बहुत सारे पैरों के आने की आवाज सुनी। यह सात सौ राक्षसों के आने की आवाज थी जो अब शिकार से बागीचे में लौट रहे थे। उनमें से एक राक्षसी लड़की के कमरे में घुसा और उसको ज़िन्दा करके बोली — "मुझे यहाँ किसी आदमी की बू आ रही है।"

लड़की बोली — "यहाँ कोई आदमी कैसे आ सकता है माँ? यहाँ आदमी तो केवल मैं ही हूँ।"

राक्षसी नीचे फर्श पर पैर फैला कर लेट गयी और लड़की से कहा कि वह उसकी टाँगें साबुन से अच्छी तरह धो दे। जब वह लड़की उसकी टाँगें साबुन से धो रही थी तो वह रो पड़ी। उसने अपना एक आँसू राक्षसी की टाँग पर गिर जाने दिया।

राक्षसी ने उस आँसू को अपनी टाँग पर महसूस किया और उससे पूछा — "बेटी तू क्यों रोती है क्या बात है? यहाँ तुझे क्या तकलीफ है? क्या यहाँ तुझे कुछ परेशान कर रहा है?"

लड़की बोली — "नहीं माँ। यहाँ मुझे कुछ परेशान नहीं कर रहा। और कोई मुझे परेशान कर भी कैसे सकता है जबकि तुमने मुझे इतने आराम से रखा हुआ है।

मैं तो बस यही सोच रही थी कि अभी तो मेरी देखभाल के लिये तुम हो पर जब तुम नहीं रहोगी तब मेरा क्या होगा। ये राक्षस लोग तो मुझे खा ही जायेंगे।"

राक्षसी बोली — "क्या कहा तूने मैं मर जाऊँगी? क्या मैं मर जाऊँगी? तू ठीक कहती है। सारे जीव मरते हैं पर सुन राक्षस या राक्षसी कभी नहीं मरते।

तुझे मालूम है न कि यहाँ के इस बागीचे में एक गहरा तालाब है। उस तालाब की तली में एक लकड़ी का बक्सा है। उस बक्से में दो मधुमक्खियाँ हैं – एक नर और एक मादा।

यह हमारी किस्मत में लिखा हुआ है कि अगर कोई आदमी जिसके माथे पर चाँद हो और उसके हाथ की हथेली में सितारे हों वह यहाँ आ जाये, वह उस तालाब में डुबकी लगाये और उस लकड़ी के बक्से को अपने हाथों में उठा कर उसे दबा कर उन दोनों मधुमक्खियों को इस तरह मार दे कि उनका खून जमीन पर न गिरे तभी हम सब मर पायेंगे।

पर इस बात को पूरा करना मुझे लगता कि नामुमकिन सा है। क्योंकि पहली बात तो यह है कि ऐसा कोई आदमी ही नहीं है जिसके माथे पर चाँद हो और उसकी हथेली में सितारे हों।

दूसरी बात अगर ऐसा कोई आदमी है भी तो उसका तो यहाँ आना ही मुमकिन नहीं है क्योंकि सात सौ राक्षस इस जगह की रखवाली करते हैं। इसके अलावा यह जगह चारों तरफ समुद्र से घिरी हुई है और काचिरी का घना जंगल समुद्र और धरती के बीच में है।

और उन जगहों को तो छोड़ ही दो जो इस जगह की सुरक्षा के लिये काचिरी के जंगल के उस पार हैं।

अगर वह यहाँ तक किसी तरह आ भी जाता है तो उसको उस लकड़ी के बक्से का भेद पता नहीं चल सकता। और अगर उसको उस लकड़ी के बक्से का भेद पता चल भी गया तो वह उन मधुमक्खियों को इस तरह से मारने में कामयाब नहीं होगा कि उनका खून जमीन पर न गिरे।

और अगर उनका खून जमीन पर गिर गया तो हम उस आदमी को सात सौ टुकड़ों में काट देंगे।

सो तू यह जान लो कि हम सचमुच में तो नहीं पर हाँ करीब करीब अमर हैं। इसलिये मेरी मौत का डर तू अपने मन से बिल्कुल निकाल दे।”

अगली सुबह राक्षसी उठी सोने की डंडी से उस लड़की को मारा और दूसरे राक्षसों और राक्षसियों के साथ खाना ढूँढने के लिये जंगल चली गयी।

माथे पर चाँद वाला और हथेलियों में सितारे वाला लड़का केतकी के फूलों के ढेर में से बाहर निकला और लड़की को ज़िन्दा किया। लड़की ने उसको वे सब बातें बता दीं जो पिछली रात उसकी उस राक्षसी से हुई थीं।

उसकी बात सुनते ही वह लड़का तुरन्त ही अपने काम में लग गया। सबसे पहले तो उसने बागीचे के भारी भारी दरवाजे बन्द किये। फिर वह तालाब में कूद गया और उसमें से लकड़ी का बक्सा निकाल लाया।

बाहर आ कर उसने वह बक्सा खोला और नर और मादा दोनों मधुमक्खियों को कस कर पकड़ लिया क्योंकि वे बाहर भागने वाली थीं। फिर उसने उनको अपनी हथेली पर कुचल दिया और उनके खून की हर बूँद अपने शरीर पर मल ली।

जैसे ही उसने यह सब किया बागीचे के पास बहुत ज़ोर ज़ोर की चिल्लाहटों की आवाजें सुनायी पड़ने लगीं। अपनी किस्मत से सारे राक्षस वहीं बागीचे के पास आ गये थे और मधुमक्खियों के कुचलते ही मर कर गिर गये थे।

लड़के ने केतकी के जितने फूल वह ले सकता था उतने फूल और उसके बीज लिये और उस लड़की के साथ वह महल छोड़ दिया। महल के चारों तरफ राक्षसों की बहुत सारी लाशें पड़ी थीं।

पहले की तरह से लड़के को समुद्र ने भी रास्ता दे दिया और काचिरी के जंगल ने भी रास्ता दे दिया। लड़का और महल वाली लड़की दोनों जल्दी ही बाजार में अपने घर पहुँच गये। वहाँ लड़के की बहिन ने उन दोनों का घर में स्वागत किया।

अगले दिन लड़का रोज की तरह से शिकार पर गया। राजा वहाँ पहले से ही मौजूद था। तभी एक हिरन वहाँ से गुजरा तो लड़के ने उसको तीर मारा।

तीर मारते समय उसको झटका लगा तो उसके सिर से उसकी पगड़ी नीचे गिर पड़ी और चमकीली रोशनी उसमें से दिखायी पड़ने लगी।

राजा ने उसे देखा तो आश्चर्य में पड़ गया। उसने लड़के को रुक जाने के लिये कहा क्योंकि वह उससे दोस्ती करना चाहता था।

लड़के ने राजा से अपने घर आने के लिये कहा और उसको अपने घर का पता दिया। तो राजा दोपहर में उसके घर गया। पुष्पवती ने, यह उस लड़की का नाम था जिसको यह लड़का समुद्र पार से लाया था, तब राजा को सारी कहानी बतायी क्योंकि उसको तो सब कुछ मालूम था।

उसने राजा को बताया कि किस तरह से उसकी छहों रानियों ने उसकी सातवीं रानी को समय से पहले दो बार घंटी बजाने पर मजबूर किया। फिर कैसे सातवीं रानी ने जुड़वॉ बच्चों को जन्म दिया – एक लड़का जिसके माथे पर चॉद था और हथेली में सितारे थे और एक लड़की जो बहुत सुन्दर थी।

फिर कैसे उन बच्चों की जगह उन्होंने दो पिल्ले रखवा दिये। कैसे वे दोनों बच्चे कुम्हार के घर में बच गये। कैसे बाजार वालों ने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया और फिर कैसे वह लड़का उसको राक्षसों के हाथों से बचा कर लाया।

राजा अपनी छहों रानियों से बहुत ज़्यादा गुस्सा था। सो अगले दिन उसने उन सबको ज़िन्दा ही जमीन में गड़वा दिया। सातवीं रानी को बाजार से महल लाया गया और उसको फिर से रानी का दरजा दिया गया।

उसके बाद राजा सातवीं रानी राजकुमार राजकुमारी और पुष्पावती सभी खुशी खुशी रहे।

4 राजकुमार शेरदिल और उसके तीन दोस्त[27]

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा और रानी रहते थे और वे हमेशा खुश रहते थे सिवाय इसके कि उनको केवल एक दुख था। उनके कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन एक फकीर या कोई भक्त उनके महल में आया। उसने रानी से मिलने की इच्छा प्रगट की। रानी बाहर आयी तो उसने कुछ जौ की बाल[28] उसको दीं और उससे कहा कि वह रोये नहीं। उनको खा ले तो उसके एक सुन्दर सा बेटा पैदा हो जायेगा।

रानी ने वे जौ की बालें खा लीं। नौ महीने बाद यकीनन उसके एक बहुत सुन्दर छोटा सा बेटा हो गया। उसका नाम उन्होंने शेरदिल[29] रख दिया क्योंकि वह बहुत बहादुर और ताकतवर था।

जब वह आदमी जितना बड़ा हो गया तो वह कुछ बेचैन सा हो गया। वह हमेशा अपने पिता से दुनियाँ घूमने की इजाज़त माँगता

---

[27] Prince Lionheart and His Three Friends (Tale No 5) – A folktale from Punjab, India, Asia. Adapted from the Web Site : http://digital.library.upenn.edu/women/steel/punjab/punjab-1.html Taken from the book "Tales of the Punjab" By Flora Annie Steel. London: Macmillan & Co. 1894

[28] Translated for the word "Barley corns" – see its picture above.

[29] Translated for the word "Lionheart"

रहता। तब राजा अपना सिर ना में हिलाता और कहता कि अकेले बेटों को इस तरह से इधर उधर घूमने नहीं दिया जा सकता।

पर जब राजकुमार ने बहुत जिद की तो वह फिर कुछ और न सोच सका और राजकुमार को दुनियाँ घूमने की इजाज़त दे दी। राजकुमार इजाज़त पा कर बहुत खुश हुआ और जल्दी ही अपनी यात्रा की तैयारी में लग गया। उसने केवल अपने तीन साथियों को अपने साथ लिया – एक धार रखने वाला[30], एक लोहार और एक बढ़ई।

जब ये चारों कुछ दूर चल लिये तो एक बड़े शानदार शहर में आ पहुँचे। पर वहाँ रहता कोई नहीं था वहाँ बिल्कुल जंगल सा पड़ा हुआ था। जब वे उसमें से गुजर रहे थे तो उन्होंने वहाँ बहुत ऊँचे ऊँचे मकान देखे चौड़े चौड़े बाजार देखे खाने की चीज़ों से भरी दूकानें देखीं।

ये सब चीज़ें यह बताती थीं कि वह कोई बहुत ही शानदार खुशहाल और अमीर लोगों का शहर रहा होगा। पर वहाँ उणको किसी भी मकान में किसी भी दूकान में किसी भी सड़क पर कोई आदमी नजर नहीं आया।

यह देख कर उनको बड़ा आश्वर्य हुआ। तभी धार रखने वाले ने अपना हाथ अपने माथे पर मारते हुए कहा — "अब मुझे याद आया। यह शहर वह होगा जिसके बारे में मैंने सुना था कि यहाँ

[30] Translated for the word "Knifegrinder" – people who sharpen the knives, scissors etc

एक राक्षस रहता है जो किसी को भी शान्ति से नहीं रहने देता। हमको यहाँ से तुरन्त ही भाग जाना चाहिये।”

राजकुमार शेरदिल ज़ोर से बोला — “नहीं नहीं कभी नहीं। मैं यहाँ से किसी भी हालत में नहीं जाऊँगा जब तक मैं यहाँ खाना न खा लूँ क्योंकि मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है।”

सो चारों दूकानों की तरफ चल दिये और दूकानों की तरफ देखने लगे। वहाँ से उन्होंने जो उनको चाहिये था वह खरीदा। जिस चीज़ की जितनी कीमत लिखी थी उतनी कीमत उन्होंने दूकान पर रखी जैसे कि अगर वहाँ पर दूकानदार होता तो वह उनसे लेता।

फिर वे महल की तरफ चल दिये जो शहर के बीच में बना हुआ था। राजकुमार शेरदिल ने धार रखने वाले को खाना बनाने के लिये कहा और बाकी के तीनों फिर से शहर देखने चले गये।

उनके जाने के बाद वह धार रखने वाला खाना बनाने के लिये रसोईघर की तरफ चला गया। उसके खाना बनाने से नमकीन खुशबू हवा में तैर गयी। धार रखने वाले को यह सोच कर ही अच्छा लग रहा था कि जब उस खाने की खुशबू इतनी अच्छी है तो उसका बनाया हुआ खाना कितना स्वादिष्ट होगा।

वह अपने खाने की खुशबू का आनन्द ले ही रहा था कि उसको अपने पास जिरहबख्तर[31] में लिपटी एक शक्ल खड़ी दिखायी दी। उसके एक हाथ में तलवार थी और दूसरे हाथ में भाला था। वह एक सजे धजे चूहे पर सवार था।

वह छोटा सा बौना अपने भाले को इधर उधर हिलाता हुआ बोला — "लाओ मेरा खाना दो।"

धार रखने वाला बोला — "खाना? कैसा खाना? क्या तुम मजाक कर रहे हो?"

वह छोटा योद्धा गुस्से से चिल्लाया — "मुझे जल्दी से खाना दो वरना मैं तुम्हें पास के पीपल के पेड़ पर टाँग दूँगा।"

धार रखने वाला फिर बोला — "अरे वाह रे मेरे छोटे से योद्धा। ज़रा मेरे और पास तो आओ तो मैं तुम्हें अपनी उँगली और अँगूठे के बीच रख कर तुम्हारा चूरा कर देता हूँ।"

यह सुनते ही वह छोटा सा राक्षस बहुत तेज़ी से बढ़ कर एक बहुत ही भयानक रूप से लम्बा राक्षस बन गया। यह देख कर धार रखने वाले की हिम्मत तो जाती रही और वह बहुत डर गया। वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और उससे दया की भीख माँगने लगा।

लेकिन उसकी चीखों का उस राक्षस के ऊपर कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि उसने एक पल में ही उसको पीपल के पेड़ की सबसे

[31] Translated for the word "Armor" – it is made of iron and is normally worn in war to protect the body.

ऊँची शाख पर लटका दिया था। राक्षस चिल्लाया "मैं सिखाता हूँ इनको अपनी रसोईघर में खाना बनाना।" और वह वहॉ रखी रोटी और दाल खाने लगा। जब उसने वहॉ रखा सारा खाना खा लिया तो वह वहॉ से गायब हो गया।

इधर धार रखने वाला उस पेड़ की शाख से छूटने के लिये बहुत कोशिश करता रहा तो उस पेड़ की तो वह शाख ही टूट गयी जिस पर वह लटका हुआ था और वह पेड़ की दूसरी शाखाओं से टकराता हुआ नीचे जमीन पर गिर पड़ा। उसको चोट तो कुछ ज़्यादा नहीं आयी केवल थोड़ा सा जख्मी ही हुआ था पर वह डर बहुत गया था।

खैर वह इतना डर गया था कि वह वहॉ से तुरन्त ही भागा और भागा भागा सोने के कमरे में गया और रजाई में दुबक कर लेट गया। वह पूरा का पूरा सिर से पैर तक कॉप रहा था जैसे उसको मलेरिया चढ़ गया हो।

धीरे धीरे राजकुमार और उसके साथी आने लगे और वे इतने ही भूखे थे जैसे शिकारी होते हैं। आ कर उन्होंने आवाज लगायी — "अरे भाई हमारा खाना कहॉ है।"

आवाज सुन कर धार रखने वाला रजाई में से ही कॉपते कॉपते बोला — "मेहरबानी करके गुस्सा न हो क्योंकि इसमें किसी की भी गलती नहीं है। क्योंकि जैसे ही मैं खाना बना कर चुका तो मुझे

मलेरिया से कॉपने लगा। मैं यहॉ आ कर लेटा तो एक कुत्ता आया और वह सारा खाना खा कर चला गया।”

असल में उसको डर था कि अगर उसने सच बोला तो उसके दोस्त उसे राक्षस से न लड़ पाने के लिये डरपोक समझेंगे।

राजकुमार बोला — “कितनी बुरी बात है। पर तब हमको खाने के लिये कुछ और बनाना चाहिये। अच्छा तो लोहार अबकी बार तुम खाना बनाओगे। तब तक मैं और बढ़ई फिर से शहर देखने के लिये जाते हैं।” जैसे ही वे गये बढ़ई खाना बनाने बैठ गया।

जब उसका खाना बन गया और उसकी सौंधी सौंधी खुशबू हवा में उड़ी तो बढ़ई को भी लगा कि उसका बना खाना कितना स्वादिष्ट होगा कि तभी वह छोटा योद्धा उसके सामने आ कर खड़ा हो गया। वह भी धार रखने वाले की तरह से पहले तो बहादुर बना रहा फिर जल्दी ही डर गया और उससे उसे छोड़ देने की माफी मॉगने लगा।

असल में उसके साथ भी वैसा ही हुआ जैसा कि धार रखने वाले के साथ हुआ था। उसको भी राक्षस ने पीपल के पेड़ से टॉग दिया और वह भी जब पेड़ से नीचे गिर गया तो वह भी सोने वाले कमरे की तरफ भागा और रजाई ओढ़ कर उसमें कॉपने लगा।

सो जब राजकुमार शेरदिल और बढ़ई घूम कर लौट कर आये तो शिकारियों की तरह से भूखे थे पर उनके लिये अभी भी खाना नहीं था।

इस बार बढ़ई खाना बनाने के लिये रुक गया और केवल राजकुमार शेरदिल अकेला ही घूमने चला गया। पर उसके साथ भी वही हुआ जो पहले दो आदमियों के साथ हुआ था।

जब राजकुमार शेरदिल घूम कर आया तो तीन लोग बिस्तर में पड़े पड़े कॉप रहे थे और किसी के लिये खाना नहीं था। सो राजकुमार बेचारा खाना खुद ही बनाने बैठा।

जैसे ही उसका खाना बन कर तैयार होने लगा उसके खाने की भी सौंधी सौंधी खुशबू उड़ने लगी। बस तभी वह छोटा योद्धा अपने चूहे पर सवार हो कर वहॉ प्रगट हो गया – भयानक भी और शानदार भी।

राजकुमार उसको देख कर बोला — "अरे तुम तो बहुत ही प्यारे छोटे से साथी हो। बताओ तुम्हें क्या चाहिये।"

वह बोला — "मुझे मेरा खाना दो।"

राजकुमार हॅस कर बोला — "पर यह खाना तुम्हारा नहीं है यह खाना तो मेरा है। पर झगड़ा मिटाने के लिये हम दोनों आपस में लड़ लें। जो जीतेगा वही इस खाने का मालिक होगा।"

यह सुन कर चूहे वाले योद्धा ने अपना शरीर बढ़ाना शुरू किया और इतना बढ़ाया कि वह भयानक रूप से लम्बा हो गया। पर बजाय अपने घुटनों पर बैठ कर उससे दया की भीख मॉगने के राजकुमार तो बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "मेरे अच्छे जनाब। हर किसी की एक बीच की चीज़ होती है।

जैसे अभी आप बहुत छोटे थे और अभी आप इतने लम्बे हो गये पर जैसा कि मैंने देखा कि आप बिना किसी परेशानी के अपना साइज़ बदल सकते हैं। पर अगर एक बार आप मेरे जितने बड़े साइज़ के हो जायें – न बड़े और न छोटे, तब इस खाने के बारे में यह फैसला हो सकता है कि यह किसका है।"

राक्षस की समझ में राजकुमार की बात कुछ समझ में नहीं आयी फिर भी वह छोटा हो कर उसके बराबर के साइज़ का हो गया। उसने राजकुमार को मारने के लिये की राजकुमार की ओर झुकना शुरू किया पर शानदार राजकुमार अपनी जगह से एक इंच भी नहीं हिला।

पर आखिर काफी लड़ाई के बाद उसने अपनी तेज़ धार वाली तलवार से उस राक्षस को मार डाला। तब सच को भॉपते हुए उसने अपने तीनों दोस्तों को उठाया और मुस्कुरा कर कहा — "ओ मेरे दोस्तों उठो मैंने तुम्हारे मलेरिया को मार डाला है।"

वे लोग डरने का बहाना बनाते हुए उठे और उसकी बहादुरी की बड़ाई करते हुए उसके पैरों पर गिर पड़े।

इसके बाद राजकुमार शेरदिल ने शहर के सारे लोगों को जिनको नीच राक्षस ने शहर के बाहर भेज दिया था यह सन्देश भेज दिया कि वे अब सुरक्षित रूप से अपने अपने घरों को वापस लौट सकते थे और आराम से रह सकते थे।

उसकी बस यही एक शर्त थी कि उनको धार रखने वाले को अपना राजा मानना पड़ेगा और उसको अपनी सबसे अमीर और सुन्दर बेटी देनी होगी।

यह उन्होंने बड़ी खुशी से किया पर जब शादी हो गयी तो राजकुमार शेरदिल फिर एक बार अपनी साहसिक यात्रा पर निकल पड़ा। धार रखने वाला अपने मालिक के पैरों पर गिर पड़ा और उससे प्रार्थना की कि वह उसे भी अपने साथ ले चले।

राजकुमार ने उसकी प्रार्थना को नहीं माना। उसने कहा कि वह वहीं रह कर अपने राज्य को देखे भाले और राज करे। उसने उसको जौ का एक पौधा दिया और उससे उसको बोने और उसकी ठीक से देखभाल करने के लिये कहा।

उसने कहा कि जब तक यह जौ का पौधा ज़िन्दा और हरा भरा है उसका मालिक भी तन्दुरुस्त और खुश है। अगर वह मुरझा जाये तो वह समझे कि राजकुमार के ऊपर कोई मुसीबत आ पड़ी है और अगर वह चाहे तो उसकी सहायता के लिये आ सकता है।

सो धार रखने वाला तो उसी शहर में रह गया और राजकुमार अपने दूसरे साथियों लोहार और बढ़ई के साथ अपनी यात्रा पर चल दिया।

चलते चलते वे एक और वीरान शहर में आ गये जे बिल्कुल जंगल जैसा पड़ा था। और जैसे पहले की तरह से वे उसमें घूम रहे

थे उसमें उनको ऊँचे ऊँचे मकान खाली सड़कें खाली दूकानें दिखायी दीं जिनमें कोई आदमी नहीं था।

लोहार को अचानक कुछ याद आया तो उसने कहा — "अच्छा तो लगता है कि यह वह शहर है जिसमें एक भूत रहता है जो हर एक को मार देता है। हमको यहाँ से चले जाना चाहिये।"

पर राजकुमार शेरदिल को तो भूख लगी थी सो वह बोला हम यहाँ से खाना खाने के बाद ही जायेंगे। सो पहले की तरह से उन्होंने बाजार से खाने का सामान खरीदा दूकान पर उनकी कीमत रखी और वे वहाँ के महल पहुँचे। वहाँ पहुँच कर लोहार को खाना बनाने का काम सौंप कर राजकुमार और बढ़ई दोनों शहर घूमने चले गये।

जैसे ही खाने की सौंधी सौंधी खुशबू उड़ी तो वह भूत एक बुढ़िया का रूप रख कर वहाँ आया। उसको देखने से ही उसको डर लग रहा था। उसकी काली खाल झुर्रियों से भरी हुई थी और उसके पैर उलटे थे।

यह देख कर तो लेहार डर के मारे जम सा गया फिर भी वह वहाँ एक पल भी नहीं ठहर सका और दूसरे कमरे में भाग गया और जा कर दरवाजा बन्द कर लिया। यह देख कर भूत ने वह सारा खाना खुद खाया और गायब हो गया।

जब राजकुमार शेरदिल और बढ़ई शिकारियों की तरह से भूखे घर वापस लौटे तो न तो वहाँ पर खाना था और न ही लोहार। सो

इस बार राजकुमार ने बढ़ई को खाना बनाने का काम सौंपा और खुद शहर घूमने चला गया।

पर बढ़ई का भी समय कुछ अच्छा नहीं गुजरा। भूत उसके सामने भी आया और उसको देख कर वह भी एक दूसरे कमरे में जा कर घुस गया और अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। सो जब राजकुमार शहर से लौटा तो न वहाँ पर खाना था और न बढ़ई।

राजकुमार बोला — "यह तो बड़ी खराब बात है।" सो उसने अपने लिये खाना खुद ही बनाना शुरू कर दिया। जैसे ही उसके खाने की सौंधी सौंधी खुशबू उड़नी शुरू हुई तो भूत एक सुन्दर नौजवान को देख कर एक बुढ़िया के रूप में नहीं बल्कि एक सुन्दर लड़की का रूप रख कर वहाँ आ पहुँचा।

पर राजकुमार उसके धोखे में नहीं आया क्योंकि उसने उसके पैर पहले ही देख लिये थे कि वे उलटे थे। उसको तुरन्त ही पता चल गया कि वह कौन थी। सो उसने तुरन्त ही अपनी तेज़ तलवार निकाल कर उससे कहा — "तुम अब अपनी असली शक्ल में आ जाओ। मुझे सुन्दर लड़कियों का मारने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।"

यह सुन कर भूत गुस्से से चीख कर अपनी असली शक्ल में आ गया। पर उसी समय राजकुमार ने अपनी तलवार एक वार से ही उसे मार डाला।

उसके बाद लोहार और बढ़ई अपने अपने कमरों में बाहर निकल आये और राजकुमार ने वहाँ के रहने वालों को यह सन्देश भेज दिया कि भूत मारा जा चुका है और अब वे बेहिचक अपने अपने घरों को लौट सकते हैं और सुरक्षित रह सकते हैं।

ऐसा वे इस शर्त पर कर सकते हैं कि वे लोहार को अपना राजा मानें और अपनी सबसे अमीर और सुन्दर लड़की की शादी उससे कर दें। यह उन्होंने खुशी से मान लिया।

यहाँ भी शादी होने के बाद राजकुमार ने लोहार को वहाँ का राज्य दे कर बढ़ई के साथ आगे जाने का प्लान बनाया। लोहार भी उनको आगे अकेले जाने देना नहीं चाहता था पर उसके मालिक ने उसको भी एक जौ का एक पौधा दिया और कहा कि वह उसे बो दे और उसकी ठीक से देखभाल करे।

अगर वह हरा भरा रहेगा तो वह समझे कि राजकुमार भी तन्दुरुस्त और खुश है और अगर वह मुरझाया तो समझे कि राजकुमार पर कोई मुसीबत आयी है। फिर अगर वह चाहे तो उसकी सहायता के लिये आ सकता है।

राजकुमार और बढ़ई कुछ दूर ही आगे चले थे कि वे एक बहुत बड़े शहर में आ गये। वहाँ वे आराम करने के लिये रुक गये। अब किस्मत कुछ ऐसी थी कि बढ़ई वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की के प्रेम में पड़ गया। वह लड़की चाँद सितारों की तरह सुन्दर थी।

वह उसको देख कर लम्बी लम्बी साँसें लेने लगा और धार रखने वाले और लोहार की किस्मत से जलने लगा। उसकी भी इच्छा होने लगी कि उसकी भी शादी हो जाये और उसको भी एक राज्य राज करने को मिल जाये।

राजकुमार को उस पर दया आ गयी। उसने उस शहर के कुछ बड़े लोगों को बुलाया और बताया कि वह कौन था और उनको हुकुम दिया कि वे बढ़ई को अपना राजा मान लें और उसकी पसन्द की लड़की से शादी कर दें।

राजकुमार दूसरे देशों में भी मशहूर था और वे उसको नाखुश करने से भी डरते थे सो उसकी बात मान ली गयी। इस तरह बढ़ई की भी शादी हो गयी और वह वहाँ का राजा बन कर रहने लगा। बढ़ई की शादी हो जाने के बाद अब राजकुमार अकेला रह गया।

उसने बढ़ई को भी उसने जौ का एक पौधा दिया और उसकी ठीक से देखभाल करने के लिये कहा। और यह कह कर कि वह उसके सुख दुख का पता देगा वह आगे अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

काफी दिनों तक चलने के बाद वह एक नदी के पास आया। वह उस नदी के किनारे आराम करने के लिये बैठ गया। वह ऐसे

ही नदी की तरफ देख रहा था कि उसने एक बहुत बड़ा लाल[32] नदी में बहते जाते देखा जिसको देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ।

[32] Translated for the word "Ruby" – see its picture above. It is one of the nine precious gems.

और वहाँ वह केवल एक ही लाल नहीं था। उनकी तो लाइन लगी हुई थी क्योंकि इसने देखा कि फिर दूसरा लाल आया फिर तीसरा लाल आया। हर लाल का साइज़ बहुत बड़ा था और वह बहुत चमक रहा था। उसने सोचा कि वह इस बात का पता लगा कर रहेगा कि वे लाल कहाँ से आ रहे थे।

यह सोच कर वह नदी की ऊपर की तरफ चल दिया। उन लालों को नदी की धारा के साथ बहते हुए देखता हुआ वह दो दिन और दो रात चलता रहा। आखिर वह नदी के किनारे बने एक बहुत ही शानदार महल के पास आ पहुँचा।

वह महल चमकीले बागीचों से घिरा हुआ था। उस महल से संगमरमर की बनी सीढ़ियाँ नदी तक जा रही थीं। वहीं उसके पास एक बहुत बड़ा पेड़ खड़ा था जिसकी शाखें पानी के ऊपर तक जा रही थीं। उनमें से एक शाख पर एक सोने की टोकरी लटक रही थी।

राजकुमार तो पहले से ही बहुत आश्चर्यचकित था और यह देख कर तो और भी ज़्यादा आशचर्यचकित हो गया कि उस सोने की टोकरी में एक बहुत ही सुन्दर बहुत ही प्यारी लड़की का सिर रखा हुआ था जो बिल्कुल किसी राजकुमारी का सिर लग रहा था।

उस सिर की आँखें बन्द थीं। उसके सुनहरे बाल ठंडी ठंडी हवा में इधर उधर उड़ रहे थे और उसके पतली लम्बी गरदन से हर मिनट खून की एक बूँद पानी में गिर रही थी जो पानी में पड़ते ही

एक लाल बन जाती थी। वे ही लाल उस नदी में बहते चले जा रहे थे।

राजकुमार शेरदिल को यह दृश्य देख कर दया आ गयी। उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। उसने इस भेद का कुछ अता पता पाने के लिये महल के अन्दर जाने का विचार किया।

वह महल के अन्दर चला गया और जा कर उसके संगमरमर के बने हुए कमरों में घूमने लगा। वे कमरे बहुत ज़्यादा अच्छी तरह से सजे हुए थे। वह खुदायी का काम की गयी गैलरियों में गया वह बड़े बड़े चौड़े बरामदों में घूमा पर वहॉ उसको कोई ज़िन्दा जीव दिखायी नहीं दिया।

फिर वह एक सोने वाले कमरे में आया जहॉ उसने एक सफेद साटन के बिस्तर पर एक लड़की का बिना सिर वाला शरीर देखा जो चॉदी के तारों से लटका हुआ था। उस पर एक नजर डालते ही उसको विश्वास हो गया कि यह शरीर उसी लड़की का था जिसका कटा सिर उसने बाहर नदी के किनारे सोने की टोकरी में झूलता रखा देखा था। यह देखते ही उसके मन में इच्छा जागी कि वह इन दोनों को मिला कर देखे।

वह तुरन्त ही बाहर नदी की तरफ दौड़ पड़ा। वहॉ से वह वह सोने की टोकरी ले कर अन्दर आया और उसमें से कटा हुआ सिर निकाल कर धीरे से उस शरीर पर लगा दिया। लो वह तो उससे जुड़ गया और धीरे धीरे उसमें जान पड़ने लगी।

यह देख कर राजकुमार की ख़ुशी की तो कोई हद ही नहीं रही वह तुरन्त उससे बोला कि वह उसको यह बताये कि वह कौन है और इस अकेली जगह में अकेली कहाँ से और कैसे आयी है।

राजकुमारी ने बताया कि वह एक राजा की बेटी है जिसको एक जिन्न प्यार करने लगा था। अपने इस प्यार के जुनून में वह उसको उठा कर यहाँ इस जादुई जगह ले आया था।

यहाँ भी वह उससे इतना जलता था कि वह अपने जादू से उसका गला काटे बिना और उसको सोने की टोकरी में रख कर बाहर पेड़ से लटकाये बिना महल से बाहर भी नहीं जाता था। और वह इस हालत में तब तक रहती थी जब तक वह शाम को घर वापस आता था तभी वह आ कर वह उसको ज़िन्दा करता था।

राजकुमार शेरदिल ने उसकी जब यह दर्दनाक कहानी सुनी तो उसने राजकुमारी से कहा कि वह उसके साथ तुरन्त भाग चले। पर राजकुमारी ने उसे बताया कि पहले उसे जिन्न को मारना ही पड़ेगा नहीं तो वे लोग वहाँ से भागने में कामयाब नहीं हो पायेंगे।

राजकुमारी ने उससे वायदा किया कि वह उसकी ज़िन्दगी का भेद जानने की कोशिश करेगी कि उसकी आत्मा कहाँ रहती है और वे लोग उसे कैसे मार पायेंगे। इस बीच राजकुमार को उसका सिर फिर से काट कर वैसे ही रख देना चाहिये जैसा कि वह छोड़ कर गया था ताकि उसके बेदर्द मालिक को कोई शक न हो।

हालाँकि राजकुमार बेचारे को यह बेदर्द काम करने में बहुत तकलीफ हुई पर उसको यह काम करना तो था ही सो उसने अपनी आँखें बन्द करके उसकी गरदन काट कर उसके सिर को एक बार फिर सोने की टोकरी में रखा और वापस वहीं उसी पेड़ पर ले जा कर टाँग दिया। खुद वह उसके सोने के कमरे की एक पास वाली आलमारी में जा कर छिप गया।

शाम को जिन्न जब वापस आया तो उसने सोने की टोकरी में रखा सिर निकाला और उसको राजकुमारी के कटे शरीर पर चिपका दिया। राजकुमारी ज़िन्दा हो गयी। लेकिन तुरन्त ही वह इधर उधर कुछ सूँघते हुए बोला — "अरे यह आदमी की खुशबू कहाँ से आ रही है।"

यह सुन कर राजकुमारी ने बनावटी रोना शुरू कर दिया और बोली — "ओ भले जिन्न। तुम मुझसे गुस्सा न हो। मुझे किसी भी बात का पता कैसे हो सकता है। जब तुम बाहर जाते हो तो क्या तुम मुझे मार कर नहीं जाते? तुम अगर मुझे खाना चाहते हो तो खा सकते हो पर तुम मुझसे गुस्सा न हो।"

यह सुन कर जिन्न जो उसको बहुत प्यार करता था बोला कि वह उसको मारने की बजाय खुद मर जाना ज़्यादा पसन्द करेगा। राजकुमारी बोली — "यह तो मेरे लिये और भी खराब बात है। क्योंकि जब तुम बाहर चले जाते हो तो अगर तुम वहाँ मर गये तो

यह तो मेरे लिये बहुत ही बुरा होगा। क्योंकि उस समय न तो मैं मरे हुओं लोगों में गिनी जाऊँगी और न ज़िन्दा लोगों में।"

जिन्न बोला — "तुम इतना परेशान न हो। मेरे मरने का कोई मौका नहीं है क्योंकि मुझे कोई नहीं मार सकता। मेरी आत्मा एक बड़ी सुरक्षित जगह रखी है।"

राजकुमारी बोली — "मुझे यकीन है कि ऐसा ही होगा पर मैं तुम्हारा विश्वास तभी करूँगी जब तुम मुझे यह बताओगे कि वह कहाँ है। जब तक तुम मुझे बताओगे नहीं मुझे सन्तोष नहीं मिल सकता क्योंकि तभी मैं यह जान पाऊँगी कि वह सुरक्षित है या नहीं।"

पहले तो जिन्न ने बताने से मना कर दिया पर राजकुमारी ने उसे यह बात बताने के लिये इतने सुन्दर तरीके से मजबूर किया कि उसको नींद आने लगी। और नींद में ही वह बोला — "मुझे केवल एक राजकुमार ही मार सकता है जिसका नाम राजकुमार शेरदिल है।

और वह भी मुझे ऐसे ही नहीं मार सकता जब तक कि उसको एक अकेला पेड़ न मिल जाये जिस पर एक कुत्ता और एक घोड़ा दिन रात पहरा न देते हों।

इसके बाद भी वह उन्हें बिना कोई नुकसान पहुँचाये उस पेड़ तक आये और ऊपर चढ़ कर एक मैना[33] के पेट को फाड़ कर जो वहाँ गाती हुई एक पिंजरे में बन्द बैठी है और वह पिंजरा उस पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर है उसमें रह रहे एक भौंरे को न मारे।

इसलिये मैं सुरक्षित हूँ क्योंकि यह सब करने के लिये यानी पेड़ तक पहुँचने के लिये फिर जानवरों को बिना कोई नुकसान पहुँचाये हुए पेड़ पर चढ़ने के लिये फिर उस मैना तक पहुँचने के लिये और फिर मैना के पेट से भौंरा निकाल कर मारने के लिये शेर का दिल चाहिये या फिर बहुत अक्लमन्दी चाहिये।"

राजकुमारी बोली — "और उन दोनों जानवरों पर कैसे काबू पाया जा सकता है। तुम मुझे यह और बता दो फिर मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगी।"

जिन्न अब तक आधा सो रहा था और राजकुमारी के सवाल पूछने की वजह से बहुत थका हुआ था सोते सोते बोला — "घोड़े के सामने हड्डियों का एक ढेर पड़ा है और कुत्ते के सामने घास का एक ढेर। बस उनको आपस में बदलना है।

हड्डियों के ढेर को कुत्ते के सामने रखना है और घास के ढेर को घोड़े के सामने। जो कोई कोई लम्बा डंडा ले कर यह काम कर

[33] Translated for the word "Starling" – see its picture above.

देगा वही उन्हें जीत पायेगा और वही पेड़ के पास पहुँच जायेगा क्योंकि तब दोनों के सामने अपना अपना खाना होगा – घोड़े के सामने घास होगी और कुत्ते के सामने हड्डियाँ।”

जैसे ही राजकुमार ने यह सब सुना वह तुरन्त ही उस अकेले पेड़ की खोज में चल दिया। उसने उसे जल्दी ही ढूँढ भी लिया। उाने देखा कि उसके आगे एक जंगली घोड़ा और एक गुस्सैल कुत्ता उसका पहरा दे रहा था।

जब उसने उनको उनका अपना अपना खाना दे दिया तब वे बहुत ही सीधे हो गये। राजकुमार बिना किसी मुश्किल के पेड़ पर चढ़ गया और मैना को उसके पिंजरे में से निकाल कर उसकी गरदन मरोड़ने लगा।

इसी समय राक्षस की आँख खुल गयी और वह जान गया कि क्या हो रहा था सो वह तुरन्त ही उठा और वहाँ से अपनी जान बचाने के लिये पेड़ की तरफ भागा।

राजकुमार ने भी उसको आते देख लिया तो तुरन्त ही चिड़िया का पेट काट डाला और उसमें से भौंरा निकाल लिया और जैसे ही जिन्न पेड़ पर चढ़ रहा था उसने उसके पंख तोड़ दिये।

जिन्न एक चीख के साथ नीचे गिर पड़ा पर अपने दुश्मन को मारने का इरादा ले कर उसने फिर से पेड़ पर चढ़ना शुरू किया। तब राजकुमार ने उसकी टाँगें मरोड़ दीं जिससे जिन्न की भी टाँगें

टूट गयीं। और जब भौंरे का उसने सिर तोड़ा तब तो जिन्न बिल्कुल ही मर गया।

जिन्न को मार कर राजकुमार जीत की खुशी के साथ राजकुमारी के पास लौटा। राजकुमारी उसकी मौत के ऊपर इस जीत से बहुत खुश हुई।

वह तो वहाँ से राजकुमारी के साथ तुरन्त ही अपने राज्य लौटने वाला था पर राजकुमारी की इस विनती पर कि उसको अब थोड़ा आराम कर लेना चाहिये और महल में रखा खजाना भी देख लेना चाहिये वह वहीं महल में रुक गया।

एक दिन राजकुमारी नदी में नहाने गयी तो वहाँ उसने नदी में अपने सुन्दर सुनहरे बाल धोये और फिर उनमें कंघी की तो उसके एक दो बाल टूट कर उस कंघी में अटक गये – चमकते सोने जैसे। उसको अपने बालों पर बड़ा नाज़ था सो उसने सोचा "मैं अपने बालों को ऐसे ही नदी की गन्दी कीचड़ में नहीं फेंक दूँगी।"

सो उसने पीपल के पत्ते का एक दोना बनाया अपने चमकते हुए सुनहरी बाल उसमें रखे और नदी में बहा दिये।

अब हुआ यह कि वह दोना बहता बहता एक राजा की राजधानी से गुजरा जहाँ वहाँ का राजा अपनी नाव में बैठा पानी का आनन्द ले रहा था। तभी उसने पानी के ऊपर चमकता हुआ कुछ तैरता देखा तो अपने नाविक को उसकी तरफ ले चलने के लिये

कहा। उसने वह पीपल के पत्ते का दोना उठा लिया तो देखा कि उसमें तो कुछ बाल रखे हुए हैं।

उसको लगा कि उसने तो इससे आधी सुन्दरता भी कहीं नहीं देखी। अब जब तक उसको यह पता न चल जाये कि वे बाल किसके हैं उसको दिन रात चैन नहीं था।

सो उसने अपने राज्य की सबसे ज़्यादा अक्लमन्द स्त्रियों को बुलवाया और उनसे यह पता लगाने के लिये कहा कि वह सुनहरे बालों वाली लड़की कहाँ रहती थी।

पहली स्त्री बोली "अगर वह लड़की इस धरती पर कहीं है तो मैं उसको ढूँढ दूँगी।"

दूसरी स्त्री बोली "अगर वह आसमान मैं है तो मैं उसे आसमान फाड़ कर ढूँढ लाऊँगी।"

पर तीसरी स्त्री हँसी और बोली "अगर तू आसमान को फाड़ेगी तो मैं उसमे ऐसा पैबन्द लगा दूँगी कि आसमान फिर से वैसा ही हो जाये जैसा वह था कोई नये पुराने में भेद न बता सकेगा।"

राजा को लगा कि यह तीसरी स्त्री सबसे ज़्यादा अक्लमन्द है सो उसने उसी से कहा कि वह उस सुनहरे बालों वाली लड़की को ढूँढे।

अब क्योंकि बाल नदी में पाये गये थे तो उस स्त्री ने सोचा कि ये बाल जरूर ही किसी ऐसी लड़की के होंगे जो नदी के ऊपर की तरफ कहीं रहती होगी। सो उसने एक सुन्दर शाही नाव ली और नदी के ऊपर की तरफ चल दी।

नाविक नाव खेता रहा खेता रहा जब तक कि वह जिन्न के संगमरमर के जादुई महल के पास नहीं आ गया। वह चालाक स्त्री अकेली ही उस महल की सीढ़ियों तक गयी और वहाँ जा कर रोने बिलखने लगी।

इत्तफाक से उस दिन राजकुमार शिकार पर गया हुआ था। राजकुमारी घर में बिल्कुल अकेली थी। वह बहुत दयालु थी सो जैसे ही उसने किसी स्त्री के रोने की आवाज सुनी तो वह यह देखने के लिये घर में से निकल कर बाहर आयी कि देखूँ बाहर कौन रो रहा है।

उसने उस स्त्री से पूछा — "माँ जी आप क्यों रोती हैं।"

वह अक्लमन्द स्त्री रोते हुए बोली — "बेटी मैं तुम्हारे लिये इसलिये रोती हूँ कि अगर राजकुमार का कहीं कत्ल हो जाये तो तुम क्या करोगी। तुम यहाँ जंगल में अकेली कैसे रहोगी।" क्योंकि वह स्त्री एक जादूगरनी भी थी और राजकुमार के बारे में सब कुछ जानती थी।

राजकुमारी अपने हाथों की मुट्ठियाँ भींचते हुए बोली — "यह तो तुम ठीक कह रही हो। यह तो सचमुच में बहुत बुरा होगा। यह तो मैंने पहले कभी सोचा ही नहीं था।"

वह बेचारी सारा दिन यही सोच सोच कर रोती रही। रात को जब राजकुमार वापस लौट कर आया तो उसने उससे अपना डर

कहा तो वह उनको सुन कर हँस दिया और बोला कि उसकी जिन्दगी सुरक्षित थी ऐसा मुश्किल से होगा कि ऐसा मौका आये।

फिर उसने राजकुमारी को तसल्ली दी और राजकुमारी ने उससे विनती की कि वह उसे बताये कि उसकी ज़िन्दगी सुरक्षित कैसे थी ताकि वह उसको सुरक्षित रखने में उसकी सहायता कर सके।

राजकुमार बोला — "वह मेरी तलवार की तेज़ धार में है जो मुझे कभी धोखा नहीं देती। अगर कोई मुझे न्यायपूर्ण ढंग से मारेगा तो वह कभी सफल नहीं हो सकता सो प्रिय राजकुमारी तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो। अब तुम आराम से सोओ।"

राजकुमारी बोली — "मुझे लगता है जब तुम शिकार पर जाओ तो तुमको अपनी तलवार घर पर छोड़ कर जाना चाहिये।"

और हालाँकि राजकुमार ने उसे बार बार समझाया कि उसको डरने की कोई जरूरत नहीं थी फिर भी उसने तो अपना मन बना ही लिया था कि जैसे वह चाहेगी वह वैसे ही उससे करवायेगी।

सो अगले दिन जब राजकुमार शिकार के लिये जाने लगा तो उसने उसकी अपनी तलवार तो छिपा कर रख दी और उसकी जगह एक दूसरी तलवार रख दी। सो वह तो अव बेवकूफ बन गया था।

इस तरह जब वह अक्लमन्द स्त्री दोबारा वहाँ आयी और संगमरमर की सीढ़ियों पर बैठ कर रोने लगी तो राजकुमारी ने खुश हो कर उसे बुलाया और कहा — "माँ जी अब आप रोइये नहीं।

राजकुमार की ज़िन्दगी अब सुरक्षित है। उनकी आत्मा इस तलवार में है और वह तलवार अब मेरी आलमारी में छिपी रखी है।"

यह सुन कर वह नीच बुढ़िया तब तक इन्तजार करती रही जब तक वह दोपहर को सो नहीं गयी और सब शान्त नहीं हो गया। वह उस आलमारी के पास गयी जिसमें राजकुमार की तलवार रखी थी। उसने वह तलवार निकाली एक बड़ी सी आग जलायी और उसको उस आग से जलते अंगारों में रख दिया।

जैसे जैसे वह तलवार गर्म होती गयी राजकुमार के शरीर में जलन होने लगी। राजकुमार को अपनी तलवार के जादुई गुणों का पता था सो उसने उसको यह देखने के लिये निकाल लिया कि वह काम करती है या नहीं।

पर लो वह तो उसकी तलवार ही नहीं थी। उसको किसी ने बदल कर कोई दूसरी तलवार उसकी जगह रख दी थी। यह देख कर वह ज़ोर से रोते हुए चिल्ला पड़ा "आह मैं तो मर गया मैं तो मर गया।" और तुरन्त ही घर की तरफ भागा।

उधर उस अक्लमन्द स्त्री ने भी वह आग इतनी जल्दी से तेज़ की कि जब तक राजकुमार शेरदिल नदी के इस पार पहुँचता तलवार बहुत जल्दी ही गर्म हो कर लाल हो गयी। जैसे ही वह नदी के दूसरी तरफ पहुँचा कि तलवार की मूठ का एक पेच निकल कर लुढ़क गया और वैसे ही राजकुमार का सिर भी लुढ़क गया।

तब वह अक्लमन्द स्त्री राजकुमारी के पास गयी और बोली — बेटी सोने के बाद तुम्हारे ये इतने सुन्दर बाल कितने उलझ गये हैं। चलो मैं राजकुमार के आने से पहले इनको धो कर सँवार देती हूँ।"

सो वे दोनों संगमरमर की सीढ़ियाँ उतर कर नदी में गयीं। वहाँ जा कर वह अक्लमन्द स्त्री बोली — "आओ बेटी तुम मेरी नाव में बैठ जाओ। हम नदी के दूसरी तरफ चलते हैं उधर पानी ज़्यादा साफ है।"

जब राजकुमारी नाव में चढ़ने के लिये झुकी तो उसके लम्बे बालों ने उसके चेहरे को ढक लिया सो वह कुछ देख ही नहीं सकी। नीच बुढ़िया ने नाव खोल दी और वह नदी के नीचे की तरफ बह निकली।

यह देख कर राजकुमारी बहुत रोयी बहुत चिल्लायी पर सब बेकार। वह केवल यह कसम ही खा सकी कि "ओ बेशर्म बुढ़िया। मुझे मालूम है कि तू मुझे किसी राजा के महल ले जा रही है पर इससे मुझे कोई मतलब नहीं कि वह कौन है। वह चाहे कोई हो पर मैं कसम खाती हूँ कि मैं उसका मुँह बारह साल तक नहीं देखूँगी।"

आखिर वे उस शाही शहर में आ पहुँचे। राजा को यह देख कर बहुत खुशी हुई कि उसकी भेजी हई स्त्री उस लड़की को ढूँढ कर ले आयी है जिसकी खोज में उसने उसे भेजा था पर जब उसे राजकुमारी की कसम का पता चला तो उसने उसके लिये एक बहुत ही ऊँची मीनार बनवा दी और उसमें उसे रख दिया।

अब वह वहाँ अकेली रहती थी। केवल लकड़ी काटने वालों और पानी भरने वालों के अलावा उस महल के आँगन में कोई और नहीं आ सकता था। बस वह वहाँ अकेली पड़ी अपने शेरदिल को खोने के दुख में रोती रहती थी।

उधर जैसे ही राजकुमार का सिर लुढ़क गया तो धार रखने वाले को जो जौ का पौधा राजकुमार ने देखभाल करने के लिये दिया था दो टुकड़े हो कर गिर गया और उसकी बाल नीचे जा पड़ी।

यह देख कर वफादार धार रखने वाल बहुत दुखी हो गया। उसको तुरन्त ही यह भी समझ में आ गया कि राजकुमार के साथ कुछ बुरा हो गया है। उसने तुरन्त ही अपनी सेना इकट्ठी की और राजकुमार की सहायता के लिये चल दिया।

रास्ते में वह लोहार और बढ़ई राजाओं से भी मिला। वे भी इसीलिये जाने के लिये तैयार थे। जब यह पक्का हो गया कि तीनों जौ के पौधे अपने आप ही एक ही समय पर नीचे गिर पड़े थे तो उन दोस्तों को तो बहुत डर लगा।

उनको इस बात का बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ जब काफी समय चलने के बाद उनको एक नदी के किनारे राजकुमार का सिर कटा शरीर मिल गया। उसके सारे शरीर पर जले के निशान थे और छाले पड़े हुए थे। उसका सिर उसके पास ही पड़ा हुआ था।

उनको भी राजकुमार की तलवार के जादुई गुणों का पता था सो उन्होंने उसको ढूँढना शुरू किया और जब उन्होंने देखा कि

उसकी अपनी तलवार की बजाय तो वहाँ कोई दूसरी तलवार रखी हुई थी तो उन सबका दिल डूब गया।

उन्होंने उसके शरीर को उठाया और उसको महल में ले गये। ढूँढने पर उनको उसकी तलवार मिल गयी। वह तलवार राख में दबी हुई थी और उस तलवार पर भी जले के निशान और छाले पड़े हुए थे। उसकी मूठ वहीं पास में पड़ी हुई थी और उसका एक पेच गायब था।

लोहार राजा बोला "मैं इसको अभी ठीक करता हूँ।" कह कर उसने आग जलायी एक पेच बनाया और उसको उसकी मूठ में लगा कर तलवार में जोड़ दिया।

धार रखने वाला राजा बोला "अब मेरी बारी है।" उसने अपने धार रखने वाले पहिये को तलवार रख कर इतनी ज़ोर से घुमाया कि उसके जले के निशान और छाले सब उस पर से जल्दी ही गायब हो गये। अब वह तलवार पहले जैसी तेज़ और चमकती हुई हो गयी।

और जैसे ही ऐसा हुआ तो राजकुमार के शरीर पर से भी जले के निशान और छाले गायब हो गये और राजकुमार पहले की तरह से सुन्दर और ज़िन्दा हो गया।

ज़िन्दा होते ही वह चिल्लाया "मेरी राजकुमारी कहाँ है।" तो तीनों ने वहाँ जो कुछ हुआ था वह उसको बताया।

बढ़ई राजा बोला "अब मेरी बारी है।" कह कर उसने राजकुमार की तलवार माँगी और कहा कि वह राजकुमारी को बहुत जल्दी ही ढूँढ कर लाता है।

सो वह हाथ में वह चमकीली तलवार ले कर राजकुमारी को ढूँढने निकल पड़ा। कुछ देर के बाद वह उसी शाही शहर में आ गया जिसमें राजकुमारी रहती थी।

उसने देखा कि शहर में एक बड़ी ऊँची सी नयी मीनार बनी है तो उसने पूछताछ की कि उसमें कौन रहता है। शहर के लोगों ने उसे बताया कि उसमें तो एक अजीब सी राजकुमारी रहती है जिसको इतनी सुरक्षित जेल में रखा गया है कि लकड़ी काटने वालों और पानी भरने वालों के अलावा उसके आँगन में कोई और जा ही नहीं सकता।

उसको विश्वास हो गया कि हो न हो यह वही राजकुमारी है जिसको वह ढूँढ रहा है। पर यह पक्का करने के लिये उसने एक लकड़हारे का वेश बनाया और उस मीनार के आँगन में जा कर आवाज लगायी "इस लकड़ी के गट्ठर के पन्द्रह सोने के टुकड़े। है कोई खरीदार इसका?"

राजकुमारी जो अपनी छत पर बैठी हुई हवा खा रही थी उसने अपनी एक दासी को बुला कर कहा कि वह उस लकड़हारे से जा कर यह पूछे कि वह ऐसी कौन सी कीमती लकड़ी बेच रहा था जिसकी कीमत इतनी सारी थी।

वेश बदले बढ़ई ने जवाब दिया "नहीं यह कोई खास लकड़ी तो नहीं है यह है तो केवल जलाने वाली लकड़ी ही परन्तु इसकी खासियत यह है कि यह एक चमकती तलवार से काटी गयी है।"

यह सुन कर धड़कते दिल से राजकुमारी ने जाली में से बाहर देखा तो वह राजकुमार शेरदिल की तलवार पहचान गयी। उसने अपनी दासी को फिर यह पूछने के लिये बाहर भेजा कि क्या इस लकड़हारे के पास बेचने के लिये कुछ और भी है।

लकड़हारे ने जवाब दिया कि हॉ उसके पास एक उड़ने वाली पालकी है जिसे वह केवल शाम को जब राजकुमारी बागीचे में घूमने आयेगी तब उसी को ही दिखायेगा अगर उसकी इच्छा हुई तो।

राजकुमारी उसकी यह बात मान गयी और बढ़ई सारा दिन वह खूबसूरत पालकी बनाने में लगा रहा। जब शाम हुई और वह मीनार के बागीचे में जाने लगा तो वह उसको साथ लेता गया।

वहॉ जा कर वह राजकुमारी से बोला — "राजकुमारी जी आप इसमें बैठें और इसको उड़ा कर देखें कि यह कितनी अच्छी तरह से उड़ती है।"

पर राजा की बहिन जो उस समय वहॉ थी राजकुमारी से बोली कि उसको उसमें इस तरह अकेले नहीं जाना चाहिये सो वह भी उसी के साथ बैठ गयी और साथ में बैठ गयी वह नीच बुढ़िया भी जो उसको वहॉ ले कर आयी थी।

तब बढ़ई राजा भी उसमें कूद कर बैठ गया और वह पालकी आसमान में ऊँचे और ऊँचे उड़ने लगी एक चिड़िया की तरह। कुछ दूर जाने के बाद राजा की बहिन बोली “अब बस करो बहुत हो गया। अब हमें नीचे उतार दो।”

इस पर बढ़ई राजा ने उसको कमर से पकड़ा और जब वे नदी के ऊपर से उड़ रहे थे उसको पालकी से बाहर नीचे फेंक दिया। वह नदी में गिरते ही डूब गयी।

पर उसने उस बुढ़िया को फेंकने के लिये तब तक इन्तजार किया जब तक वह पालकी ऊँची मीनार के ऊपर से नहीं उड़ने लगी। वहाँ जा कर उसने उसको भी फेंक दिया तो वह पत्थरों से टकरा कर मर गयी।

उसके बाद पालकी सीधी जिन्न के जादुई महल की तरफ उड़ चली जहाँ राजकुमार शेरदिल बढ़ई राजा और अपनी राजकुमारी के आने का बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा था।

दोनों को आया देख कर राजकुमार की खुशी की कोई हद नहीं थी। वे सब तब मिल कर राजकुमार के पिता के राज्य चल पड़े। लेकिन जब राजकुमार के पिता ने चारों को सेना समेत आते देखा तो उसको लगा कि उसके राज्य पर कोई चढ़ाई करने आ रहा है। क्योंकि राजा जबसे राजकुमार उसे छोड़ कर गया था तबसे बेचारा बहुत बूढ़ा हो गया था

सो वह उनसे मिलने गया और बोला "आप लोग मेरा सारा खजाना ले लें पर मेरी जनता को शान्ति से छोड़ दें क्योंकि मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और अब लड़ नहीं सकता। अगर मेरा बेटा राजकुमार शेरदिल इस समय यहाँ होता तो बात कुछ दूसरी ही होती। पर वह हम लोगों को छोड़ कर कई साल पहले ही यहाँ से चला गया और तब से उसकी कोई खबर किसी ने भी नहीं सुनी।"

यह सुन कर राजकुमार शेरदिल अपने पिता के गले लग गया और उससे सारी कहानी सुनायी जो कुछ भी उसके साथ बीती थी। और साथ में वे उसके दोस्त धार रखने वाला लोहार और बढ़ई थे।

जब राजा ने उनके साथ अपनी सुनहरे बालों वाली बहू को देखा तो उसकी खुशी का तो कोई वारापार ही नहीं रहा। सब लोग बहुत खुश हुए और फिर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

5 जादू की अँगूठी[34]

बुढ़ियों के कारनामों की लोक कथाओं में यह लोक कथा भारत के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक सौदागर ने अपने बेटे को 300 रुपये दिये और उससे कहा कि वह दूसरे देशों में जा कर अपनी किस्मत आजमाये। बेटा चल दिया।

वह बहुत दूर नहीं गया था कि रास्ते में उसको कुछ चरवाहे एक कुत्ते के ऊपर झगड़ते हुए मिले। उनमें से कुछ उसको मारना चाहते थे। उस कोमल दिल वाले नौजवान का दिल पसीज गया। उसने उनसे कहा — "मेहरबानी करके आप लोग कुत्ते को न मारें। मैं इसके लिये आपको 100 रुपये देता हूँ।"

बस उस कुत्ते का सौदा हो गया। नौजवान ने उन चरवाहों को 100 रुपये दिये उनसे कुत्ता लिया और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

कुछ दूर जा कर उसको कुछ आदमी मिले जिनमें से कुछ एक बिल्ले को मारना चाहते थे और कुछ का कहना था कि उसे न मारा जाये। हमारे बेवकूफ नौजवान का कोमल दिल पसीज गया और

---

[34] The Charmed Ring (Tale No 5) – a folktale of Kashmir, India.
Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887. This book is available on Internet - https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

उसने कहा — "इस बेचारे जानवर को क्यों मारते हो। मैं तुम लोगों को **100** रुपये देता हूँ तुम इसे मुझे दे दो।"

यह सौदा भी तुरन्त ही पट गया और नौजवान अपना बिल्ला ले कर फिर अपनी यात्रा पर आगे बढ़ गया। आगे चल कर उसे एक गाँव में कुछ गाँव वाले मिले जो एक साँप पर झगड़ रहे थे। कुछ कह रहे थे इसको मार दो और कुछ कह रहे थे कि इसको छोड़ दो।

हमारे बेवकूफ नरम दिल नौजवान ने कहा — "इस बेचारे को क्यों मारते हो। इसे मुझे दे दो मैं तुम्हें इसके लिये **100** रुपये दे दूँगा।"

लोग एक साँप के लिये **100** रुपये पा कर बहुत खुश हुए। सो **100** रुपये ले कर वह साँप नौजवान को दे दिया गया। अब यह नौजवान **300** रुपये में एक कुत्ता एक बिल्ला और एक साँप ले कर चल दिया।

हमारा यह नौजवान तो बड़ा बेवकूफ निकला। सारा पैसा खो कर अब यह क्या बिजनेस करेगा। सिवाय अपने पिता के पास लौटने के अब तो वह कुछ कर ही नहीं सकता था सो वह अपने घर चला गया।

जब उसके पिता ने यह सुना कि उसने किस तरह से अपना सारा पैसा बरबाद कर दिया है तो वह बहुत नाराज हुआ और बोला — "अरे बेवकूफ यह तूने क्या किया। जा और जा कर अस्तबल

में सो जा और जा कर वहाँ अपनी बेवकूफी पर पश्चाताप कर। तू अब मेरे घर में कभी नहीं घुसना।"

सो वह नौजवान अस्तबल में चला गया और वहीं रहने लगा। उसका बिस्तर उसी घास का होता था जो जानवरों के खाने के लिये आती थी और उसके साथी थे कुत्ता बिल्ला और साँप जो उसने **300** रुपये में खरीदे थे।

ये तीनों जानवर उसके बहुत अच्छे दोस्त हो गये थे। वह दिन में जहाँ भी जाता वे उसके साथ हमेशा ही लगे रहते और रात को वह हमेशा उसके पास ही सोते थे।

बिल्ला उसके पैरों के पास सोता कुत्ता उसके सिर के पास सोता और साँप उसके ऊपर पड़ा रहता। उसका सिर एक तरफ को लटका रहता और उसकी पूँछ दूसरी तरफ।

एक दिन साँप अपने मालिक से बोला — "मैं इन्द्रशराजा[35] का बेटा हूँ। एक दिन जब मैं हवा लेने के लिये जमीन में से बाहर निकला तो कुछ लोगों ने मुझे पकड़ लिया और मुझे मारने ही वाले थे कि तुम सही समय पर आ पहुँचे और मुझे बचा लिया। मैं नहीं जानता कि तुम्हारे इस उपकार का बदला मैं कभी भी चुका सकूँगा।

काश तुम मेरे पिता को जानते। वह अपने बेटे के बचाने वाले से मिल कर कितने खुश होते।"

---

[35] Indrashraja

नौजवान बोला — "वह कहाँ रहते हैं। मैं उनसे जरूर मिलना चाहूँगा। अगर यह मुमकिन हो तो।"

साँप बोला — "यह तो बड़ी अच्छी बात है। वह सामने तुम पहाड़ देखते हो न। उस पहाड़ की तली में एक पवित्र नदी[36] है। अगर तुम मेरे साथ चलो और उस नदी में डुबकी मारो तो हम दोनों मेरे पिता के राज्य में पहुँच जायेंगे।

ओह वह तुमको देख कर बहुत खुश होंगे। वह तुमको इनाम भी देंगे। पर वह ऐसा कैसे कर सकते हैं? फिर भी कम से कम तुम उनके हाथ से कुछ पा कर खुश हो सकते हो। अगर वह तुमसे पूछें तो कि तुमको क्या चाहिये तो उनको कहना कि "मुझे आपके दाँये हाथ की अँगूठी चाहिये और वह मशहूर बरतन और चमचा चाहिये जो आपके पास है।"

अगर ये दोनों चीज़ें तुम्हारे पास होंगी तो फिर तुम्हें किसी चीज़ की जरूरत नहीं रहेगी। क्योंकि अँगूठी तो ऐसी चीज़ है जिससे कि किसी आदमी को बस कहने की जरूरत है और वह बड़ा सुन्दर बंगला सुन्दर आकर्षक स्त्री भी दे सकती है।

जबकि बरतन और चमचा तुम्हारे खाने पीने की सारी जरूरतों को पूरा करेंगे। उनसे तुम्हें बहुत बढ़िया बढ़िया और स्वादिष्ट खाना मिलेगा।"

---

[36] Translated for the words "Holy River"

सो वह नौजवान अपने तीनों साथियों को ले कर उस नदी की तरफ चल दिया और वहाँ पहुँच कर साँप की देखभाल में उस नदी मे कूदने के लिये तैयार हुआ तो बिल्ला और कुत्ता यह देखते हुए कि वह क्या करने जा रहा था एक साथ बोले — "मालिक फिर हम क्या करेंगे हम कहाँ जायेंगे।"

नौजवान बोला — "तुम लोग मेरा यहीं इन्तजार करो। मैं बहुत दूर नहीं जा रहा हूँ और मैं वहाँ बहुत देर तक रहूँगा भी नहीं।" कह कर वह उस नदी में कूद गया और तुरन्त ही गायब हो गया।

कुत्ते ने बिल्ले से कहा — "अब हम क्या करें?"

बिल्ला बोला — "हमारे मालिक ने कहा है तो हमको यहीं रहना चाहिये। तुम खाने की चिन्ता बिल्कुल मत करो। मैं लोगों के घरों में जाता हूँ और अपने दोनों के लिये बहुत सारा खाना ले कर आता हूँ।"

कह कर वह बिल्ला चला गया। इस तरह दोनों तब तक आराम से रहे जब तक उनका मालिक वापस लौट कर आया।

वह नौजवान और साँप अपनी जगह ठीक से पहुँच गये तो उनके सही सलामत वापस आने की खबर राजा को भिजवायी गयी।

हिज़ हाइनैस ने अपने बेटे और अजनबी को अपने सामने पेश करने का हुकुम दिया।

पर सॉप ने यह कहते हुए मना कर दिया कि वह तब तक अपने पिता के सामने नहीं जा सकता जब तक कि वह इस अजनबी से छुटकारा न पा जाये।

उसके छुटकारा पाने का मतलब था कि जब तक वह इस अजनबी के उपकार का बदला नहीं चुका लेता जिसने उसको एक भयानक मौत से बचाया है और जिसकी वजह से वह उसका गुलाम है।

यह सुन कर राजा खुद गया और अपने बेटे को गले लगाया और अजनबी को नमस्ते करके अपने राज्य में उसका स्वागत किया।

वह नौजवान वहॉ कुछ दिन ठहरा जिनमें उसने राजा की कृतज्ञता के बदले में उसकी दॉये हाथ की ॲगूठी ली और बरतन और चमचा लिया कि उसने उसके बेटे की जान बचायी।

यह ले कर वह ऊपर आया तो अपने दोस्तों कुत्ता और बिल्ले से मिला जो उसका वहीं इन्तजार कर रहे थे। उन सबने एक दूसरे को जबसे वे बिछड़े थे तबसे अब तक की जब वे मिले अपनी अपनी कहानियॉ सुनायीं। वे आपस में मिल कर बहुत खुश हुए।

उसके बाद वे नदी किनारे चलते रहे जहॉ फिर उन्होंने जादुई ॲगूठी और बरतन और चमचे का जादू जॉचने का फैसला किया। सो नौजवान ने ॲगूठी से सुनहरे बालों वाली एक सुन्दर लड़की और एक सुन्दर मकान मॉगा।

तुरन्त ही उसके सामने ये दोनों प्रगट हो गये। फिर इसने बरतन को जॉचना चाहा तो उसने कहा कि इन सबके लिये सबसे बढ़िया और स्वादिष्ट खाना लाओ तो वहॉ पर बहुत तरीके के स्वदिष्ट खाने प्रगट हो गये।

जाहिर है कि उनकी ज़िन्दगी बड़े आराम से गुजरने लगी। ऐसा कई साल तक चलता रहा कि एक दिन एक सुबह उस लड़की ने अपने बाल बनाते समय अपने टूटे हुए बाल एक खोखले सरकंडे[37] में रख दिये और उस सरकंडे को अपनी खिड़की के नीचे बहती नदी में फेंक दिया।[38]

सरकंडे की वह डंडी मीलों दूर तक बहती चली गयी कि इत्तफाक से वह डंडी वहॉ के राजा के बेटे को मिल गयी। उत्सुकतावश उसने उस डंडी को खोल लिया तो उसने देखा कि उसमें तो सुनहरी बाल थे।

उन बालों को देखते ही वह महल की तरफ भागा और जा कर अपने कमरे में बन्द हो गया और वह तो वहॉ से अब बाहर ही नहीं निकले। वह तो उस लड़की के प्यार में पड़ गया था जिसके वे सुनहरी बाल थे।

---

[37] Translated for the “Reed” – see its picture above.

[38] Throwing a fallen hair putting it in something shows a custom in Bengal also. Read the tale “Bhooton Ki Kahani” in the book “Bengal kI Lok Kathayen-1”, by Sushma Gupta in Hindi language.

न वह खाये न पिये न उसको नींद आये और न वह कहीं आये जाये जब तक कि उस लड़की को उसके पास न लाया जाये। यह देख कर उसके पिता राजा को बहुत चिन्ता हुई उसकी तो समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे।

उसको डर लगा कि इस तरह से उसका बेटा कहीं मर न जाये और वह बिना वारिस के ही रह जाये। आखिर उसने अपनी एक चाची से सलाह माँगने का निश्चय किया।

उसकी यह चाची एक जादूगरनी[39] थी। उस बुढ़िया ने उसकी सहायता करने का वायदा किया। उसने राजा से कहा कि उसको चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। उसको पूरा भरोसा है कि वह उस सुन्दर लड़की को उसके बेटे की पत्नी बना कर ले आयेगी।

उसने एक मधुमक्खी का रूप रखा और ज़ज़ज़ज़ करती उड़ने लगी। उसकी तेज़ सूँघने की ताकत उसको उस लड़की के पास ले आयी जिसको वह एक बुढ़िया दिखायी दी जिसने अपने सहारे के लिये एक छड़ी पकड़ रखी थी।

उसने उस लड़की को अपना परिचय उसकी चाची बता कर दिया और उससे कहा कि उसने उसको पहले कभी देखा नहीं था क्योंकि उसने वह देश उस लड़की के जन्म के तुरन्त बाद ही छोड़ दिया था।

[39] Translated for the word "Ogress". An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

यह सब कहने के साथ साथ उसने उस लड़की को अपने गले से लगाया और चूम लिया। वह सुन्दर लड़की तो उसके धोखे में आ गयी। उसने भी जादूगरनी को गले से लगाया और अपने घर में ले आयी। उसको वहीं ठहरने को कहा जब तक वह ठहरना चाहे।

उसने बुढ़िया की इतनी इज़्ज़त की और उसकी इतनी देखभाल की कि बुढ़िया ने सोचा कि अब तो उसका काम बहुत आसान हो गया।

जब उसको वहाँ रहते रहते तीन दिन हो गये तो एक दिन उसने लड़की से कहा कि बजाय इसके कि वह उस जादुई अंगूठी को अपने पति के पास छोड़े उसको उसे अपने पास रखना चाहिये क्योंकि उसका पति तो अक्सर शिकार पर ही रहता था या फिर किसी और काम से बाहर रहता था सो वह अँगूठी उससे खो सकती थी।

लड़की ने सोचा कि उसकी चाची उसको ठीक ही सलाह तो दे रही थी सो उसने अपने पति से उसकी वह जादू की अँगूठी माँगी। पति ने उसको वह अँगूठी दे दी। जादूगरनी ने उससे अँगूठी के बारे में पूछने से पहले एक दिन इन्तजार किया फिर उससे कहा कि वह वह अँगूठी देखना चाहती है।

लड़की को कोई शक नहीं हुआ और उसने वह अँगूठी अपनी चाची को देखने के लिये दे दी। जैसे ही चाची के हाथ में अँगूठी आयी वह मधुमक्खी बनी और उसको ले कर वहाँ से उड़ गयी और

वहाँ आयी जहाँ राजकुमार अपने महल में बहुत बुरी हालत में पड़ा हुआ था।

उसने जा कर उससे कहा — "उठो बेटा उठो और खुश हो जाओ। अब और दुखी होने की जरूरत नहीं है। जिस लड़की को तुम ढूँढ रहे थे वह अब बस तुम्हारे बुलाने पर तुरन्त ही हाजिर हो जायेगी। देखो यही वह तलिस्मा[40] है और इसी से तुम उसको यहाँ बुला सकते हो।"

राजकुमार तो यह सुन कर बिल्कुल पागल सा हो गया और उस लड़की को देखने के लिये इतना इच्छुक हो गया कि उसने तुरन्त ही अँगूठी से उस लड़की को वहाँ लाने के लिये कहा। तुरन्त ही वह लड़की अपने मकान सहित उसके महल के बागीचे में उतर आयी।

वह तुरन्त ही उसके मकान में गया और उससे अपने प्रेम के बारे में बताया। उसने उससे कहा कि वह उसकी पत्नी बन जाये।

लड़की ने देखा कि वह यहाँ से किसी तरह भी बच नहीं सकती है सो उसने इस शर्त पर उसको हाँ कर दी कि वह एक महीने बाद उससे शादी कर लेगी।

इस बीच सौदागर का बेटा शिकार से घर वापस लौटा तो उसने देखा कि न तो उसका घर है और न उसकी पत्नी है। यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ। वहाँ तो बस खाली जगह पड़ी थी जैसी कि

[40] Translated for the word "Charm"

उसने उस जादू की अँगूठी इस्तेमाल करने से पहले देखी थी जो उसको इन्द्रशराजा ने दी थी।

वह वहीं जमीन पर बैठ गया और अपना अन्त करने की सोचने लगा। उसी समय उसके साथी कुत्ता और बिल्ला वहाँ आये। असल में जब उन्होंने घर को वहाँ से गायब होते देखा था तो वे डर गये थे सो वे वहाँ से कहीं और चले गये और जा कर छिप गये।

मालिक के वापस आते ही वे भी वहाँ आ गये और उन्होंने अपने मालिक से कहा — "मालिक रुकिये। आपका इम्तिहान तो बहुत बड़ा है पर यह समस्या ऐसी नहीं है कि सुलझायी न जा सके। हमें आप एक महीना दीजिये हम आपको आपका घर और पत्नी दोनों ढूँढ कर लाने की कोशिश करेंगे।"

नौजवान बोला — "ठीक है जाओ। भगवान तुम्हारी सहायता करें। तुम मेरी पत्नी को वापस लाओ ताकि मैं ज़िन्दा रह सकूँ।"

यह सुन कर कुत्ता और बिल्ला दोनों तुरन्त ही वहाँ से भाग गये और तब तक नहीं रुके जब तक वे उस जगह नहीं पहुँच गये जहाँ उनके मालिक का घर और उनकी पत्नी थी।

बिल्ला बोला — "हमको शायद यहाँ कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़े। देखो राजा ने हमारे मालिक का घर और पत्नी दोनों ही अपने लिये ले लिये हैं। तुम यहाँ ठहरो मैं घर के अन्दर जा कर मालकिन को देख कर आता हूँ।"

यह सुन कर कुत्ता तो वहीं बैठ गया और बिल्ला चढ़ कर कमरे की खिड़की तक पहुँच गया जहाँ वह सुन्दर लड़की दुखी बैठी थी। लड़की ने बिल्ले को पहचान गयी। उसने जबसे वह यहाँ आयी थी तबसे अब तक वहाँ क्या हुआ था उसको सब बता दिया।

फिर उसने बिल्ले से पूछा — "क्या यहाँ से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है?"

बिल्ला बोला — "बिल्कुल है। अगर आप मुझे यह बता दें कि वह अँगूठी कहाँ है।"

लड़की बोली — "वह तो उस जादूगरनी के पेट में है।"

बिल्ला बोला — "ठीक है। मैं उसके पेट से उसे निकाल लूँगा। एक बार वह हमें मिल जाये फिर सब कुछ हमारा है।"

यह कह कर बिल्ला खिड़की से नीचे उतर आया और एक चूहे के बिल के पास जा कर लेट गया जैसे कि वह मरा हुआ हो।

इत्तफाक से चूहों के समाज की एक बारात उधर से गुजर रही थी। उस बारात में पास पड़ोस के बहुत सारे चूहे शामिल थे। चूहों के राजा के सबसे बड़े बेटे की शादी होने जा रही थी। बिल्ला यह देख कर हुँकारा।

उसके दिमाग में तुरन्त ही यह विचार आया कि उसको दुलहे चूहा को पकड़ लेना चाहिये और उसकी सहायता लेनी चाहिये। सो जैसे ही चूहों की बारात उस बिल के सामने से गुजरी वह बारात के

सम्मान में चीखता और कूदता हुआ उसके आगे पहुँच गया। उसने तुरन्त ही दुलहे को भी ढूँढ लिया और उस पर कूद गया।

यह देख कर दुलहा चूहा डर गया और ज़ोर से चिल्लाया — “मुझे जाने दो मुझे जाने दो।”

यह देख कर वहाँ मौजूद सारे चूहे चिल्लाये — “हाँ हाँ इसको जाने दो। आज तो इसकी शादी का दिन है।”

बिल्ला बोला — “नहीं नहीं। मैं इसको तब तक नहीं जाने दूँगा जब तक तुम मेरा कुछ काम नहीं करोगे। सुनो सामने वाले महल में जिसमें राजा और रानी रहते हैं उसमें एक जादूगरनी रहती है।

उस जादूगरनी ने एक अँगूठी निगल ली है जो मुझे बहुत जरूरी चाहिये। अगर तुम मुझे वह अँगूठी ला कर दे दोगे तो मैं तुम्हारे इन दुलहे राजा को छोड़ दूँगा।”

वे सब एक साथ बोले — “हाँ हाँ हम तुम्हें वह अँगूठी ला कर दे देंगे। और अगर हम तुम्हें वह अँगूठी ला कर न दें तो तुम हम सबको खा सकते हो।”

अब यह तो एक बहुत बहादुरी का जवाब था। खैर किसी तरह से उन्होंने वह अँगूठी ला कर उस बिल्ले को दे दी। आधी रात को जब जादूगरनी गहरी नींद सो रही थी एक चूहा उसके बिस्तर के करीब गया और उसके चेहरे पर चढ़ गया।

वह खर्राटे मार कर सो रही थी सो जैसे ही उसने अगली बार अपना मुँह खोला उसने अपनी पूँछ उसके गले में डाल दी। इससे

उसको बहुत ज़ोर की छींक आ गयी और वह ॲगूठी उसके मुँह में से निकल कर बाहर आ पड़ी और फर्श पर लुढ़क गयी।

चूहे ने तुरन्त ही उसको अपने मुँह में दबाया और वहॉ से अपने राजा के पास भाग लिया। चूहों का राजा भी उसको देख कर बहुत खुश हुआ। वह भी तुरन्त ही उसको ले कर बिल्ले के पास गया और वह ॲगूठी उसको दे कर अपने बेटे को छुड़ा लाया।

बिल्ले को जैसे ही ॲगूठी मिली वह उसको ले कर कुत्ते के पास भागा आया और दोनों अपने मालिक के पास यह खुशखबरी ले कर दौड़ चले।

लगता था कि अब सब कुछ ठीक हो गया था क्योंकि अब तो बस उनको वह ॲगूठी ले जा कर अपने मालिक को ही देनी थी। और उसको उस ॲगूठी से बस यह बोलना था कि उसका सुन्दर घर और पत्नी फिर से उसके पास आ जायें। बस फिर सब कुछ पहले जैसा आनन्दमय हो जायेगा।

उन्होंने सोचा कि यह ॲगूठी पा कर उनका मालिक कितना खुश होगा। यह सोच कर वे वहॉ से जितनी जल्दी हो सकता था भाग लिये।

रास्ते में उनको एक नदी पार करनी पड़ी तो कुत्ते ने बिल्ले को अपनी पीठ पर बिठाया और नदी तैर गया। कुत्ते ने सोचा "ॲगूठी तो यह बिल्ला ले जा रहा है तो फिर मालिक की नजर में मेरी क्या कीमत रह जायेगी।"

सो उसने अच्छा मौका देख कर बिल्ले से अँगूठी माँगी और धमकी दी कि अगर उसने उसको अँगूठी नहीं दी तो वह उसे नदी में बीच धार में ही फेंक देगा।

यह धमकी सुन कर बिल्ला डर गया उसने तुरन्त ही अँगूठी कुत्ते को दे दी पर अफसोस कि जैसे ही बिल्ले ने कुत्ते को अँगूठी दी कुत्ते से पकड़ी नहीं गयी और वह पानी में गिर पड़ी जिसे उसी समय एक मछली ने निगल लिया।

यह देख कर कुत्ता चिल्लाया — "ओह अब मैं क्या करूँ। अब मैं क्या करूँ। मेरी अँगूठी तो मछली ने निगल ली।"

बिल्ला बोला — "हमको जो करना है वह करना है। हमको उसे वापस पाना ही चाहिये। और अगर हम उसे वापस नहीं पा सकते तो हमें इस नदी में डूब कर मर जाना चाहिये।

मैं तुम्हें एक तरकीब बताता हूँ। तुम जाओ और कहीं से एक छोटा मेमना मार कर मेरे पास ले आओ।"

कुत्ता बोला — "ठीक है।" और यह कह कर वह दौड़ गया। वह जल्दी ही एक छोटा सा मेमना मार कर ले आया और बिल्ले को दे दिया।

बिल्ले ने उसका पेट फाड़ डाला और खुद तो उसमें बैठ गया और कुत्ते को उसने कहा कि वह भी कहीं पास में छिप कर चुपचाप बैठ जाये।

कुछ ही देर में नाधार[41] नाम की एक चिड़िया वहाँ आयी जिसको केवल देखते ही किसी भी मछली की हड्डियाँ टूट जाती हैं और उस मेमने की लाश पर मँडराने लगी। और फिर कुछ पल बाद ही उसने इस इरादे से नीचे की तरफ झपट्टा मारा कि वह उस मेमने को सारा का सारा उठा कर ले जायेगी।

उसी समय बिल्ला उसमें से निकल आया और उस चिड़िया पर कूद पड़ा। उसने चिड़िया को धमकी दी कि अगर उसने उनकी अँगूठी उनको वापस नहीं दिलवायी तो वह उसको मार देगा।

यह धमकी सुन कर नाधार चिड़िया तुरन्त ही राजी हो गयी। वह तुरन्त ही मछलियों के राजा के पास उड़ी गयी और उससे कहा कि वह तुरन्त इस बात की छानबीन करे कि वह अँगूठी किस मछली के पास है और तुरन्त ही उसको वह अँगूठी ला कर दे।

मछलियों के राजा ने वैसा ही किया। अँगूठी मिल गयी और वह बिल्ले को दे दी गयी। बिल्ला कुत्ते से बोला — "अब चलो। हमें अँगूठी मिल गयी।"

यह सुन कर कुत्ता फिर अकड़ गया और बोला — "नहीं मैं नहीं चलूँगा जब तक कि तुम मुझे अँगूठी नहीं दोगे। जब तुम मुझे उसे दे दोगे तो मैं उसे भी ले जाऊँगा और तुम्हें भी। और अगर तुमने मुझे अँगूठी नहीं दी तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।"

---

[41] Nadhar – a kind of bird

कुत्ते की यह धमकी सुन कर बिल्ले ने तुरन्त उसको अँगूठी दे दी। उस लापरवाह कुत्ते ने उसे फिर से जमीन पर गिरा दिया। इस बार वह एक काइट चिड़िया ने उठा ली। बिल्ला चिल्लाया — "देखो अँगूठी ले कर वह काइट चिड़िया उधर जा रही है। देखो देखो।"

यह देख कर कुत्ता भी कुछ परेशान सा हो कर बोला — "उफ़ यह क्या हुआ। यह मैंने क्या कर दिया।"

बिल्ला चिल्लाया — "अरे ओ बेवकूफ कुत्ते मुझे मालूम था कि ऐसा ही कुछ होगा। पर अब तुम अपना भौंकना छोड़ो नहीं तो तुम उस चिड़िया को डरा दोगे और फिर वह कहीं ऐसी जगह जा कर छिप जायेगी जहाँ फिर हमको उसे ढूँढना भी मुश्किल हो जायेगा।"

बिल्ला तब तक इन्तजार करता रहा जब तक काफी अँधेरा नहीं हो गया। अँधेरा होने पर बिल्ला उस पेड़ पर चढ़ा जिस पेड़ पर वह चिड़िया बैठी थी। उसने चिड़िया को मारा उससे अँगूठी हासिल की और पेड़ से नीचे उतर आया।

नीचे उतर कर बोला — "चलो अब चलें। हमको यहाँ से जल्दी जल्दी चलना चाहिये। हमको पहले ही बहुत देर हो चुकी है। हमारे मालिक हमारा इन्तजार कर रहे होंगे। बहुत देर हो गयी तो वह कहीं दुख से मर ही न जायें। चलो।"

इस बार कुत्ता अपने अपने आप से बहुत शरमिन्दा था। उसने बिल्ले से अपनी गलतियों की माफी माँगी। तीसरी बार वह उससे

अॅगूठी मॉगने बहुत शरमा रहा था सो वह बिल्ले को ले कर तुरन्त अपने मालिक के पास चल दिया।

उनका मालिक दुखी बैठा हुआ था। बिल्ले ने जब उसको अॅगूठी ले जा कर दी तो वह खुशी से नाच उठा। उसके मिलते ही उसने उससे अपना घर और अपनी पत्नी लाने के लिये कहा। उसकी सुन्दर पत्नी और घर तुरन्त ही वहॉ हाजिर हो गये। वे लोग फिर से उसी तरह से सुख से रहने लगे जैसे पहले रहते थे।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**